

खंड 4

व्यवहारात्मक एवं मानवतावादी दृष्टिकोण



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 8 व्यवहारवाद*

संरचना

- 8.0 प्रस्तावना
- 8.1 व्यवहारवाद के स्रोत
 - 8.1.1 पूर्व सुकराती दार्शनिक
 - 8.1.2 फ्रांस का संवेदनावाद
 - 8.1.3 ब्रिटेन का अनुभववाद
 - 8.1.4 पशु-मनोविज्ञान
 - 8.1.5 रूसी मनोवैज्ञानिक
 - 8.1.6 एडवर्ड ली थार्नडाइक
 - 8.1.7 प्रकार्यवाद
- 8.2 जॉन बी. वाट्सन (वाट्सन का व्यवहारवाद)
 - 8.2.1 व्यवहार के प्रकार
 - 8.2.2 मूलप्रवृत्ति
 - 8.2.3 संवेग
 - 8.2.4 विचार प्रक्रिया
 - 8.2.5 सीखना
 - 8.2.6 मन-शरीर समस्या
 - 8.2.7 यौन-शिक्षा
 - 8.2.8 विज्ञापन
- 8.3 वाट्सन का व्यवहारवाद
- 8.4 वाट्सन का व्यापक प्रभाव
- 8.5 सारांश
- 8.6 मुख्य शब्द
- 8.7 पुनरावलोकन प्रश्न
- 8.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 8.9 चित्रों के संदर्भ
- 8.10 ऑनलाइन संसाधन

सीखने का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप सक्षम होंगे :

- व्यवहारवाद के मूल स्रोत को पता लगाने में;
- जॉन वाट्सन का व्यवहारवाद के विकास में योगदान की व्याख्या करने में; और

*डॉ. सैफ आर. फारूकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

- वाट्सन के व्यवहारवाद के व्यापक प्रभाव का वर्णन करने में।

8.0 प्रस्तावना

व्यवहारवाद अथवा व्यवहारवादी पर्यावरणीय उत्प्रेरणा के कार्य निर्धारण में भूमिका पर बल देते हैं। अनुभवों के आधार पर प्राप्त ज्ञान से व्यक्तियों के व्यवहार बदल जाते हैं। (थकान, चोट अथवा नशीले पदार्थों के उपयोग से व्यक्तियों के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों को छोड़कर) इस इकाई में इन सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला जाएगा। व्यवहारवाद में पारंपरिक व स्फूर्त अनुकूलन का अध्ययन सीखने की प्रक्रिया की समझ में और वृद्धि करता है।

12वीं शताब्दी में जब अमेरिका में मनोविज्ञान का विकास हो रहा था, तब व्यवहारवाद ने इसमें विशेष रूप से योगदान दिया। व्यवहारवाद के अध्ययन से मनुष्यों के व्यवहार को समझने में बहुत सहायता मिली। अनुभवों के आधार पर यह समझने में आसानी रही कि अनुकूलन में व्यवहार की क्या भूमिका होती है। व्यवहारवाद को व्यवहारवादी मनोविज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। व्यवहारवाद का मुख्य सिद्धान्त यह है कि व्यक्ति समूहों के सम्पर्क में आकर व्यवहार सीखता है और उसे अपने चारों ओर की परिस्थितियों तथा अपने पर्यावरण के अनुसार व्यवहार करना आ जाता है। विचार तथा घटनाओं के बीच एक अटूट संबंध होता है। व्यवहार केवल मानसिक घटना नहीं है, बल्कि इसका विशेष अर्थ है। प्रत्यक्ष व्यवहार, अर्थात् वह व्यवहार जिसे देखा जा सकता है इसीलिए वस्तुनिष्ठता इसके केंद्र में रहती है।

जो घटक व्यवहारवाद को एक खास पहचान देते हैं, उनमें से एक है इसका ध्यान केंद्रित होना। व्यवहारवाद अन्य विचारधाराओं से इस मामले में अलग है कि वह दृश्य व्यवहार (प्रतिक्रियाएँ) तथा पर्यावरणीय घटनाओं (उद्दीपन) के बीच संबंध पर जोर देता है।

बॉक्स 8.1: व्यवहारवाद की मौलिक परिकल्पनाएँ

व्यवहारवाद की निम्नलिखित दो मौलिक परिकल्पनाएँ हैं :

- 1) सरलता व्यवहारवाद के सभी मौलिक सिद्धांतों में सबसे महत्वपूर्ण तथा आधारभूत सिद्धांत सरलता है। इसे ओकाम का रेजर (Occom's razor) भी कहा जाता है। अंग्रेज दार्शनिक ओकाम के नाम पर जिसने इस अवधारणा को सबसे पहले प्रस्तावित किया था। किसी घटना के संदर्भ में सरलता अपने अस्तित्व की सरलतम व्याख्या करती है। व्यवहारवादियों द्वारा आत्मविश्लेषण किसी घटना की व्याख्या करने के लिए जो सरलतम तथ्य उपलब्ध हो पारसीमनी (Parsimony) उसे केंद्र बनाती है। व्यवहारवादियों के आत्म विश्लेषण विरोधी होने का एक बड़ा कारण उसमें बहुत सी अस्पष्ट धारणाओं का निहित होना है। इसमें सरलता का अभाव है, दूसरी ओर व्यवहारवादी परिचालित व्याख्याओं पर जोर देते थे अर्थात् जिन घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जा सके, उनका उपयोग कर धारणाओं की व्याख्या करना जो उद्दीपन व प्रतिक्रियाओं पर केंद्रित होता है।
- 2) साहचर्यवाद—व्यवहारवाद व्यवहार सुनिश्चित करने में अनुभव की भूमिका को प्रधानता देता है, जो सीखने की प्रक्रिया के दौरान अस्तित्व में आता है। अरस्तु के समय से चली आ रही मौलिक धारणा यह थी कि जीवधारी साहचर्य से

सीखता है अर्थात् विचारों व घटनाओं के बीच सम्बंध स्थापित करते हुए सीखता है। मनोविज्ञान में व्यवहारवादी 'साहचर्यवाद' की अवधारणा से विशेष रूप से प्रभावित थे। जिसके अनुसार, ब्रिटिश अनुभववादी द्वारा भी समर्थन किया गया था। सरलता के बाद साहचर्यवाद व्यवहारवाद की दूसरी मौलिक परिकल्पना बना।

इसलिए पारसीमनी एवं सहचर्यवाद ने संयुक्त रूप से व्यवहारवाद के उदभव के लिए आधार बनाया।

8.1 व्यवहारवाद के स्रोत

व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने 20वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में या तो मनोवैज्ञानिक पद्धतियों के प्रयोगात्मक पक्ष पर विशेष रूप से ध्यान दिया या फिर अनुभवों के आत्मविश्लेषण पर। उन दिनों मस्तिष्क के अध्ययन करने की तकनीक सीमित थी। इससे मनोवैज्ञानिकों को अनुसंधान कार्य संपन्न करने में बाधाओं का सामना करना पड़ा। व्यक्तिपरक समस्याओं ने आत्मविश्लेषण की संभावनाओं को अवरुद्ध कर दिया था। दार्शनिक मार्ग पर चलने के लिए प्रकायवाद की आलोचना हो रही थी। इस सभी बाधाओं व प्रतिबंधों के चलते मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यवहारवाद का उदय हुआ। इन विवशताओं के चलते व्यवहारवाद ने व्यवहार के मात्रात्मक व दृश्य पहलुओं पर बल देते हुए व्यवहारवाद एक विचारधारा के रूप में सामने आया।

1913 में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जॉन ब्रोडस वाट्सन ने व्यवहारवाद पर शोधपत्र तैयार किया। इसका शीर्षक था – 'व्यवहारवादियों की दृष्टि में मनोविज्ञान' (साइकोलॉजी एज द बिहेवियरिस्ट्स)। इस शोधपत्र के माध्यम से वाट्सन ने आधुनिक मनोविज्ञान का ढाँचा बदल दिया। आधुनिक मनोविज्ञान को नई दिशा प्रदान की। वाट्सन की सोच ने मनोविज्ञान में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। वाट्सन ने मात्र का अध्ययन करते रहना मनोविज्ञान का सही उद्देश्य नहीं है। मनोविज्ञान के वास्तविक विकास में यह प्रवृत्ति बाधक है। दोनों की अभौतिक मानसिक अवस्था की परिकल्पना किसी भी विज्ञान के विकास के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा थी। इसके स्थान पर स्पष्ट दिखाई देने वाले व्यवहार को मनोविज्ञान के अध्ययन का विषय बनाया गया। सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जॉन वाट्सन ने व्यवहार को मनोविज्ञान का अध्ययन-विषय स्वीकार किए जाने के पक्ष में टोस व स्पष्ट तर्क प्रस्तुत किये तथा इसके सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार की। उन्होंने मनोविज्ञान की वैज्ञानिकता की आवश्यकता पर विशेष रूप से जोर दिया। मनोविज्ञान का वैज्ञानिक पक्ष ही जीवधारी के उत्प्रेरणों व प्रतिक्रियाओं से जुड़े पहलुओं को ठीक से समझ व समझा सकता है, ऐसा वाट्सन का मानना था। वाट्सन ने सभी मानसिक अवधारणाओं तथा शब्दावलियों को अपने मनोविज्ञान से बाहर कर दिया।

व्यवहारवादी विज्ञान ने बिम्ब, मन तथा चेतना जैसे शब्दों का पूरी तरह बहिष्कार किया जो मानसिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में पहले स्थान बनाए हुए थे। वाट्सन चेतना को कपोल कल्पना मानता था जो प्राचीन धारणा 'आत्मा' के अस्तित्व की तरह ही तर्क व प्रमाणों से पर था। इसीलिए उन्होंने विज्ञान व मनोविज्ञान के क्षेत्र में चेतना के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया। इसके परिणामस्वरूप आत्मविश्लेषण अंतर्निरीक्षण की तकनीक व्यवहार विज्ञान के क्षेत्र से बाहर हो गई।

व्यवहारवादी मनोविज्ञान की अस्तित्व में लाने तथा उसे क्रांतिकारी रूप देने का श्रेय अकेले वाट्सन को नहीं दिया जा सकता, व्यवहारवाद के बीच मनोविज्ञान तथा जीवविज्ञान में पहले से ही मौजूद थे और अनेक वर्षों से वे धीरे-धीरे अंकुरित होते रहे थे। पुरातन काल से लेकर 19वीं शताब्दी तक के ऐतिहासिक रुझान ने वाट्सन के व्यवहारवाद को अस्तित्व में लाने में सहयोग दिया।

8.1.1 पूर्व सुकराती दार्शनिक

महान दार्शनिक सुकरात से पहले जन्मे अनेक दार्शनिकों, जैसे आयोनिया के भौतिक विज्ञानी तथा ग्रीक दार्शनिक **हिपोक्रेटस** आदि ने मानव गतिविधियों को यांत्रिक प्रतिक्रियाओं के रूप में व्याख्यापित किया था, जिन्हें जीव विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान के स्तर पर समझा जा सकता है।

8.1.2 फ्रांस का संवेदनावाद

20वीं शताब्दी में जन्में व्यवहारवाद की पूर्ववर्ती फ्रांस में अस्तित्व में सनसनी फैलाने वाली परम्परा थी, जिससे फ्रांस के महान दार्शनिक **ऑगस्टे कॉम्टे** का नाम जुड़ा है। कॉम्टे को यथार्थवादी दार्शनिक माना जाता है। कॉम्टे प्रत्यक्षतावादी आंदोलन के संस्थापक थे, जिसने तथ्यात्मक ज्ञान, अर्थात् उस सत्य पर जिसे प्रमाणित किया जा सके, जोर दिया था। कॉम्टे का मानना था कि ज्ञान का वही रूप मान्य होता है जो समाज के काम आ सके तथा जिसे यथार्थ रूप में समझा जा सके। क्योंकि आत्मविश्लेषणमनुष्य के व्यक्तिगत चेतना पर निर्भर करता है और उसे यथार्थ के रूप में देखा नहीं जा सकता, अतः उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

8.1.3 ब्रिटेन का अनुभववाद

ब्रिटेन के अनुभववादी विचारकों ने मनोविज्ञान में अनुभववाद को जन्म दिया और तराशा। ब्रिटेन के दार्शनिक जॉन लॉक्स जिन्हें दुनिया का सबसे प्रभावशाली आत्म ज्ञान संबंधी विचारक माना जाता है, ने तर्क दिया था कि मस्तिष्क अपनी विषयवस्तु प्राप्त करने लिए पर्यावरण पर निर्भर करता है। अतः उसकी क्रियाएँ स्वतंत्र नहीं मानी जा सकती। मस्तिष्क अपनी क्रियाएँ तथा क्रियाशीलता के लिए पूरी तरह पर्यावरण पर निर्भर करता है। अतः अपने स्वतंत्र अस्तित्व में मस्तिष्क पूरी तरह निष्क्रिय है। इस प्रकार मस्तिष्क अनुभवों के आधार पर कार्य करता है। इसी निष्कर्ष के आधार पर ब्रिटेन में अनुभववाद का जन्म हुआ। व्यवहारवाद के मुख्य सिद्धांत *अनुभववाद* तथा *साहचर्यवाद* से ही लिए गये हैं। अनुभववाद तथा साहचर्यवाद दोनों ही ब्रिटेन के प्रभावशाली विचारधाराएँ हैं।

8.1.4 पशु मनोविज्ञान

पशु मनोविज्ञान तथा व्यवहारवाद के बीच संबंध स्थापित करने का श्रेय सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जॉन ब्रोडस वाट्सन को है। वाट्सन ने 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में यह घोषणा की थी कि व्यवहारवाद की उत्पत्ति जीव मनोविज्ञान के अध्ययन से हुई है। इस प्रकार यह कहना गलत नहीं होगा कि वाट्सन के विचारधारा की पृष्ठभूमि जीव मनोविज्ञान है, जिसकी उत्पत्ति डार्विन के विकासवादी सिद्धान्तधारियों में भी मस्तिष्क जैसी कोई चेतना होती है, तथा मनुष्यों के मस्तिष्क तथा अन्य प्राणियों की इस चेतना के बीच निरंतर एक संबंध होता है। सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **कोनवी लॉयड**

मार्गन के पशु मनोविज्ञान का संस्थापक कहा जाता है, उन्होंने मितव्ययिता के सिद्धांत को जन्म दिया था और वे पूरी तरह प्रयोगात्मक में आस्था रखते थे। वास्तविक तकनीक में उनकी आस्था कम थी उनके प्रयासों से पशु मनोविज्ञान अधिक यथार्थपरक मनोविज्ञान के रूप में स्थापित हुआ।

8.1.5 रूसी मनोवैज्ञानिक

व्यवहारवाद की अनुभववाद से संबंधों की व्याख्या करके वाट्सन ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किया, उसे रूसी मनोवैज्ञानिकों के एक समूह ने आगे बढ़ाया और उसी के आधार पर संवेदनशीलता के सिद्धांत को ढूँढ निकाला। रूस के मनोवैज्ञानिक इवान प्रैट्रीविक पावलव ने रूस के संवेदनावादी सिद्धांत पर व्यापक अध्ययन किया और उसे आगे बढ़ाया।

1904 में इवान पावलव को पाचन के लिए जिम्मेदार क्रियाएँ स्नायु संबंधी तथा ग्रन्थि संबंधी क्रियाओं के शोध पर नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस शोध के दौरान आरंभ में 1879 के पावलव ने कुत्तों पर शोध कार्य शुरू किया। किसी समय 1902 में इवान पावलव ने साहचर्य जन्म अनुकूलन के मौलिक सिद्धांतों पर शोध किया। शोध के दौरान पावलव को एक नयी जानकारी प्राप्त हुई, जिसे उन्होंने 'साइकिक सेलीवेशन' नाम दिया। उन्होंने पाया कि कुत्तों के मुँह भोजन मिलने के समय के पहले ही लार टपकने लगती है। वह इस क्रिया को देखकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि पाचन क्रिया एक दूसरे से जुड़ी अनेक संवेदी प्रतिक्रियाओं के द्वारा संपन्न होती है, पावलव ने निर्णय ले लिया कि वह इस पूर्वापेक्षित प्रतिक्रिया की नियंत्रण प्रणाली के रहस्य को उजागर करेगा। उन्होंने इसी विषय पर शोध किया। उनके शोध को प्राचीन अनुबंधन नाम दिया गया— उस ज्ञान का अध्ययन जिसमें अनैच्छिक क्रियाएँ शामिल हैं। प्राचीन अनुबंधन उस पद्धति की व्याख्या करता है, जिसमें एक नवीन उत्तेजक सीखने की क्रिया के आधार पर मौजूदा अनैच्छिक क्रिया की अभिव्यक्ति करता है। प्राचीन अनुबंधन एक प्रकार की सीखने की क्रिया है, जो दो पर्यावरणीय उत्तेजकों के संयोजन से संपन्न होती है जिसमें एक उत्तेजक की प्रतिक्रिया को दूसरे उत्तेजक के सम्मिलन द्वारा बदला जा सकता है।

पावलव ने प्राचीन अनुबंधन में इसके महत्व को आधार मानते हुए एक सिद्धांत बनाया जिसके अनुसार, अनुकूलन प्रणालियाँ साहचर्य के अधिग्रहण तथा विस्मरण के क्रम को अपनाते हुए ज्ञान के परिमाणन एवं वस्तुकरण का प्रतिनिधित्व करती हैं। पावलव ने डेविड ह्यूम तथा जेम्स मिल के द्वारा प्रायोगिक परीक्षण के आधार पर स्थापित किये गये सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हुए यह दावा किया कि भौतिक संवेदना के आधार पर होने वाले संयोजन तर्कसंगत व्याख्या करते हैं। पावलव के प्राचीन अनुबंधन का सिद्धांत स्वीकार करता है कि संवेदनशीलता के रचनातंत्र पर स्नायु तंत्र का प्रभाव होता है, विशेष रूप से कारटेक्स का। जितनी भी विकसित स्नायुतंत्र संबंधी गतिविधियाँ होती हैं, उन सबको अनुकूलन प्रक्रिया के अत्यंत नियंत्रित प्रायोगिक प्रतिमान द्वारा जाना जा सकता है। पावलव ने अपनी सभी पद्धतियों को आदर्श रूप में उचित ठहराया जिनके द्वारा सभी प्रकार के व्यवहारों का सही अन्वेषण किया जा सकता है, क्योंकि उनके पर्यावरणीय उत्प्रेरणों से उपजों सभी प्रतिक्रियाएँ शामिल होती हैं।

उन्होंने यह भी दावा किया कि सीखने की सभी क्रियाएँ साहचर्य पर आधारित होती हैं और उनको पर्यावरणीय उत्प्रेरणा और कॉरटेक्स की मुख्य भूमिका के संदर्भ में समझा जा सकता है।

पावलव की प्राचीन अनुबंधन का वाट्सन पर गहरा प्रभाव पड़ा क्योंकि वाट्सन द्वारा निर्मित प्रतिमान पावलव द्वारा निर्धारित व्यावहारिक पद्धति को ही आगे बढ़ाता है। प्राचीन अनुबंधनकी प्रणाली को मनुष्यों पर लागू होने की संभावना का पूर्वानुमान लगाते हुए वाट्सन ने भावनाओं का अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को सृजन करते का प्रयास किया जोकि आत्म विश्लेषकों की मान्यताओं के विपरीत था, जो भावनाओं की व्याख्या मानसिक अवस्थाओं के आधार पर करते हैं। पावलव एक उत्कृष्ट शरीर विज्ञानी तो था जो उससे भी बढ़कर एक वह प्रायोगिकतावादी था। उन्होंने यह पता लगाया कि केवल प्रायोगिक प्रक्रियाओं द्वारा ही विज्ञान में सत्य की खोज की जा सकती है। व्यावहारिक मनोविज्ञान को समझने के लिए प्रायोगिक विधियों को उपयोग में लाने का पूरा श्रेय पावलव द्वारा अन्वेषित वस्तुनिष्ठ संवेदनशीलता को जाता है जो आगे चलकर पारंपरिक अनुकूलन का आधार बनी।

8.1.6 एडवर्ड ली थार्नडाइक

वाट्सन के व्यवहारवाद का मुख्य पूर्ववर्ती मनोवैज्ञानिक विचारक अमेरिकन शोधकर्ता एडवर्ड ली थार्नडाइक था। यद्यपि थार्नडाइक मुख्यतः अमेरिका का प्रकाशवादी था परन्तु मनोवैज्ञानिक के क्षेत्र में किए गये अनुसंधान कार्यों ने व्यवहारवाद को आकार देने में पृष्ठभूमि का काम किया।

थार्नडाइक ने अपना शोध कार्य 1898 में पूरा किया था जिसका शीर्षक था – 'एनीमल इंटेलिजेंस: एन एक्सपेरिमेंटल स्टडी ऑफ द एसोसियेटिव प्रसेसेज इन एनीमल्स'। यह शोध प्रबंध 1911 में प्रकाशित हुआ। थार्नडाइक के इस शोध का उद्देश्य उन अवस्थाओं का विश्लेषण करना था जिनमें जीवधारियों के व्यवहार में परिवर्तन आया था, इनमें सीखने या जानने की प्रक्रिया शामिल थी। शोध में उन्होंने प्रतिक्रिया तथा परिणामों के बीच संबंध पर पूरा ध्यान दिया था। इसे उन्होंने *प्रभाव का नियम* कहा था। इस नियम के अनुसार, प्राणी उस प्रक्रिया को बार-बार करता है जिससे उसे सुख और संतोष मिलता है। जिससे इसका प्रतिकूल परिणाम निकलता है, उस क्रिया को नहीं दुहराता। यह एक प्रकार का साहचर्यवाद है, जिसके सहयोग से जीवधारी प्रतिक्रिया तथा परिणाम के बीच सम्बंध का पता लगाता है। पूर्व में थार्नडाइक ने बताया था कि प्रभाव के नियम के अनुसार, पुरस्कार या संतोष उत्पन्न करने वाली प्रतिक्रिया बार-बार की जाती है परन्तु दंड देने वाली अथवा चिढ़ाने वाली प्रतिक्रिया वहीं समाप्त हो जाती है। बाद में प्रभाव के नियम में संशोधन किया गया और इस बात पर जोर दिया गया है कि पुरस्कृत होने की स्थिति में जीवधारी साहचर्य की अवधि में वृद्धि करता है तथा दंडित होने की स्थिति में वह उत्तेजना के उस स्रोत के सम्पर्क में आना त्यागकर दूसरे स्रोत से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास करता है। दंडित करने वाले स्रोत से सम्पर्क की अवधि का धीरे-धीरे घटाने का प्रयास नहीं करता।

व्यक्तियों की पुरस्कार तथा दंड के बारे में धारणा का अस्तित्व प्राचीन ग्रीक सभ्यता में पाया जाता है। थार्नडाइक अपनी व्याख्या में थार्नडाइक का विवरण प्रायोगिक समर्थन

के मामले में भिन्न है, जो उसकी व्याख्या में सहयोगी है। प्रायोगिक आधार के साथ अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करके, थॉर्नडाइक ने व्यवहारवादी दृष्टिकोण की नींव रखी।

थॉर्नडाइक का प्रभाव का नियम सीखने की प्रक्रिया में परिणामों की भूमिका की व्याख्या के रूप में बी. एफ. स्किनर की प्रबलन की अवधारणा को स्वीकार करता है जो बाद में चलकर सीखने की प्रक्रिया का आधार बना जिसे *क्रियाप्रसूत अनुबंधन* (Operant Conditioning) के रूप में जाना जाता है।

सीखने की प्रक्रिया के बारे में अलग-अलग प्रतिमान अपनाए जाने के बावजूद पावलव तथा थॉर्नडाइक दोनों ने साहचर्य प्रविधि के विशिष्ट अनुभव-जन्य प्रमाण प्रस्तुत किए इस लहर में उनका महान योगदान था, जिसके परिणामस्वरूप व्यवहारवाद का जन्म हुआ। यद्यपि आरंभ में उनका इरादा ऐसा करना नहीं था। व्यवहारवाद को स्पष्ट करने के लिए वाट्सन ने क्रमबद्ध संदर्भ तैयार किए।

8.1.7 प्रकार्यवाद

व्यवहारवाद की पूर्ववर्ती विचारधार प्रकार्यवाद थी। वाट्सन के समय में यद्यपि प्रकार्यवादी मनोविज्ञान पूरी तरह यथार्थवादी नहीं था, फिर भी अपनी पूर्ववर्ती विचारधाराओं की तुलना में प्रकार्यवाद ने यथार्थ की जमीन पर खड़े होने का अधिक प्रयास किया। प्रकार्यवादियों ने आगे चलकर आत्म निरीक्षण/आत्म-विश्लेषण की शैली का खंडन किया। जेम्स मेक्कीन कैटेल ने व्यवहार तथा यथार्थवाद पर अधिक जोर दिया। चेतना तथा आत्म-विश्लेषण की अवधारणा का प्रयोग करना व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने त्याग दिया और यथार्थवादी की जमीन पर खड़े उतरने वाली प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को अपनाया।

इस प्रकार प्रकार्यवादी मनोविज्ञानियों ने वुण्ट तथा टिचनर के चेतना के अनुभवों पर आधारित मनोविज्ञान को वाट्सन के आविर्भाव से पहले ही नकार दिया था। कुछ प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों ने यथार्थवादी मनोविज्ञान पर अपना ध्यान केंद्रित किया और चेतना से हटकर व्यवहार को अपने अध्ययन एवं अनुसंधान का विषय बनाया।

1904 में सेंट लुइस मिसौरी के वर्डफेयर में कैटेल ने चेतना के अध्ययन का विरोध किया तथा आत्म-विश्लेषण की प्रक्रिया की आलोचना की। कैटेल के भाषण के समय वाट्सन उपस्थित था। अन्य अवसरों पर सार्वजनिक रूप से कैटेल द्वारा मनोविज्ञान पर प्रकट किये विचारों का वाट्सन ने संज्ञान लिया था। कैटेल के सभी वक्तव्य व्यवहारवादी मनोविज्ञान को महत्व देने वाले तथा उसकी विशद व्याख्या करने वाले थे, इसीलिए कैटेल को वाट्सन के व्यवहार का पितामह कहा गया।

अमेरिका के बौद्धिक वातावरण में वाट्सन द्वारा व्यवहारवाद की औपचारिक स्थापना किये जाने के एक दशक पहले ही अमेरिका के बौद्धिक वर्ग ने मनोविज्ञान की यथार्थपरकता का समर्थन करना तथा उस पर बल देना आरंभ कर दिया था और अमेरिकन मनोविज्ञान व्यवहारवादी दिशा में मुड़ गया था।

अमेरिका के मनोवैज्ञानिकों ने यथार्थवाद के समर्थन की ऐसी लहर पैदा हुई कि धीरे-धीरे वे व्यवहारवाद की ओर झुकने लगे। 1904 के बाद अमेरिका के मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को चेतना की अभिव्यक्ति कहना बंद कर दिया और वे उसे व्यवहार का

विज्ञान कहने लगे। इस प्रकार मनोविज्ञान व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिवर्तित हो गया।

मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्थापित करने में वाट्सन की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण थी कि विलक्षणता से इनकार नहीं किया जा सकता। वाट्सन ने आगे बढ़कर व्यवहारवादी विचारधारों को प्रस्तावित किया और व्यवहारवाद के प्रति बौद्धिक जगत में उत्पन्न होने वाले रुझान को समझते हुए अथक परिश्रम द्वारा उसे एक क्रांतिकारी आंदोलन का रूप दिया। वाट्सन ने अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त की और व्यवहारवाद का विकास करने का श्रेय प्राप्त किया।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) फ्रांस तथा ब्रिटेन के दार्शनिकों की व्यवहारवाद के विकास में क्या भूमिका थी?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रकार्यवादियों को व्यवहारवाद के पूर्ववर्ती क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

8.2 जॉन बी वाट्सन (वाट्सन का व्यवहारवाद)

वाट्सन के अनुसार, मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है। अतः उसका उपयोग यथार्थपरक कार्यों में किया जाना चाहिए। अतः उसे उन क्रियाओं के साथ समझा जाना चाहिए जिनकी वस्तुपरक व्याख्या की जा सके और इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मानसिक अवधारणाओं तथा शब्दावली जैसी व्यक्तिनिष्ठ प्रकृति वाली चीजों का बहिष्कार किया जाय। वाट्सन के व्यवहारवादी मनोविज्ञान के लिए व्यवहार से जुड़ी विभिन्न मर्दें या तत्व जैसे माँसपेशियों की गतिविधियों अथवा ग्रंथियों के श्राव से संबंधित प्राथमिक विषयवस्तु बन गए। व्यवहारवाद संपूर्ण जीवधारी के पर्यावरण से संबंधित व्यवहारों से संबद्ध है। उद्दीपन व प्रतिक्रिया की जटिलताओं को उनकी सरलतम उत्तेजनाओं व प्रतिक्रियाओं के घटकों में परिवर्तित कर उनके विश्लेषण करने से व्यवहार के विशिष्ट नियमों को समझा जा सकता है।

जहाँ तक पद्धति और विषयवस्तु का सवाल है, वाट्सन के व्यवहारवादी मनोविज्ञान ने ऐसे विज्ञान के रूप में विकास करने का प्रयास किया। जिसमें भावपरक तथा

व्यक्तिपरक पद्धतियाँ शामिल नहीं थीं, एक ऐसा विज्ञान जो भौतिक विज्ञान की तरह सुदृढ़ एवं यथार्थपरक था।

बॉक्स 8.2 : जॉन बी. वाट्सन

जॉन बी. वाट्सन ने दर्शनशास्त्र में स्नातक की डिग्री लेने के लिए शिकागो विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। परन्तु बाद में वे जेम्स रोलैण्ड ऐंजिल नामक प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिक से प्रभावित हुए और मनोविज्ञान के अध्ययन में उनकी रुचि जागृत हो गई।

1903 में मात्र 25 साल की आयु में वाट्सन ने पी.एच.डी की डिग्री प्राप्त की और शिकागो विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की डिग्री लेने वाले सबसे कम आयु के छात्र के रूप में उनका नाम घोषित किया गया। 1908 तक उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय में निर्देशक के रूप में कार्य किया। फिर वे हॉपकिन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हो गये। उन्होंने 12 वर्ष तक इस विश्वविद्यालय में काम किया। इस अवधि में उन्होंने मनोविज्ञान के विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया।

31 वर्ष की उम्र में वाट्सन हॉपकिन विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रमुख बन गये तथा सुप्रसिद्ध पत्र 'साइकोलॉजिकल रिव्यू' (Psychological Review) का सम्पादन करने लगे।

1903 में ही वाट्सन ने यथार्थवादी मनोविज्ञान पर काम करना आरंभ कर दिया था। येल विश्वविद्यालय में 1908 में वाट्सन ने पहली बार अपने मनोविज्ञान पर अपने मौलिक विचारों को सार्वजनिक किया और अनेक स्थलों पर उन्होंने इस प्रकार के व्याख्यान दिए। 1903 में व्यवहारवाद पर उनका सबसे अधिक चर्चित शोध 'साइकोलॉजिकल रिव्यू' नामक पत्र में प्रकाशित हुआ।

इसके दो वर्ष बाद 1915 में वाट्सन अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन' के अध्यक्ष चुने गये। 1919 में उनकी पुस्तक 'साइकोलोजी फ्रॉम ए बिहेवियरिस्ट स्टैंड पॉइंट' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में उन्होंने अपने व्यवहारवादी मनोविज्ञान को और अधिक पूर्णता के साथ व्याख्यायित किया।

वाट्सन को हॉपकिन विश्वविद्यालय से त्यागपत्र देना पड़ा क्योंकि उनकी अपनी ही एक अनुसंधान सहयोगी रोसालिक रेनर के साथ प्रेमसंबंध हो गया था। इसके बाद उन्होंने शिक्षण कार्य को पूरी तरह त्याग दिया और एक विज्ञापन एजेंसी में नौकरी कर ली। इस एजेंसी में काम करते समय उन्होंने अपने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग विज्ञापनों तथा बाजार को बढ़ावा देने के लिए किया। कुल मिलाकर उन्होंने केवल 20 वर्ष तक शिक्षण एवं अनुसंधान कार्य किया जो उनके काम के महत्व को देखते हुए बहुत छोटा था। इसके बावजूद वाट्सन ने मनोविज्ञान पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। उनके व्यवहारवाद ने आधुनिक मनोविज्ञान की दिशा को पूरी तरह बदल डाला।

व्यवहारवाद के विकास में वाट्सन का योगदान उसके द्वारा मनोविज्ञान के क्षेत्र में किये गये निम्नलिखित कार्यों से स्पष्ट हो जाता है।

8.2.1 व्यवहार के प्रकार

वाट्सन के चार प्रकार के व्यवहारों की व्याख्या की।



चित्र 8.1: जॉन बी वाट्सन
स्रोत:
firstdiscoverers.co.uk

- 1) स्पष्ट (प्रकट)व्यवहार : इस व्यवहार को सीखा जा सकता है और यह स्पष्ट होता है जैसे बात करना, लिखना और खेलना।
- 2) अंतर्निहित (अप्रकट)व्यवहार : इसे समझा जा सकता है परन्तु देखा नहीं जा सकता। जैसे- दाँतों के डॉक्टर की ड्रिल मशीन को देखते ही रोगी की हृदय की गति का तीव्र हो जाना।
- 3) स्पष्ट परन्तु अवधि व्यवहार : वह व्यवहार जो प्राकृतिक रूप से संपन्न होता है और दिखाई पड़ता है, जैसे – पलक झपकना, छींकना आदि।
- 4) अदृश्य व अनधिगत व्यवहार : प्राकृतिक रूप से संपन्न होने वाला व्यवहार जो दिखाई नहीं पड़ता, जैसे– ग्रंथियों का स्राव तथा परिसंचरणीय परिवर्तन।

वाट्सन के अनुसार जीवधारियों के समस्त व्यवहार वाट्सन के अनुसार, सोचने से लेकर पलक झपकने तक मनुष्य के सारे कार्य इन्हीं व्यवहारों के माध्यम से संपन्न होते हैं। सभी प्रकार व्यवहारों का अध्ययन करने के लिए वाट्सन ने चार पद्धतियों का उल्लेख किया है—

- 1) अवलोकन : यथार्थ अवलोकन विधि अथवा प्रयोग नियंत्रित अवलोकन विधि।
- 2) प्रतिक्रियात्मक अनुकूल विधि : पावलव द्वारा प्रस्तावित विधि।
- 3) परीक्षण विधि : विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का परीक्षण किया जाता है। इस विधि से क्षमता तथा व्यक्तित्व आदि का आकलन नहीं किया जा सकता।
- 4) शाब्दिक विवरण : स्पष्ट व्यवहार एक अन्य प्रकार।

8.2.2 मूलप्रवृत्तियाँ

मूलप्रवृत्तियों के बारे में वाट्सन ने जो विचार व्यक्त किये थे, उनमें गत वर्षों में प्रचंड परिवर्तन आया है। 1914 में व्यवहार में मूलप्रवृत्तियों की भूमिका को वाट्सन ने स्वीकार किया था। वाट्सन के सिद्धांत में मूलप्रवृत्तियों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। 1919 तक वाट्सन यह कहते रहे थे कि अबोध बच्चों में प्रवृत्तियों विद्यमान रहती हैं; जो सीखने की आदतों में बदल जाती हैं।

1925 में मनुष्यों में मूलप्रवृत्तियों की अवधारणा को वाट्सन ने पूरी तरह नकार दिया। उन्होंने दावा किया कि छींकना, चीखना, अलग होना, रेंगना, चूसना तथा सांस लेना आदि कुछ क्रियाओं कुछ उदाहरण हो सकते हैं परन्तु किसी जटिल व्यवहार पद्धति को प्रवृत्तियों नहीं कहा जा सकता।

वाट्सन मानता था कि लोग अनुभवों से सीखते हैं और वैसे ही बनते हैं, वंशानुगतता से नहीं। व्यक्तित्व का निर्माण भी अनुभवों के आधार पर होता है। वाट्सन का यह विचार कि सीखने की प्रक्रिया से ही मनुष्य के व्यवहार के विकास को समझा जा सकता है, के कारण वाट्सन पर्यावरणवादी मनोवैज्ञानिक के रूप में स्थापित हो गया। उसे प्रचण्ड पर्यावरणवादी माना जाता है। वाट्सन ने व्यक्ति के विकास में मूलप्रवृत्तियों की भूमिका को नकार दिया था। वाट्सन यह भी नहीं मानता कि स्वभाव अथवा किसी भी प्रकार के अन्य गुण वंशानुगत प्राप्त होते हैं। जो विशिष्ट व्यवहार किसी मनुष्य में जन्मजात लगते हैं वे भी बचपन में विशेष रूप से सिखाए जाने के कारण उत्पन्न होते हैं। जो बच्चे आगे चलकर बड़े संगीतकार अथवा खिलाड़ी बनते हैं, वे जन्मजात गुणों

के कारण नहीं होते बल्कि बच्चों के अभिभावकों तथा उनकी देखभाल करने वाले लोगों के प्रोत्साहन तथा प्रयासों के कारण होते हैं। पैतृक तथा सामाजिक वातावरण के द्वारा बच्चों को प्रशिक्षित करके उनका किसी भी दिशा में विकास किया जा सकता है। वाट्सन का यह विचार इतना लोकप्रिय हुआ कि मनोविज्ञान की दुनिया में वाट्सन का नाम प्रसिद्ध हो गया।

8.2.3 संवेग

आत्मविश्लेषण में संवेग का अध्ययन मानव-अनुभवों की तरह ही किया जाता था, अर्थात् मानसिक दशा के विवरण द्वारा लेकिन वाट्सन के अनुसार भावनाएँ दृष्टिगोचर होने वाली प्रतिक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, इसलिए उन्होंने उनका अध्ययन करने के लिए प्रयोग द्वारा संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करने का प्रयास किया।

वाट्सन मानता था कि संवेग किसी उत्प्रेरणा विशेष के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली शारीरिक क्रियाएँ होती हैं। शरीर के आंतरिक अंगों में उत्पन्न होने वाली क्रियाएँ जैसे आक्रमणकारी को देखकर दिल की धड़कनों का तेज हो जाना समुचित अर्जित ज्ञान की प्रतिक्रिया स्वरूप अस्तित्व में आता है। संवेगों अथवा संवेदनाओं का आंतरिक अंगों से आने वाला कोई भी सचेतन प्रत्यक्षण इस सिद्धांत द्वारा संचालित नहीं होता। हर भावना में मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का एक विशेष प्रतिमान अंतर्निहित होता है। वाट्सन का मानना था कि प्रत्यक्ष गतिविधियों से जुड़ी संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की पहचान की तुलना में आंतरिक प्रतिक्रियाओं को प्रबल माना।

संवेग एक प्रकार का अंतर्निहित व्यवहार है, जो कुछ सीमा तक शरीर द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है जैसे – लज्जा का प्रदर्शन, पसीना आना (पसीने-पसीने हो जाना), नाड़ी की गति का तेज हो जाना। वाट्सन का भावनाओं का सिद्धांत इतना जटिल नहीं है जितना विलियम जेम्स का।

जेम्स का सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि उत्तेजित करते ही शारीरिक प्रतिक्रिया होती है और संवेग की अनुभूति होती है। जेम्स की संवेग के बारे में दृष्टिकोण का वाट्सन ने खंडन किया। वाट्सन ने घोषणा की कि भावनाओं की समग्र अभिव्यक्ति उत्तेजन की स्थिति, शारीरिक प्रतिक्रिया तथा आंतरिक मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के माध्यम से होती है। इसमें चेतना के प्रत्यक्षण तथा भावना जगत की कोई भूमिका नहीं होती।

वाट्सन ने अपने उच्च स्तरीय अनुसंधान द्वारा उस उत्तेजना का पता लगाया जो भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है और निष्कर्ष निकाला कि छोटे बच्चे प्रायः तीन मूलभूत संवेग – भय, क्रोध तथा प्यार अभिव्यक्त करते हैं। ऊंची आवाजों वाले शोर तथा सहयोग न मिल पाने की दशा में वे भय की अभिव्यक्ति करते हैं, शारीरिक क्रियाओं के रोके जाने पर क्रोध तथा लाड़-दुलार से सहलाने, चिपटाने या थपथपाने पर प्यार की अभिव्यक्ति करते हैं। इन उत्तेजनाओं के कारण विशेष प्रतिक्रिया प्रणाली सक्रिय हो जाती है। भय, क्रोध और प्यार सीख कर की जाने वाली भावात्मक प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं। इन तीन मौलिक भावावेगों की संरचना, अनुकूलन प्रक्रिया द्वारा मनुष्य में अन्य संवेगों को जन्म देती है।

8.2.4 विचार प्रक्रिया

विचार प्रक्रिया के बारे में पारंपरिक रूप से यह माना जाता था कि मस्तिष्क में उठने वाले विचार तंत्रिकातंत्र को इस तरह स्पंदित नहीं कर पाते हैं कि मांसपेशियों तथा अंतः ग्रंथियों को सक्रिय कर दें। मांसपेशियों की गतियों को क्योंकि ये विचार प्रभावित नहीं करते इसीलिए प्रेक्षण या प्रयोग द्वारा उन तक नहीं पहुंचा जा सकता। अतः इस सिद्धांत के अनुसार, विचारों को केवल मानसिक विषय माना जाता है तथा भौतिक या शारीरिक संदर्भों में अभिव्यक्ति नहीं पाने के कारण विचारों के उभरने की प्रक्रिया अदृश्य रहती है।

वाट्सन यह मानता है कि विचार मनुष्य की अन्य क्रियाओं के अवयवों की तरह एक प्रकार का ज्ञानेंद्रिय व्यवहार ही है, इसलिए वह स्नायु व्यवहार में अंतर्निहित है। वाट्सन ने सोचने की प्रक्रिया को उप मुखरा बांटा तक सीमित माना है जो स्पष्ट रूप से बोलने के लिए उपयोग होने वाली मांसपेशीय प्रणाली पर आधारित है।

बोलने की इन आदतों के कारण ही विचार प्रक्रिया के फलस्वरूप होने वाली अशाब्दिक अभिव्यक्ति सुनाई नहीं पड़ती। इसी से बच्चों की अपने आप से बातें करने की आदत जुड़ी है, जिसे त्यागने के लिए अभिभावक बच्चों को प्रायः डाँटते रहते हैं और बच्चे शाब्दिक अभिव्यक्ति को त्याग कर मन में उठने वाले विचारों की अभिव्यक्ति बिना आवाज किये करते रहने की आदत डाल लेते हैं। जीव तथा स्वर यंत्र की मांसपेशियाँ स्वर प्रकोष्ठ कहलाती हैं। ये मांसपेशियाँ सोचने के अंतर्निहित व्यवहार में शामिल होती हैं। उद्दीपन की व्यक्त प्रतिक्रियाएँ जो भौंह चढ़ाने और कंधे उचकाने जैसे हाव भावों द्वारा अभिव्यक्ति पाती हैं, वे विचारों की ही प्रतिनिधि होती हैं।

8.2.5 सीखना

यद्यपि थॉर्नडाइक के प्रारंभिक पशु अनुसंधान से प्रभावित होने के बांड वाट्सन को विश्वास हो गया था कि थॉर्नडाइक के प्रभाव का नियम अत्यधिक मानसिकतावादी था। थॉर्नडाइक इस बात पर विश्वास करता था कि मस्तिष्क में संतुष्टि का केंद्र प्रबलन का काम करता है, फिर भी, वाट्सन इसे एक अनुभूति अथवा चेतना की एक अवस्था मानता था, वाट्सन के अनुसार, अनुकूलन की प्रक्रिया में एक दोष यह है कि यह समीपस्थता लाती है। इससे घटनाएँ समय-प्रबद्ध हो जाती हैं।

थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम पर निर्भर होने के स्थान पर वाट्सन संपर्कता और बारंबारता द्वारा सीखने के प्राचीन सिद्धांतों को महत्व देता है। वाट्सन की यह धारणा रूसी मनोवैज्ञानिक पावलव के विचारों से मेल खाती है। सीखने की प्रक्रिया के दौरान जीवधारी की सही प्रतिक्रिया व्यक्त करना सीखने के प्रयासों की सतता सुनिश्चित करता है। सही परिणाम देने वाली प्रतिक्रियाओं के अस्तित्व में आने की संभावनाएँ विपरीत परिणाम देने वाली प्रतिक्रियाओं की तुलना में अधिक होती हैं। जैसे-जैसे प्रतिक्रिया की बारंबारता में वृद्धि होती जाती है, वैसे-वैसे उस प्रतिक्रिया के दुहराये जाते रहने की संभावना बढ़ जाती है। इसे *बारंबारता का नियम* कहा जाता है। इससे यह संकेत भी मिलता है कि सीखने की प्रक्रिया के दौरान यदि अगली बार प्रतिक्रियादी अभिव्यक्ति किये जाने पर वही परिणाम आने की संभावना होगी तब ही अंतिम रूप से जीवधारी उस क्रिया को दुहराने का फैसला लेगा। इसे वाट्सन ने नवीनता के नियम की संज्ञा दी है। वाट्सन इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि उद्दीपन तथा प्रतिक्रियाओं की यांत्रिक प्रणाली जीवधारी को सीख देने का काम करती है।

8.2.6 मन-शरीर समस्या

जबवाट्सन ने अपने मन व शरीर के संबंध के बारे में अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया, तब चार धारणाएँ अस्तित्व में थीं।

इनमें चार धारणाओं का विवरण इस प्रकार है—

- 1) *सांकेतिक आदान-प्रदान की धारणा* : इस धारणा के अनुसार, मस्तिष्क और शरीर इस प्रकार काम करते हैं कि जिस तरह मस्तिष्क शरीर को प्रभावित करता है तथा उसी प्रकार शरीर मस्तिष्क को प्रभावित करता है। इस धारणा को रेने देकार्त ने प्रस्तावित किया था तथा विलियम जेम्स ने इसे स्वीकृति प्रदान की थी।
- 2) *मनोदैहिक समानता* : इस धारणा के अनुसार, मानसिक व शारीरिक घटनाएँ बिना किसी पारस्परिक हस्तक्षेप के समानान्तर व साथ-साथ घटित होती रहती हैं।
- 3) *उपोत्पादवाद* : यह धारणा यह मानकर चलती है कि मानसिक घटनाएँ शारीरिक घटनाओं के उप-उत्पाद हैं, जो व्यवहार के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। यही कारण है कि शारीरिक घटनाएँ मानसिक घटनाओं के कारण बनती हैं परन्तु मानसिक घटनाएँ शारीरिक घटनाओं का कारण नहीं बनतीं।
- 4) *भौतिकवाद* यह अवधारणा मानसिक घटनाओं अथवा चेतना का अस्तित्व स्वीकार ही नहीं करती।

आरंभ में अधिपतिवाद धारणा को वाट्सन ने स्वीकार किया, बाद में वाट्सन भौतिकवाद की ओर मुड़ गये। वाट्सन यह मानते थे कि चेतना का अस्तित्व एक ऐसी कपोल कल्पना है जिसका कोई प्रमाण नहीं है। मस्तिष्क व शरीर के सम्बंध की सीधे सीधे यह घोषणा करके नकार दिया कि मस्तिष्क का अस्तित्व होता ही नहीं। उन्होंने तर्क दिया कि मनोविज्ञान सम्बंधी कोई भी विचारधारा जो चेतना के अध्ययन का समर्थन करती है, उसे विज्ञान नहीं माना जा सकता। वाट्सन के विचार में मानसिक प्रक्रियाएँ, चेतना, आत्माएँ तथा प्रेत इनमें से किसी भी विज्ञान में कोई स्थान नहीं है।

8.2.7 यौन-शिक्षा

यौन-शिक्षा के बारे में वाट्सन बहुत कुछ कहना चाहता था उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यौन-क्रियाओं के बारे में स्पष्ट और यथार्थ जानकारी बच्चों को अवश्य दी जानी चाहिए। यौन-जानकारी को खुल्लम खुल्ला प्रदान करने के लिए, मिथक तथा संकोच तोड़ने के लिए वाट्सन ने फ्रायड की प्रशंसा की है।

8.2.8 विज्ञापन

मनोविज्ञान के क्षेत्र में लम्बे समय तक काम करने के बाद वाट्सन ने जो वाल्टर थॉमसन की विज्ञापन एजेंसी को अपनी सेवाएँ देना आरम्भ कर दिया था। विज्ञापन में उन्होंने अपनी मनोवैज्ञानिक प्रतिभा का इस्तेमाल बड़ी सफलता के साथ किया। चार वर्ष के भीतर ही वे विज्ञापन प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष बन गये थे। उपभोक्ता व्यवहार का विषय अध्ययन करने तथा सार्वजनिक रूप से लोकप्रिय लेख लिखते रहने के कारण उन्हें विज्ञान-जगत में नई पहचान मिली। इस प्रकार वाट्सन को मनोविज्ञान में नई धारा जोड़ने के साथ-साथ विज्ञापन जगत तथा बाजार की दुनिया में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का सफलतापूर्वक उपयोग करने के लिए भी याद किया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

- 1) वाट्सन की संवेगों की अवधारणा विलियम जेम्स से किस प्रकार भिन्न है।
.....
.....
.....
.....
.....
- 2) वाट्सन ने किस प्रकार से विचार प्रक्रियाओं के अवलोकन के लिए सुझाव दिया?
.....
.....
.....
.....
.....

8.3 वाट्सन का व्यवहारवाद : आलोचनात्मक अध्ययन

प्रायः दो आधारों पर वाट्सन के व्यवहारवाद की आलोचना की जाती है:

- 1) मनोविज्ञान व्यवहारवाद तक ही सीमित होकर रह गया, क्योंकि व्यवहारवाद ने व्यवहार को उद्दीपन और प्रतिक्रिया के दायरे में आने वाली घटनाओं तक ही समेट दिया। वाट्सन ने भौतिकता, उद्दीपन तथा उसकी प्रतिक्रियाओं के केंद्रीय नियंत्रण को अनदेखा कर, इस संदर्भ में मानसिक घटनाक्रम को सिरे से नकार दिया।
- 2) वाट्सन के व्यवहारवाद ने कटौतीवाद का सहारा लिया, यह मानते हुए कि व्यवहार को पर्यावरणीय उद्दीपन तथा दृश्य प्रतिक्रियाओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

वाट्सन की विचारधारा की तर्कसंगतता यह प्रस्तावित करने में है कि वास्तव में व्यवहार भौतिक विज्ञान तथा शरीर विज्ञान को कम कर देता है। इस तरह के कटौतीवाद के कारण व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वतंत्र अस्तित्व पर प्रश्न उठता है।

इस प्रकार सरलता और स्पष्टता के दावे के बावजूद वाट्सन के व्यवहारवादी मनोविज्ञान के अंतर्गत वास्तविक व्यावहारिक स्तर के विश्लेषण की विश्वसनीयता विवादास्पद ही रही। अभिप्रेरणा के सिद्धांत के अधिष्ठाता विलियम मेकडूगल ने वाट्सन की मनोवैज्ञानिक अवधारणा की कटु आलोचना की। उनकी वाट्सन के साथ जोरदार बहस हुई थी जो 'द बैटिल ऑफ बिहेवियरिज्म' शीर्षक से 1929 में प्रकाशित हुई थी। मेकडूगल का अभिप्रेरणा का सिद्धांत बताता है कि मनुष्य का व्यवहार विचार और क्रिया को सहज प्रवृत्तियों का परिणाम होता है।

व्यवहारवाद ने शीघ्र ही इन विचारों को ग्रहण कर लिया जो पहले ही स्वीकृति पा चुके थे। वाट्सन ने प्रवृत्ति की धारणाओं को स्वीकार नहीं किया।

यद्यपि मेकडूगल इस बात से सहमत थे कि मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में व्यवहार सम्बंधी जानकारियों को महत्व दिया जाय परन्तु वे यह भी चाहते थे चेतना सम्बंधी जानकारियाँ भी अपना महत्व रखती हैं। मेकडूगल ने प्रश्न उठाया कि मनोवैज्ञानिक आत्मविश्लेषण के बिना किसी की प्रतिक्रिया के आशय को कैसे समझ सकते हैं। उन्होंने यह बात भी उठाई कि यथार्थता पर अधिक जोर देने की स्थिति के दिवा स्वप्नों तथा कल्पनाओं को तो समझा ही नहीं जा सकता, जो व्यवहार के महत्वपूर्ण पक्ष हैं।

फिर मेकडूगल ने पूरी तरह सुनिश्चित मानव व्यवहार को चुनौती दी जो संकेत करता है कि सब कुछ अतीत के अनुभव का ही प्रत्यक्ष परिणाम है और यदि अतीत की घटनाओं की जानकारी प्राप्त हो जाय तो किसी भी घटना के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है। इस तरह का मनोविज्ञान चयन की स्वतंत्रता के विपरीत है। स्वतंत्र इच्छा की अवधारणा तथा अपने कार्यों के प्रति दायित्व बोध के बिना मनुष्य पहल करना ही छोड़ देंगे। कोई सामाजिक बेहतरीकरण के लिए प्रयास ही नहीं करेगा। साथ ही युद्धों को रोकने के प्रयास, अन्याय का विरोध, सामाजिक अथवा व्यक्तिगत आदर्श की स्थापना जैसे कार्य अपना अर्थ खो देंगे।

8.4 वाट्सन का व्यापक प्रभाव

20 साल तक मनोविज्ञान के विकास में अपना योगदान देने के बाद वाट्सन अनेक वर्षों तक मनोविज्ञान के मुख्यधारा से अलग रहे। 1913 में उनके शोधपत्र - 'साइकोलॉजी एज बिहेविचरिस्ट्स व्यूइज' ने आधुनिक मनोविज्ञान की दिशा बदल दी थी। वाट्सन के मनोविज्ञान के क्षेत्र में हस्तक्षेप के कारण मनोविज्ञान की प्रविधियों तथा शब्दावलियाँ अत्यधिक यथार्थपरक हो गई थीं, क्योंकि वाट्सन ने अपने समय में मौजूद मनोविज्ञान की अध्ययन विधियों का तीव्र विरोध कर डाला था।

अपने समय में व्याप्त विषय (चेतना) तथा क्रिया पद्धति (आत्म विश्लेषण) दोनों का खंडन करते हुए वाट्सन ने मनोविज्ञान में संपूर्ण सुधार करने का प्रस्ताव किया। बाद में वाट्सन ने मनोविज्ञान को विज्ञान सम्मत मनोविज्ञान के रूप में पुनः स्थापित किया।

वाट्सन ने मनोविज्ञान को एक इकाई के रूप में स्थापित करने का उपहार दिया। क्योंकि उन्होंने वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण की संभावना को सर्वसम्मति दिलवाते हुए व्यवहारों की व्याख्या उद्दीपन तथा घटनाओं के रूप में की जिससे संरचनावाद की आत्मविश्लेषण की पद्धति को एक विकल्प मिल सका।

परिणामतः वाट्सन की प्रणाली ने पर्यावरणीय उद्दीपन के प्रति व्यावहारिक अनुकूलन क्षमता को केंद्र में रखते हुए एक सुस्पष्ट वस्तुनिष्ठ विज्ञान सम्मत मनोविज्ञान प्रदान किया, जिसने 1930 में व्यवहारवाद को अमेरिकन मनोविज्ञान की प्रमुख प्रणाली बना दिया। वाट्सन की मनोविज्ञान संबंधी विचारधारा ने दो दूरगामी प्रभाव छोड़े—

- 1) मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य चेतना की अवस्थाओं के वर्णन और व्याख्या से हटकर भविष्यवाणी तथा व्यवहार के नियंत्रण पर आ गया।
- 2) प्रत्यक्ष व्यवहार मनोविज्ञान की एकमात्र विषयवस्तु बन गया।

आज इस समस्याओं पर वाट्सन इनकी परिव्याप्ति के प्रभाव के कारण बड़ी संख्या में मनोवैज्ञानिकों को व्यवहारवादी माना जा सकता है। व्यवहारवाद के कुछ प्रमुख सिद्धांत इतने स्पष्ट हैं कि वे स्तरीय प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के अंग बन गये हैं। एक तरह से प्रायः सभी आधुनिक मनोवैज्ञानिक व्यवहारवादी हैं, वे अपने आंकड़े प्रत्यक्ष व्यवहार के आधार पर ही जुटाते हैं, उद्दीपन तथा प्रतिक्रियाओं की सही व्याख्या करने का प्रयास करते हैं। अनुभवजन्य परीक्षणों को नकारने वाले सिद्धांतों पर विश्वास नहीं करते तथा आत्मनिष्ठ विवरणों को वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मानते। मनोविज्ञान की सामाजिक परिभाषा— व्यवहार तथा मानसिक प्रक्रियाओं का विज्ञान-सम्मत अध्ययन, व्यवहारवाद के कारण ही अस्तित्व में आया है।

वाट्सन को 1957 में मनोविज्ञान में उनके प्रभावशाली योगदान के लिए अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन ने प्रतिष्ठित के स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। 25 सितम्बर, 1958 को 80 वर्ष की आयु में वाट्सन का देहावसान हुआ। महान दार्शनिक गुस्ता बर्गमन ने 1956 में वाट्सन की उपलब्धियों की समीक्षा करते हुए, वाट्सन को फ्रायड के बारे बताते हुए कहा— “वाट्सन मनोविज्ञान के इतिहास में शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सबसे महत्वपूर्ण हस्ती है।”

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) वाट्सन के व्यवहारवाद की विलियम मेकडूगल ने किस प्रकार आलोचना की है?

.....
.....
.....
.....
.....

2) समकालीन समय में व्यवहार किस प्रकार प्रचलित है?

.....
.....
.....
.....

8.5 सारांश

अंत में उन सभी प्रमुख बिन्दुओं का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है, जिनका अध्ययन हमने इस इकाई में किया है—

- 1913 में अमेरिकन के मनोवैज्ञानिक जॉन ब्रोडस वाट्सन ने अपने अनुसंधान पत्र 'साइकोलॉजी एज द बिहेवियरिस्टस व्यू इट' में व्यवहारवाद की औपचारिक रूप से स्थापना की थी। इस पत्र के माध्यम से उन्होंने आधुनिक मनोविज्ञान की दिशा बदल दी थी।

- व्यवहारवाद का मुख्य पक्ष ज्ञान अर्जित करना या सीखना है। व्यवहारवाद में पारंपरिक तथा स्फूर्त अनुकूलन के अध्ययन से सीखने की प्रक्रिया को समझने की स्थिति में वृद्धि हुई है।
- व्यवहारवाद का केंद्रीय सिद्धांत यह है कि जीवधारी व्यावहारिक अनुकूलन सीखना है तथा उसके सीखने की प्रक्रिया साहचर्य के सिद्धांतों से नियंत्रित होती है।
- व्यवहारवाद के अनुसार, व्यवहार केवल मानसिक घटनाओं से सम्बंधित चीजों का प्रदर्शन नहीं, बल्कि उसका एक विशेष अर्थ है। प्रत्यक्ष व्यवहार अर्थात् वह व्यवहार जिसका अवलोकन किया जा सकता है उसे इसलिए उसका वस्तुकरण भी हो सकता है, यह इस सिद्धांत का केंद्र रहा।
- पारसीमनी तथा साहचर्यवाद व्यवहार की दो आधारभूत परिकल्पनाएँ हैं।
- वाट्सन ने विज्ञान सम्मत मनोविज्ञान की आवश्यकता पर जोर दिया था जिसके दायरे में केवल दृष्टिगोचर होने वाली क्रियाएँ आती हैं जिनकी उद्दीपन एवं प्रतिक्रिया के दायरे में यथार्थतः व्याख्या की जा सकती है।
- बीसवीं शताब्दी की व्यवहारवाद से पहले संवेदनवादी विचारधारा अस्तित्व में आई थी। प्रत्यक्षवादी आंदोलन के जनक ऑगस्टे कॉमटे ने तथ्यात्मक ज्ञान- ऐसा सत्य जो तर्कसम्मत हो तथा जिस पर सवाल न उठाए जा सकें, पर जोर दिया था।
- व्यवहारवाद के ज्यादातर सिद्धांत अनुभववाद तथा साहचर्यवाद से लिए गये हैं- ये दोनों ब्रिटेन के दार्शनिकों की प्रमुख एवं प्रभावशाली विचारधाराएँ हैं।
- वाट्सन के व्यवहारवाद से पहले व्यापक रूप से चर्चित विचारधारा जीव मनोविज्ञान थी जो विकासवादी सिद्धांत से उत्पन्न हुई थी।
- पावलव ने प्राचीन अनुबंधन- सीखने की प्रविधि को अध्ययन, की खोज की थी जिसमें अनैच्छिक क्रिया सम्मिलित है।
- पावलव के प्राचीन अनुबंधन का वाट्सन पर गहरा प्रभाव था। वाट्सन ने अपनी व्यावहारिक पद्धति का प्रतिमान पावलोव के शोध के आधार पर ही तैयार किया था जिसे वह बढ़ावा देने का प्रयत्न कर रहा था। पारंपरिक अनुकूलन मनुष्यों पर लागू करने की संभावना देखने के बाद वाट्सन ने प्रायोगिक स्तर पर संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रायोगिक स्तर पर निर्मित करने के प्रयास द्वारा संवेगों के अध्ययन की ओर बढ़ाया।
- एडवर्ड ली थार्नडाइक अमेरिका का मुख्य शोधकर्ता था जिसे वाट्सन के व्यवहारवाद का उपयुक्त पूर्ववर्ती माना जाता है। साहचर्यवाद पर किये गये एडवर्ड ली थार्नडाइक के कार्य ने व्यवहारवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- थार्नडाइक का प्रभाव का नियम बताता है कि वे प्रतिक्रियाएँ जिनके सुखद व संतोषप्रद परिणाम आते हैं, प्रायः बार-बार दुहराई जाती हैं तथा जिनके परिणाम दुःखद लगते हैं, वे नहीं दुहराई जातीं।
- सीखने की प्रक्रिया के बारे में अलग-अलग प्रतिमान अपनाए जाने के बावजूद पावलव तथा थार्नडाइक दोनों ने साहचर्य प्रविधि के विशिष्ट अनुभवजन्य प्रमाण

प्रस्तुत किए, व्यवहारवाद को स्पष्ट करने के लिए वाट्सन ने क्रमबद्ध संदर्भ तैयार किये।

- व्यवहारवाद का सीधा-सीधा पूर्ववर्ती प्रकार्यवाद था, यद्यपि प्रकार्यवाद पूरी तरह वस्तुपरक नहीं था फिर भी वाट्सन के कार्यकाल में प्रकार्यवादी मनोविज्ञान अपनी पूर्ववर्ती विचारधाराओं की तुलना में अधिक वस्तुपरक हो गया।
- जेम्स केकीन कैटेल ने चेतना के अध्ययन का विरोध किया था तथा आत्मविश्लेषण की आलोचना की थी। कैटेल को वाट्सन के व्यवहारवाद का पितामह माना जाता है।
- वाट्सन के व्यवहारवादी मनोविज्ञान ने एक ऐसे विज्ञान के रूप में विकास का प्रयास किया, जिसमें आवश्यक तथा व्यक्तिपरक पद्धतियों शामिल नहीं थी, एक ऐसा विज्ञान जो भौतिक विज्ञान की तरह सुदृढ़ एवं स्वार्थमूलक था।
- आरंभ में व्यवहार में मूलप्रवृत्तियों की भूमिका को वाट्सन ने स्वीकार किया था, 1925 में उन्होंने मनुष्यों में प्रवृत्तियों की धारणा को पूरी तरह नकार दिया। उन्होंने दावा किया कि झींकना, चीखता, अलग होना, रेंगना, चूसता तथा सांस लेना आदि सरल प्रतिक्रियाओं के कुछ उदाहरण हो सकते हैं, परन्तु किसी जटिल, प्रकृत व्यवहार पद्धति को प्रवृत्तियाँ नहीं कहा जा सकता।
- वाट्सन भावनाओं को उत्प्रेरण विशेष की शारीरिक प्रतिक्रिया मानता था। शरीर में होने वाले आंतरिक परिवर्तन जैसे आक्रमणकारी को देखकर हृदय गति का बढ़ जाना, उपयुक्त जानकारी के कारण उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया है।
- वाट्सन के अनुसार, आवाज रहित बोलने के लिए भी उन्हीं मांसपेशीय आदतों का उपयोग किया जाता है, जो स्पष्ट रूप से बोलने के लिए उपयोग होती हैं।
- वाट्सन ने सीखने की प्रक्रिया की व्याख्या समीपस्थता या सम्बंध तथा बारंबारता के प्राचीन सिद्धांतों के आधार पर ही की है। वाट्सन की यह धारणा पावलव की धारणा से मेल खाती है। सीखने के बारे में वाट्सन बारम्बारता के नियम तथा नवीनता के नियम का अनुसरण करता है।
- मनो-दैहिक सम्बंध के मामलों में आरंभ में वाट्सन ने उपोत्पादवादी धारणा को स्वीकार किया था, परन्तु बाद में वे भौतिक एकात्मवाद के दृष्टिकोण की ओर मुड़ गये। वाट्सन यह मानते थे कि चेतना का अस्तित्व एक ऐसी कपोल कल्पना है जिसका कोई प्रमाण नहीं है, मस्तिष्क व शरीर के सम्बंध को उन्होंने सीधे-सीधे यह कहकर नकार दिया कि मस्तिष्क का अस्तित्व होता ही नहीं।
- अभिप्रेरणा के सिद्धांत के अधिष्ठाता विलियम मेकडूगल वाट्सन की मनोवैज्ञानिक अवधारणा के घोर आलोचक थे। वाट्सन के सिद्धांतों के लेकर उन्होंने वाट्सन के साथ जोरदार बहस की थी जो 'द बैटिल ऑफ बिहेवियरिज्म' शीर्षक से 1929 में प्रकाशित हुई थी।
- मेकडूगल यह मानते थे कि स्वतंत्र इच्छा की अवधारणा तथा अपने कार्यों के प्रति दायित्व बोध के बिना, जैसा कि वाट्सन का मत है, समाज बेतरीकरण के लिए कोई प्रयत्न ही नहीं करेगा, साथ ही युद्धों को रोकने के प्रयास, अन्याय का विरोध तथा सामाजिक अथवा व्यक्तिगत आदर्श स्थापित करने जैसे अपना अर्थ खो देंगे।

- मनोविज्ञान के बारे में कार्यकाल में प्रचलित विषय (चेतना) तथा क्रिया-पद्धति दोनों का खंडन करते हुए वाट्सन ने मनोविज्ञान में संपूर्ण सुधार करने का प्रस्ताव किया, बाद में उन्होंने मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में फिर से स्थापित किया।
- आज इन समस्याओं पर वाट्सन की परिव्याप्ति के प्रभाव के कारण बड़ी संख्या में मनोवैज्ञानिकों को व्यवहारवादी माना जा सकता है। व्यवहारवाद के कुछ प्रमुख सिद्धांत इतने स्पष्ट हैं कि वे स्तरीय प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के अंग बन गये हैं।
- मनोविज्ञान की वर्तमान परिभाषा - 'व्यवहार और मानसिक क्रिया-पद्धतियों का वैज्ञानिक अध्ययन, व्यवहारवाद के कारण ही अस्तित्व में आई है।

8.6 मुख्य शब्द

- व्यवहारवादी** : एक विचारधारा जो हमारे प्रतिक्रिया व्यक्त करने के तरीकों में पर्यावरणीय उद्दीपन की भूमिका तय करने पर जोर देती है।
- सीखना** : सीखने या ज्ञानार्जन की क्रिया - जो व्यवहार में अनुभव के आधार पर परिवर्तन लाती है।
- बचत मतव्यवता** : व्यवहारवाद का सबसे मौलिक सिद्धांत। यह प्रायः किसी घटना के सरलतम व्याख्या तलाश कर लेती हैं।
- साहचर्यवाद** : साहचर्यवाद व्यवहार निर्धारित करने में अनुभव की भूमिका को प्रधानता देती है। जो जानने को प्रधानता देता है और जानने की क्रिया द्वारा उत्पन्न होता है। अरस्तु के काल से आधारभूत व्याख्या यह रही है कि जीवधारी साहचर्य से सीखते हैं, अर्थात् विचारों तथा घटनाओं के बीच सम्बंध स्थापित करते हुए। मनोविज्ञान में व्यवहारवादी साहचर्यवाद की अवधारणा को विशेष रूप से प्रभावित थे। ब्रिटेन के अनुभववादियों ने भी साहचर्यवाद का समर्थन किया है।
- प्राचीन अनुबंधन** : सीखने की एक पद्धति जिसमें दो पर्यावरणीय उद्दीपनों का सम्मिलन शामिल होता है, इस प्रकार की एक उद्दीपन की प्रतिक्रिया दूसरे उद्दीपन के साहचर्य के आधार पर बदली जा सकती है।
- प्रभाव का नियम** : वे प्रतिक्रियाएँ जो जीवधारी को सुखद तथा संतोषप्रद परिणाम देती हैं। वे प्रायः बार-बार दोहराई जाती हैं तथा वे प्रतिक्रियाएँ जो दुःखद परिणाम देती हैं। वे प्रायः नहीं दोहराई जातीं। यह एक साहचर्य है, जहाँ प्रतिक्रिया तथा उसके परिणामों के बीच जीवधारी संबंध स्थापित करता है।
- व्यवहार के प्रकार** : वाट्सन ने व्यवहार के चार प्रकारों की व्याख्या की है 1) स्पष्ट व्यवहार— जिसे सीखा जा सकता है तथा जो स्पष्ट होता है। 2) अस्पष्ट व्यवहार – जो सीखा जा सकता है परंतु स्पष्ट नहीं होता। 3) स्पष्ट न सीखे जाने योग्य व्यवहार – जो प्राकृतिक रूप से होता है और क्रियाओं में दिखाई पड़ता है। जैसे – पकड़ना, पलक झपकना, तथा छींकना आदि। 4) न सीखे जाने

योग्य अस्पष्ट व्यवहार – जो प्राकृतिक रूप से होता है परंतु देखा नहीं जा सकता जैसे – ग्रंथियों का स्राव और परिसंचरणीय परिवर्तन।

संवेग : वाट्सन के अनुसार, विशिष्ट उद्दीपन के प्रति शारीरिक प्रतिक्रियाओं को संवेग कहा जाता है। शरीर के आंतरिक अंगों में परिवर्तन जैसे आक्रमणकारी को देखकर हृदय की गति का तेज हो जाना एक समुचित ज्ञान अर्जन से ऊर्जा प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप ऐसा होता है। इस सिद्धांत के अनुसार, आंतरिक अंगों के द्वारा संवेग का कोई चैतन्य प्रत्यक्षण अथवा संवेदनात्मक अनुभूति उत्पन्न नहीं की जाती। वाट्सन आंतरिक प्रतिक्रियाओं को प्रधानता देता है। संवेग एक प्रकार का स्पष्ट व्यवहार ही होता है, जिसमें शारीरिक क्रियाएँ प्रदर्शित होती हैं। जैसे— शर्माना, पसीना आना, नाड़ी की गति का तेज होना आदि क्रियाएँ कुछ सीमा तक आंतरिक प्रतिक्रियाओं को स्पष्ट करती हैं।

विचार प्रक्रियाएँ : वाट्सन यह मानता है कि विचार मनुष्य की अन्य क्रियाओं के अवयवों की तरह एक प्रकार का ज्ञानेन्द्रिय व्यवहार है। इसलिए वह स्नायु व्यवहार में अंतर्निहित है। वाट्सन ने सोचने की प्रक्रिया को उपमुखरवाद तक सीमित माना है जो स्पष्ट रूप से बोलने के लिए इस्तेमाल होने वाली मांसपेशीय प्रणाली पर ही आधारित है।

आवृत्ति का नियम : गलत प्रतिक्रियाएँ की तुलना में सही प्रतिक्रियाएँ अधिक घटित होती हैं और जैसे-जैसे इनके घटित होने की बारम्बारता बढ़ती है वैसे-वैसे प्रतिक्रियाओं के दोहराये जाने की संभावना बढ़ जाती है।

न्वीनता का नियम : सीखने की अवस्था के दौरान जीवधारी की प्रतिक्रिया की सबसे अधिक संभावना यह होगी जो वह उसी स्थिति का फिर से सामना करने पर करेगा।

लघुकारणवाद : व्यवहारवाद कटौतीवाद के सिद्धांत का अनुसरण करना प्रतीत होता है। वाट्सन मानता था कि व्यवहार पर्यावरणीय उत्प्रेरण तथा अवलोकन करने योग्य प्रतिक्रियाओं में तब्दील हो जाता है।

8.7 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) वाट्सन ने व्यवहारवाद की स्थापना में की थी।
- 2) व्यवहारवाद की दो भौतिक परिकल्पनाएँ और हैं।
- 3) वाट्सन के अनुसार तीन आधारभूत संवेग, और हैं।
- 4) वाट्सन के सीखने के अपने दृष्टिकोण के लिए जिन संवेग नियमों का प्रयोग किया है वे और हैं।

- 5) पावलव और थार्नडाइट ने वाट्सन के व्यवहारवाद को किस प्रकार प्रभावित किया।
- 6) प्रवृत्तियों के बारे में वाट्सन की क्या धारणा थी।
- 7) संवेगों का प्रायोगिक प्रदर्शन वाट्सन ने किस प्रकार किया।
- 8) वाट्सन ने मस्तिष्क और शरीर की समस्या का समाधान कैसे किया।
- 9) वाट्सन के व्यवहारवाद की दो प्रमुख आलोचनाएँ कौन-कौन सी हैं।
- 10) मनोविज्ञान पर वाट्सन के व्यवहारवाद के दूरगामी प्रभाव कौन-कौन से हैं।

8.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*. Harlow: Pearson Education Ltd.

Glassman, W. E. & Hadad, M. (2009). *Approaches to Psychology*. London: McGraw-Hill Education.

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*. Wadsworth: Cengage Learning.

Leahey, Thomas H. (2017). *A History of Psychology. From Antiquity to Modernity*. Routledge.

Marx, M. H. & Hillix, W. A. (1963). *Systems and Theories in Psychology*. New York: McGraw-Hill.

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology*. Wadsworth: Thomson Learning, Inc.s

8.9 चित्रों के संदर्भ

First Discoverers (n.d.). Child Development Theories: John Watson, <https://www.firstdiscoverers.co.uk/child-development-theories-john-watson/>

8.10 ऑनलाइन संसाधन

Cherry, K. (2020). Biography of Psychologist John B. Watson, <https://www.verywellmind.com/john-b-watson-biography-1878-1958-2795550>

Snow, A. (2015). Behaviorism: Pavlov, Watson, Skinner, <https://www.youtube.com/watch?v=xvVaTy8mQrg>

Stanford Encyclopaedia of Philosophy (2019). Behaviorism, <https://plato.stanford.edu/entries/behaviorism/>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). John B. Watson, <https://www.britannica.com/biography/John-B-Watson>

व्यवहारात्मक एवं
मानवतावादी
दृष्टिकोण

पुनरावलोकन प्रश्नों के उत्तर (1-4)

(1) 1913, (2) बचत एवं साहचर्यवाद (3) भय, क्रोध एवं प्रेम (4) बांरबारता का नियम एवं नीवनता का नियम।



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 9 नवव्यवहारवाद*

संरचना

- 9.0 प्रस्तावना
- 9.1 तार्किक सकारात्मकवाद
- 9.2 संक्रियावाद
- 9.3 नवव्यवहारवादियों का योगदान
 - 9.3.1 एडविन गुथरी
 - 9.3.2 क्लार्क हल
 - 9.3.3 एडवर्ड टोलमैन
 - 9.3.4 बर्हस फ्रेड्रिक स्किनर
- 9.4 वर्तमान में व्यवहारवाद
- 9.5 सारांश
- 9.6 मुख्य शब्द
- 9.7 पुनरावलोकन प्रश्न
- 9.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 9.9 चित्रों के संदर्भ
- 9.10 ऑनलाइन संसाधन

सीखने का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात्, आप निम्न में सक्षम होंगे:

- व्यवहारवाद के विकास और विस्तार की व्याख्या करने में;
- तार्किक सकारात्मकता और संक्रियावाद के विकास की व्याख्या करने में;
- नवव्यवहारवाद के उदय में तार्किक सकारात्मकता और संक्रियावाद की भूमिका की व्याख्या करने में; और
- चार मुख्य व्यवहारवादियों – गुथरी, हल, टोलमैन, और स्किनर के योगदान की व्याख्या कर सकेंगे ।

9.0 प्रस्तावना

वाट्सन द्वारा लायी गयी क्रांति से मनोविज्ञान में रातोंरात परिवर्तन नहीं हुआ। वाट्सन के व्यवहारवाद को स्थापित होने में कुछ समय लगा। 1924 में, वाट्सन के व्यवहारवाद को शुरू करने के लगभग आधे दशक के बाद ऐसा कहा गया कि 'यह चारों तरफ फैल चुका है'। 1930 के आसपास वाट्सन तर्कसंगत रूप से घोषणा कर सकते थे, कि उनकी जीत पूरी हो गयी है। इस प्रकार 1930 तक व्यवहारात्मक मनोविज्ञान इस

* डॉ. सैफ आर. फारुकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

क्षेत्र के पहले के सभी उपागमों की ओर अग्रसर था। वाट्सन का व्यवहारवाद, व्यवहारवाद का पहला चरण था। व्यवहारवाद मनोविज्ञान के एक सम्प्रदाय के रूप में विभिन्न चरणों से गुजरा, और निरन्तर विकसित हो रहा है। व्यवहारवाद के विकास को तीन विभिन्न अवस्थाओं में बताया जा सकता है :

- **पहली अवस्था** : व्यवहारवाद की पहली अवस्था – *वाट्सन का व्यवहारवाद* 1913 से लगभग 1930 तक।
- **दूसरी अवस्था** : व्यवहार की दूसरी अवस्था – *नव व्यवहारवाद* – 1930 से 1960 तक बताया गया, इस अवस्था ने वाट्सन के विचारों को अधिक कठोर तरीके से मजबूती दी।
- **तीसरी अवस्था** : व्यवहारवाद की तीसरी अवस्था – *नया व्यवहारवाद या सामाजिक व्यवहारवाद* – इसको 1960 से लगभग 1990 के बीच माना जाता है। इस अवस्था में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के विचार की तरफ वापसी की गयी, जबकि प्रकट व्यवहार के अवलोकन पर ध्यान को बनाये रखा।

वाट्सन के व्यवहारवाद के बाद के चरण के दौरान दर्शनशास्त्र में एक प्रमुख विकास 'तार्किक सकारात्मकता और विज्ञान में 'संक्रियावाद' के रूप में हुआ। इन दोनों विकासों का व्यवहारवाद पर सीधे प्रभाव पड़ा जिसके नव-व्यवहारवाद का उदय हुआ।

9.1 तार्किक सकारात्मकतावाद

कॉम्टे और मैक के सकारात्मकतावाद का लक्ष्य था कि विज्ञानों को सिर्फ उस व्यवहार का अवलोकन करना चाहिए, जिसका प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन किया जा सके। 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक इसे अवास्तविक माना जाता था, क्योंकि भौतिकविदों और रसायनशास्त्रियों ने सैद्धान्तिक अवधारणाओं जैसे कि गुरुत्वाकर्षण चुंबकत्व, परमाणु, बल, इलेक्ट्रॉन और अत्यावश्यक द्रव्यमान की खोज कर चुके थे। इनमें से किसी भी सत्त्व (entities) को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता था। यह कठिनाई थी, पर विज्ञान के लिए रास्ता खोजा गया कि किस प्रकार आध्यात्मिक अटकलों का सामना किए बिना सिद्धान्त का प्रयोग करें। इस समस्या का समाधान तार्किक सकारात्मकवाद के द्वारा दिया गया।

तार्किक सकारात्मकवाद, 1924 के आसपास वियाना के दार्शनिकों के एक छोटे समूह जिसे वियाना सर्कल के रूप में जाना जाता है के द्वारा दिये गये विज्ञान के एक दृष्टिकोण को दिया गया नाम है। वियाना सर्कल के द्वारा कॉम्टे और मैक के पुराने सकारात्मकवाद को लिया गया और औपचारिक तर्क के साथ दृढ़ता से जोड़ा गया। उनके द्वारा अमूर्त सैद्धान्तिक पदों को केवल तभी अनुमति दी जानी चाहिए, यदि ये पद आनुभाविक प्रयवेक्षण से तार्किक रूप से निरीक्षण किये गये हो।

तार्किक सकारात्मकवाद ने दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जो आनुभाविक और सैद्धान्तिक थे। विज्ञान ने निरीक्षणात्मक पदों को अनुभवजन्य घटनाओं की तरह संदर्भित किया गया, और सैद्धान्तिक पदों में उनकी व्याख्या की कोशिश की जिसे निरीक्षण किया जा सके। तार्किक सकारात्मकवादियों ने किसी भी तरह से सिद्धान्त को विज्ञान के अंग के रूप में स्वीकार करके अनुभवजन्य के महत्व को कम नहीं किया। तथ्य के रूप में आनुभाविक निरीक्षण तार्किक सकारात्मकवादियों के लिए सर्वोच्चता

थी। यदि सिद्धान्तों ने यह समझने में मदद की, कि क्या निरीक्षण किया जाये, तभी उन्हें उपयोगी समझा गया। तार्किक सकारात्मकवाद का मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव पड़ा। वस्तुनिष्ठता का त्याग किये बिना सिद्धान्त को अनुमति देना, इसने व्यवहारवाद के अधिक जटिल रूपों को उभरने दिया। इसके परिणामस्वरूप मनोविज्ञान ने जिसे व्हाट कोच ने "सिद्धान्त का युग" कहा जा सकता है, इसे लगभग 1930 से 1950 के बीच माना जा सकता है। वियाना सर्कल के एक सदस्य **हरबर्ट फेगल** ने **कार्नाप** के साथ तार्किक सकारात्मकवाद नाम दिया और इसे मनोवैज्ञानिकों के ध्यान में लाने के लिए काम किया।

यह माना जाता है कि यदि मनोविज्ञान तार्किक सकारात्मकवाद के अवधारणाओं का पालन करता तो यह भौतिक विज्ञान की तरह हो जाता। हालांकि ऐसा होने के लिए मनोविज्ञान को संक्रियावाद के सिद्धान्तों का पालन करना पड़ता है।

9.2 संक्रियावाद

1927 में हार्वर्ड के भौतिक शास्त्रों **पर्सि ब्रिसमैन** ने "द लॉजिक ऑफ मॉडर्न फिजिक्स" नामक पुस्तक प्रकाशित की थी। पुस्तक में उन्होंने मैक के प्रस्ताव कि "भौतिक विज्ञान के प्रत्येक अमूर्त संप्रत्यय को, प्रक्रियाओं जिन्हें संप्रत्यय को मापने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए। इसे उन्होंने *संक्रियात्मक परिभाषा* कहा। इस प्रकार संप्रत्यय जैसे *बल* और *ऊर्जा* को वर्तमान में मौजूद बल या ऊर्जा को मात्रा को मापने के लिए प्रयुक्त किये जाने वाले संक्रिया या प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया जाये। दूसरे शब्दों में संक्रियात्मक परिभाषाएँ सैद्धांतिक पदों को निरीक्षणात्मक घटना में बांधती है। सैद्धांतिक पद से परिभाषा के बारे में इस प्रकार कोई अस्पष्टता नहीं होगी। यह आग्रह की सभी अमूर्त वैज्ञानिक पदों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित किया जाए, "संक्रियात्मकता या संक्रियावाद" कहलाया।

संक्रियात्मकता का उद्देश्य, विज्ञान की भाषा और शब्दावली को अधिक वस्तुनिष्ठ और शुद्ध रूप से प्रस्तुत करना और "छद्म समस्याओं" ये वो समस्याएँ हैं जो वास्तव में निरीक्षणात्मक या भौतिक रूप से प्रदर्शित नहीं हो सकती हैं, इनको विज्ञान से छुटकारा पाना था। संक्रियावाद ने मनोविज्ञान में तार्किक सकारात्मकता के लगभग साथ-साथ तुरन्त पकड़ बना ली थी। सैद्धांतिक पदों जैसे *प्रणोद*, *सीखना*, *चिन्ता* और *बुद्धि* को अनुभाविक घटनाओं में बदलने के लिए संक्रियात्मक परिभाषाओं का उपयोग किया गया। इसने, इस प्रकार इन पदों को इनके आध्यात्मिक अर्थों से कर दिया था।

इस तरह का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से मनोविज्ञान की व्यवहार पर नयी अवधारणा के अनुसार या उदाहरण के लिए, सीखने को संक्रियात्मक रूप से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है जैसे एक T भूलभैलया को बनाने में, x सही मोड़ों की संख्या ली गयी, और चिन्ता और बुद्धि के उचित परीक्षण पर आए प्राप्तांक को संक्रियात्मक रूप से परिभाषाओं का कोई अधिक "बुद्धिमता पूर्ण" अर्थ नहीं होता है और यह पूर्ण रूप से सार्वजनिक अवलोकन योग्य व्यवहार के अनुसार था। अधिकांश मनोवैज्ञानिक शीघ्र ही तार्किक सकारात्मकता से सहमत थे, कि एक संप्रत्यय वैज्ञानिक रूप से तब तक अर्थहीन है जब तक वह संक्रियात्मक रूप से परिभाषित न हो। पूर्व सकारात्मकतावाद के विपरीत, तार्किक सकारात्मकवाद को सिद्धान्त से कोई विरुधि नहीं थी। यह देखना कि किस प्रकार विज्ञान वस्तुनिष्ठता खोए बिना सैद्धांतिक हो सकता है वास्तव में

तार्किक सकारात्मकता का एक प्राथमिक लक्ष्य था। 1930 के दशक के आखिर तक तार्किक सकारात्मकवाद प्रयोगात्मक मनोविज्ञान पर हावी हो चुका था। सभी विज्ञानों को अनिवार्य रूप से एक जैसे ही देखा जा रहा था, यह तार्किक सकारात्मकता का एक परिणाम था। यह सुझाव दिया गया कि सभी विज्ञानों को समान शब्दावली का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि ये सभी समान सिद्धान्तों का पालन करते थे, समान अवधारणाएँ बनाते थे, और आनुभाषिक निरीक्षणों की व्याख्या की कोशिश करते हैं। इसके अलावा एक भाषा डेटाबेस को बनाने का सुझाव दिया गया, जिससे सभी पदों की सार्वजनिक अवलोकन योग्य भौतिक वस्तुओं और घटनाओं के सन्दर्भ में परिभाषित किया जाएँ। मनोविज्ञान के साथ अन्य विज्ञानों के बीच एक आम शब्दावली के एकीकरण के लिए यह बहुत ही आवश्यक था, इसे 'भौतिकवाद' रूप में जाना गया। मनोविज्ञान में यह प्रस्ताव कि सभी भौतिक वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक कथन संदर्भित हो, का गहरा प्रभाव पड़ा। एक भौतिक संप्रत्य संक्रिया या प्रक्रिया के सेट के रूप में वही है, जिसके द्वारा इसे निर्धारित किया गया है। कई मनोवैज्ञानिकों का मानना था कि यह सिद्धान्त उनके लिए अच्छी तरह काम करेगा और वे इसे लागू करने के लिए उत्सुक थे।

व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक विशेष रूप से ब्रिजमैन द्वारा छद्म समस्याओं से संबद्ध है। ये वो प्रश्न हैं जो किसी वस्तुनिष्ठ परीक्षण के उत्तर की अवहेलना करते हैं, को छोड़ने की अपील से प्रभावित हुए। प्रस्ताव जैसे कि आत्मा का अस्तित्व और प्रकृति, इसे प्रयोगात्मक परीक्षण में रखा नहीं जा सकता, और कुछ ऐसा जो प्रयोगशाला में नहीं देखा जा सकता और जिसे पामा या प्रहस्तन नहीं किया जा सकता है, विज्ञान के लिए इसका कोई अर्थ नहीं है।

समान कारणों की वजह, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, मनोविज्ञान के विज्ञान के लिए व्यक्तित्व या निजी चेतन अनुभव भी छद्म समस्या है। वस्तुनिष्ठ विधियों का उपयोग चेतना की विशेषताएँ या अस्तित्व को निर्धारित करने यहाँ तक कि जाँच करने के लिए नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार संक्रियावाद के अनुसार, वैज्ञानिक मनोविज्ञान में चेतना का कोई स्थान नहीं है। जब भौतिकी वैज्ञानिकों ने खुलेआम संक्रियावाद के विचार को स्वीकार किया, तो कई मनोवैज्ञानिकों ने भी इस पर विचार किया। विलिहम वुण्ट के समय से मनोविज्ञान भौतिकी विज्ञान के सम्मान के लिए तरस रहा था। आखिरकार मनोवैज्ञानिकों ने भौतिकवादियों की तुलना में बड़े पैमाने पर संक्रियावाद का इस्तेमाल किया। 1920 के दशक और 1930 के दशक के उत्तरार्द्ध में, इन्हीं सब कारणों से, नवव्यवहारवादियों ने संक्रियावाद को अपने मनोविज्ञान के दृष्टिकोण में शामिल किया।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

- 1) आध्यात्मिकता के खतरों का सामना किए बिना सैद्धांतिक सम्प्रत्यों का उपयोग करने में तार्किक सकारात्मकवाद किस प्रकार सहायक हुआ है।

.....

.....

.....

2) संक्रियावाद ने किस प्रकार विज्ञान, जिसमें मनोविज्ञान भी शामिल है, के लिए एक एकीकृत भाषा विकसित करने में भूमिका निभाई।

.....

.....

.....

.....

.....

9.3 नवव्यवहारवादियों का योगदान

जब व्यवहारवाद तार्किक सकारात्मकतावाद से जुड़ा तो परिणामस्वरूप नवव्यवहारवाद आया। यह मनोवादी मनोविज्ञान की चेतना पर व्यवहारवाद की जीत की भी झलक को भी दर्शाता है इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान की सकारात्मक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की पहचान भौतिक विज्ञानों की तरह ही आगे बढ़ी है।

प्रत्येक नवव्यवहारवादी का अपना अलग दृष्टिकोण था, हालांकि वे संप्रदाय के कई बिन्दुओं पर जिन्हें उन्होंने आँकड़ों को व्याख्या करने को डिजाइन किया था, पर सहमत थे।

- 1) मनोविज्ञान के अध्ययन का मूल सीखना है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि सीखना प्राथमिक तंत्र है जिसके द्वारा प्राणी बदलते वातावरण में समायोजित होते हैं, जिससे इसकी महत्ता उच्च हो जाती है।
- 2) अधिकांश व्यवहार, चाहे वे कितने भी जटिल क्यों न हों, अनुबन्धन के नियमों द्वारा सीखे जा सकते हैं।
- 3) यदि सिद्धान्त का प्रयोग किया जाए, तो तार्किक सकारात्मकता की माँग के तरीकों से किया जाना चाहिए।
- 4) मनोविज्ञान को संक्रियावाद के सिद्धान्त को अपनाना चाहिए।
- 5) गैर मानवीय पशुओं को शोध प्रयोज्य के रूप में प्रयोग करना चाहिए। इसका कारण है कि पहला उपयुक्त चर को गैर मानवीय पशुओं पर नियन्त्रण करना, मनोविज्ञान प्रयोज्य की तुलना में आसान है, दूसरा प्रत्यक्षज्ञानात्मक और सीखने की प्रक्रियाएँ जो गैर मानवीय पशुओं में होती हैं, उन प्रक्रियाओं से जो मानवों में होती हैं, सिर्फ अवस्था में अलग होती है। गैर मानवीय पशुओं पर एकत्र जानकारी को, इसलिए मानवों पर भी सामान्यीकृत किया जा सकता है।

नवव्यवहारवादियों में मुख्य रूप से एडविन गुथरी, क्लार्क हल, एडवार्ड टॉलमैन और बी. एफ. स्किनर का काम शामिल है।

9.3.1 एडविन गुथरी

एडविन गुथरी के उपागम को *समीप्यता का सिद्धान्त* कहा जाता है। गुथरी ने वाट्सन की तरह ही पर्यावरण उद्दीपकों द्वारा उत्पन्न ग्रंथिय प्रतिक्रियाएँ और माँसपेशियों की गतियों से युक्त प्रेक्षणीय व्यवहार के मनोविज्ञान की वकालत की। उनके साहचर्य के सिद्धान्त सीखने के लिए एक एकल सिद्धान्त पर जोर दिया, जो पावलव और थार्नडाइक की परम्परा में था। थार्नडाइक के पुनर्बलन सिद्धान्त जो प्रभाव के नियम पर आधारित था को गुथरी ने स्वीकार नहीं किया था, लेकिन उन्होंने थार्नडाइक सहचार्यात्मक परिवर्तन की द्वितीयक धारणा को सीखने का आधार माना। एकल सिद्धान्त की समीप्यता सीखने का आधार है, गुथरी के सहचार्यात्मक सिद्धान्त की कुंजी है। गुथरी के द्वारा व्यवहार को प्रतिक्रियाओं के बजाय गति के संदर्भ में देखा गया था।



चित्र 9.1 : एडविन गुथरी
स्रोत :

www.behavioranalysisishistory.pbworks.com

बॉक्स 9.1 : एडविन गुथरी

एडविन गुथरी का सबसे प्रभावशाली काम “*द साइकोलॉजी ऑफ लर्निंग*” है। यह पहली बार 1935 में प्रकाशित हुआ और बाद में इसमें 1952 में संशोधन किया गया। उनका लिखने का तरीका गैर तकनीकी विनोदी और उपाख्यानों से भरा हुआ था। उन्होंने महसूस किया कि वैज्ञानिक सिद्धान्त, इस तरीके से लिखे जाने चाहिए कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी इसे आसानी से समझ सकें। गुथरी का सबसे प्रभावशाली प्रयोगात्मक कार्य जार्ज हारटोन के साथ मिलकर लिखा गया था। इसमें उन्होंने बिल्लीयों के समस्या समाधान व्यवहार का अध्ययन किया था। यह 1952 में *केट्स इन पजल बाक्स* नाम से प्रकाशित हुआ था।

यद्यपि गुथरी खुद व्यवहारवादी थे, फिर भी अन्य प्रभावशाली व्यवहारवादियों जैसे वाट्सन, हल, टॉलमैन और स्किनर आदि से उनकी असहमति थी। उन्होंने महसूस किया कि उनके सिद्धान्त उतने पारंगत नहीं थे, जितना कि होना चाहिए और उनका दृष्टिकोण बहुत व्यक्तिपरक है।

इस अन्तर से, उनका मतलब था कि गति बड़ी प्रतिक्रियाओं इकाइयों या व्यवहारिक क्रियाओं के घटक होते हैं। तदनुसार कुशल व्यवहार को गति ‘जो बड़े तौर पर माँसपेशीय होती हैं, की छोटी इकाई से बनी एक सकल प्रतिक्रिया की तरह देखा जाता है। इसी तरह उद्दीपक को और तत्वों से मिलाकर बनी जटिल परिस्थिति के रूप में देखा जाता है।

समान उद्दीपक वाले तत्वों की उपस्थिति को देखते हुए, गुथरी के समीप्यता के सिद्धान्त में कहा गया है कि जब उद्दीपक तत्वों का एक संयोजन गति के साथ होता है, तो गति के अनुक्रम की पुनरावृत्ति होगी। गुथरी ने सुझाव दिया कि सीखना एक पैटर्न या श्रृंखला है, जो पर्यावरण और आन्तरिक उद्दीपक संकेतों दोनों द्वारा हासिल किया जाता है।

पुनर्बलन की भूमिका की इसमें अनूठी व्याख्या की गयी क्योंकि गुथरी के सहचार्य के विचार उद्दीपक और प्रतिक्रिया की समीप्यता पर निर्भर करते हैं। गुथरी का मानना था कि सीखना एक प्रयास में होता है। इसका मतलब यह है कि उद्दीपक और अनुक्रिया

के बीच सन्निहित सम्बन्ध तुरन्त सहचार्यात्मक बन्धन पूरी ताकत के साथ उत्पन्न होता है। एक पुनर्बलित पुरस्कार या दण्ड का प्रभाव, उद्दीपक स्थिति पर पुनर्निवेश के लिए काम करता है, जो स्थिति को बदल देता है और बदली हुई उद्दीपक स्थिति और गति के बीच नये बन्धन की आवश्यकता होती है। इसलिए, पुनर्बलन उद्दीपक के संदर्भ में एक बदलाव लाता है, जिसमें गति की आवश्यकता होती है। इसके साथ सीखना व्यवहार की क्रिया आगे बढ़ता है।

विलोपन या विस्मरण नये साहचर्य में हस्तक्षेप के कारण होता है, न कि पुनर्बलन की कमी से उद्दीपक प्रतिक्रिया बन्धन में देरी होने के कारण होता है। इसी तरह, अभ्यास के प्रभाव को उद्दीपक साहचर्य गति को प्रभावित करने के बजाय, सकल व्यवहारात्मक क्रियाओं के अन्दर स्थापित सम्बन्ध समन्वय में सुधार के रूप में देखा गया था। तदनुसार गुथरी ने प्रणोद को व्यवहार की क्रियाओं के उर्जक के रूप में न कि प्रेरणात्मक ऐजेंट के कारण के रूप में माना। इसके बाद के व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक गुथरी की दलीलों और व्याख्याओं से प्रभावित थे। एफ. डी. शेफील्ड (F. D. Sheffield) ने गुथरी के विचारों का बचाव किया और इसे सकारात्मक पुनर्बलन को संशोधित व्यवहार के साधन के रूप में प्रयोग को शामिल कर इसे विस्तारित किया। इसी प्रकार, गुथरी के लेखन के कई पहलू **बार्जीनिया वोएक्स** द्वारा सावधानी पूर्वक डिजाइन किये गये प्रयोगों द्वारा प्रदर्शित किये गये थे।

गुथरी के दृष्टिकोण के खिलाफ प्रमुख आलोचना यह थी कि, यह अधूरा है और यह जटिल सीखना और स्मृति की समस्याओं में एक व्यापक तरीके से नहीं निपटता है। इस आलोचना के बावजूद गुथरी के जटिल प्रणालियों को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए सराहना की गई।

9.3.2 क्लार्क हल

क्लार्क हल के क्रमबद्ध उपागम को प्रकल्पित निगमनात्मक सिद्धान्त कहा गया। यह सिद्धान्ती द्वारा अधीन व्यवहार सम्बन्धी मुद्दों के एक व्यापक उपचार के रूप में करीब आया। हल के उपागम का केन्द्रीय विचार आदत निर्माण है, जो प्रभावी अनुकूलन के लिए अनुभवों का संचय है। हल का वैज्ञानिक दृष्टिकोण वास्तव में व्यवस्थित था। उन्होंने शोध को निर्देशित करने के लिए प्राकल्पित निगमनात्मक संरचना की वकालत की क्योंकि उन्होंने अवलोकन और प्रयोग के महत्व को पहचाना। यूविलडियन ज्यार्मिस के दृष्टिकोण को इन्होंने प्रयोग किया, इस तकनीक में एक व्यवहार सिद्धान्त या सूत्रीकरण के पहले अभिगृहीत से अनुमान लगाया जाता है और फिर कठोरता से उसका परीक्षण किया जाता है। एक विश्वास को एक सफल परीक्षण द्वारा समर्थन दिया जाता है, जिससे अभिगृहीत का निर्माण किया जाता है, और असफल होने पर अभिगृहीत का संशोधन किया जाता है। तार्किक अनुक्रम मानते हुए हल का उपागम सकारात्मक और अनुभवजन्य निरूपण के माध्यम से सत्यापित किया गया था।

बॉक्स 9.2 : क्लार्क हल

क्लार्क हल उस समय के किसी अन्य मनोवैज्ञानिक की तरह वैज्ञानिक पद्धति की समस्याओं के लिए समर्पित थे। वह गणित और औपचारिक तर्क में अच्छी तरह पारंपरगत थे और इसे उन्होंने मनोविज्ञान में लागू किया, उनसे पहले ऐसा किसी ने नहीं किया था। व्यवहारवाद का उनका रूप वाट्सन की तुलना में अधिक जटिल और



चित्र 9.2 : क्लार्क हल
स्रोत :

www.verywellmind.com

उलझा हुआ कहा गया। वे और उनके अनुयायी 1940 से 1960 के दशक तक अमेरिकी मनोविज्ञान पर हावी रहे।

1936 में हल को अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन के 44वें अध्यक्ष के रूप में चुना गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में, उद्देश्यपूर्ण व्यवहार की व्याख्या में यंत्रवत और नियमपूर्ण सिद्धान्त के प्रयोग के अपने लक्ष्य के बारे में बात की। मनोविज्ञान के संकाय पर उनका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने पूरे शोध को प्रभावित किया और मनोवैज्ञानिकों की एक बड़ी संख्या को प्रभावित किया, जो मनोविज्ञान में उनके कद को दर्शाता है। वस्तुनिष्ठ व्यवहारवादी दृष्टिकोण के विचार का विस्तार और प्रचार किया।

आज मशीन लर्निंग सीखने में उनकी रुचि के आधार पर, हल को कृत्रिम बुद्धि के अग्रदूत के रूप में देखा जाता है। हल ने मनुष्यों को उन मशीन के रूप में देखा जो सीख सकते हैं और सोच सकते हैं। इसलिए सीखने के साथ मशीनों की तुलना और अलग करना उनके दृष्टिकोण के साथ संगत था।

हल का दृष्टिकोण गणितीय भविष्यवाणियों पर बहुत अधिक निर्भर था और जटिल था। जैसे ही उनके प्रयोगात्मक परीक्षणों ने समय के साथ आगे बढ़े उन्होंने उनमें विस्तृत संशोधन किया। हल के सीखने के सिद्धान्त को प्रेरक स्थिति से उत्पन्न होने वाले प्रणोद की कमी के रूप में परिभाषित किया गया है, यह अनिवार्य रूप से पुनर्बलन की आवश्यकता पर केन्द्रित है। एक समस्थिति मॉडल प्रणोद बलों से संतुलन प्राप्त करता है, इस संदर्भ को प्राणी के व्यवहार को समझने के लिए प्रयोग किया जाता है।

हल के विश्लेषण का मूल विचार मध्यवर्ती चर है। मध्यवर्ती चर अनिरीक्षणीय तत्व है, जो मनोवैज्ञानिक अवलोकनीय व्यवहार को नियोजित करने में करते हैं। इस प्रकार एक शुद्ध व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य से हल ने वाटसन के परिधीय (S-R) घटनाओं के संदर्भ में, केन्द्रीय जीवकारक, उद्दीपक-प्राणी, अनुक्रिया (S-O-R) मध्यवर्ती चरों के विचार की अवधारणा को विस्तारित किया। यह वुडवर्थ था जिसने 1918 में व्यवहार मॉडल के इस विस्तार का सुझाव दिया था, लेकिन वो था जिसने जैविक चरों को व्यवस्थित रूप से प्रयोग किया।

हल के सिद्धान्त में, आदत शक्ति सीखने के लिए (Habit Strength, sH_R) मुख्य मध्यवर्ती चर है। यह दो कारकों के साहचर्य पर निर्भर करता है। समीप्यता पहला सिद्धान्त है, जिसका अर्थ है कि उद्दीपक और पुनर्बलन के बीच निकट सामयिक सम्बन्ध है। पुनर्बलन दूसरा सिद्धान्त है, जिसे इसके प्राथमिक रूप से प्रणोद में कमी के रूप में परिभाषित किया गया है। द्वितीयक पुनर्बलन भी है, जो संकेत है और प्राथमिक पुनर्बलन के साथ मजबूती से जुड़कर पुनर्बलन के गुणों को लेते हैं। उदाहरण के लिए, यदि प्रकाश की उपस्थिति एक भूखे चूहे को सही प्रतिक्रियाओं के लिए बार-बार भोजन दिया जाता है, तो प्रकाश में भोजन की कुछ पुरस्कार की विशेषताएँ आ जाती हैं। मूल प्रक्रिया जिसमें सीखना होता है जैसे पुनर्बलन की स्थिति में उद्दीपक और प्रतिक्रिया की समीप्यता को प्राप्त करने के लिए हल ने पावलव के अनुबन्धन को थर्नडाइक के प्रभाव के नियम के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया। आदत शक्ति (sH_R) और प्रणोद (D) परस्पर क्रिया करती है, उत्पन्न करने के लिए जिसे हल ने प्रतिक्रिया क्षमता की तरह संदर्भित किया है, प्रतिक्रिया क्षमता को "उद्दीपक के प्रभाव में कुछ प्रतिक्रिया उत्पन्न करने की प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित

किया गया है sE_R एक सैद्धांतिक अवधारणा है, जो अवलोकन योग्य प्रतिक्रियाओं का पर्याय नहीं है। यह sH_R और D का गुणनफल है।

$$sE_R = sH_R \times D$$

हल के मध्यवर्ती चर, इसलिए मात्रात्मक सम्बन्धों को परिभाषित करने के प्रयास के साथ-साथ गुणात्मक अवधारणा का प्रतिनिधित्व भी करते हैं।

उदाहरण के लिए, पूर्वांकन अभिव्यक्ति के आधार पर भूखे अनुभवहीन चूहे से थोड़ा निष्पादन देखा जा सकता है। ऐसे मामलों में, प्रणोद अधिक होगी और आदत में ताकत नहीं होगी, ये प्रतिक्रिया की कम प्रवृत्ति को दर्शाता है।

इसी तरह एक चूहा जिसमें बार दबाकर पुरस्कार स्वरूप भोजन प्राप्त करने की प्रतिक्रिया अच्छी तरह स्थापित है। निष्पादन नहीं करेगा, यदि वह भूखा नहीं है, सीखने और निष्पादन के बीच अन्तर का यह कारण है। इस प्रकार के मामलों में आदत शक्ति अधिक होती है लेकिन प्रणोद कम होती है, जो प्रतिक्रिया क्षमता की थोड़ी उम्मीद पैदा करता है।

मध्यवर्ती चर जो निष्पादन में मध्यस्था करते हैं के ढाँचे को पूरा करने के लिए, हल ने नकारात्मक अवरोधात्मक कारकों (I), जो निष्पादन के उप उत्पाद के रूप में थकान और ऊब से उत्पन्न होते हैं, को शामिल किया।

हल ने उद्दीपक मात्रा (V) जैसे कि एक मन्द या उच्चे स्वर का (CS) अनुबन्धित उद्दीपक पुनर्बलन की मात्रा (K) जैसे प्रत्येक सही प्रतिक्रिया पर 1 या 4 खाने की गोलियां और व्यक्ति विषय के लिए दोलन झणिक देहली (sO_R)। ये सभी मध्यवर्ती चर इस प्रकार से सम्बन्धित हैं।

$$sE_R = sH_R \times D + V + K - I - sO_R$$

क्योंकि हल के सिद्धान्त ने इस सारांश का स्पष्टीकरण को विकसित किया था, इसलिए इसे अधिक शुद्ध घटकों में व्यक्त किया गया था। हल का पूरा विस्तृत संरचना को अनुकूली व्यवहार के आर्जित करने पर सभी संभावित प्रभावों की मात्रा निर्धारित करने के लिए लागू किया गया था। उनकी अवधारणाओं को प्रयोगशाला परीक्षण द्वारा समर्थित किया गया है, जो बड़े पैमाने पर चूहों पर किये गये थे। इस विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण ने माना कि, व्यवहार के अधिक जटिल रूपों को इन मध्यवर्ती चरों से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रयोगात्मक परीक्षणों द्वारा समर्थन के बावजूद हल के सिद्धान्त को सम्पूर्ण रूप से बहुत सफल नहीं पाया गया। हल की प्रणाली में अनुभवजन्य विसंगतियां पाई गयीं। सूझ द्वारा और व्यवहार का शीघ्र अर्जन इसमें सम्भव नहीं था। हल ने परीक्षण के दौरान अभ्यास के महत्व पर जोर दिया, जिससे अर्जन के दौरान निरन्तर लेकिन क्रमिक सुधार उत्पन्न होता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मध्यवर्ती चरों के बीच धारणात्मक सम्बन्ध की मात्रा निर्धारित करने में विफल रहा था। हल के विचारों को असामयिक भी पाया गया। उनकी प्रणाली को अक्सर एक निश्चित, कठोर संरचना के रूप में माना जाता है, जो शायद परिवर्तनशील मानव और पशु व्यवहार के लिए उपयुक्त नहीं है। फिर भी हल के मॉडल को शोध के लिए असाध्य पाया गया है।

सीखने का वर्णन करने के लिए समकालीन शब्दों के जाल का अधिकांश भाग हल के कारण ही था।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) गुथरी ने गतियों और प्रतिक्रियाओं में किस प्रकार अन्तर किया।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) हल ने वाट्सन की व्यवहार की अवधारणा को कैसे विस्तारित किया।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.3.3 एडवर्ड टोलमैन (Edward Tolman)

एडवर्ड टोलमैन के उपागम को संज्ञानात्मक व्यवहारवाद कहा जाता है। उनका सिद्धान्त वाट्सन के व्यवहारवाद के विचार को गुथरी और हल से अधिक आगे विस्तारित किया। अपने मुख्य काम, "परपसिव विहेवियर इन एनिमल एड मैन्" (1932) में आणविक के विरुद्ध, टोलमैन ने व्यवहार के एक विचार का प्रस्ताव रखा जो कि मोलर था। उनके अनुसार, मोलर व्यवहार एक एकीकृत और पूर्ण क्रिया है। जो मनोविज्ञान के लिए उचित इकाई प्रदान करता है। उन्होंने सुझाव दिया कि अन्तर्निहित अणविक तत्व जैसे तंत्रिका, पेशीय या ग्रन्थिय प्रक्रियाएँ पर्याप्त अच्छी नहीं हैं, जो मोलर क्रिया के रूप में मानी जाती हैं।

ऐसा करने में टोलमैन को मनोविज्ञान में उच्च संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अध्ययन को शामिल करके वाट्सन के व्यवहारवाद से दूर प्रस्थान करते देखा जा सकता है। उनका मोलर व्यवहार के बारे में उनका दृष्टिकोण न्यूनतावादी नहीं था। टोलमैन ने तर्क दिया कि आणविक घटकों पर आधारित व्याख्याओं एक न्यूनतावादी दृष्टिकोण को अनुसरण करती हैं, जो अपर्याप्त बन जाता है, क्योंकि इससे शुद्ध मनोवैज्ञानिक स्तर की हानि होती है, इन्होंने कहा कि, आणविक तत्वों पर आधारित स्पष्टीकरण पर्याप्त

नहीं है। इसलिए टॉलमैन के अनुसार, मोलर व्यवहार आणविक तत्वों के योग से अधिक है।

बॉक्स 9.3 : एडवर्ड टोलमैन

एडवर्ड टोलमैन को आधुनिक संज्ञानात्मक, मनोविज्ञान का अग्रदूत माना जाता है। उनका सीखने की समस्या पर काम और उनका मध्यवर्ती चर का संप्रत्यय का मनोविज्ञान की शाखा पर गहरा प्रभाव पड़ा। टोलमैन ने मध्यवर्ती चरों का प्रयोग अनिरीक्षणीय आन्तरिक स्थिति की तरह परिभाषित करने के लिए किया। ऐसा कर उन्होंने आन्तरिक स्थितियों को वैज्ञानिक अध्ययन में सम्मान प्राप्त करवाया।

टोलमैन का मानना था कि जीव जानकारी का सक्रिय संसाधक है, जो समकालीन संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अनुसार हैं। टोलमैन का सिद्धान्त, सूचना संसाधन सिद्धान्त और बकुंश के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त का अग्रदूत है। टॉलमैन व्यवहार आनुवंशिकी के भी अग्रदूत थे, जो आज के समय में काफी लोकप्रिय है, 1937 में, टोलमैन को अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन के 45वें अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। इसके अतिरिक्त उन्हें अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन का विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार भी मिला।



चित्र 9.3 : एडवर्ड टोलमैन
स्रोत :
www.consciousnessandculture.com

टोलमैन, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के कई बिन्दुओं पर बहुत निर्भर करते हैं। उन्होंने गेस्टाल्ट शब्द का उपयोग सम्पूर्ण सूझपूर्ण सीखने के अनुभवों की व्याख्या करने के लिए किया इसके अलावा उनकी मोलर व्यवहार की अवधारणा और मानसिक समरूपता को अपनाने की उनकी व्याख्या को सीधे गेस्टाल्ट मनोविज्ञान से लिया गया है। उन्होंने मानसिक समरूपता पद का प्रयोग सीखने के केन्द्रीय उत्पाद का वर्णन, क्षेत्र मानचित्र के अर्जन के संदर्भ में किया, जो मस्तिष्क में सीखे गये पर्यावरण के संज्ञानात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में मौजूद होते हैं। टोलमैन का अधिग्रहण के नियम मुख्य रूप से अभ्यास पर केन्द्रित है जो चिन्ह गेस्टाल्ट या अपेक्षाओं का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए, अपने चूहों के साथ भूलभैलया सीखने के प्रयोगों में, टोलमैन ने 'स्थान सीखने' के अधिग्रहण का वर्णन किया है, जिसे उन्होंने सम्बन्धों के अधिग्रहण या विषय में संज्ञानात्मक मानचित्र की तरह अनुमान लगाया। इसी तरह उन्होंने पुनर्बलन की प्रत्याक्षा का प्रदर्शन किया, जब उन्होंने पाया कि जिन चूहों को एक ही तरह के पुरस्कार के लिए प्रशिक्षित किया गया था, उन्हें ज्यादा आकर्षक भोजन की तरफ जाते हुए देखा। अंत में उन्होंने चूहों में अत्यन्त सीखना के विचार को प्रदर्शन किया, जो बताता है कि पुनर्बलन की गुणवत्ता के आधार पर निष्पादन के स्तर पर अलग-अलग प्रभाव डाले जा सकते हैं। इन सभी प्रयोगों में टोलमैन ने स्पष्ट रूप से दिखाया कि, जीवों को केन्द्रीय मध्यस्थ प्रक्रियाओं द्वारा निर्देशित किया जाता है, जो वातावरण से परे होते हैं। ऐसा करने में, उन्होंने संज्ञानात्मक व्याख्याओं का प्रयोग मध्यवर्ती चरों के रूप में किया है।

टोलमैन का सैद्धांतिक अभिविन्यास हल की तुलना में बहुत व्यवस्थित नहीं किया गया है। टोलमैन की संज्ञानात्मक सीखने की केन्द्रीय मध्यस्थता की व्याख्या ये अस्पष्ट पायी गयी। इन आलोचनाओं के बावजूद टोलमैन को व्यवहारवाद के एक परिप्रेक्ष्य का लाने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने व्यवहारवाद को वाट्सन के न्यूनतावादी, आणविक दृष्टिकोण से अलग जाने में सक्षम बनाया। इसके अलावा निष्पादन की उनकी खोज, सीखने से अलग है, जिसे उन्होंने बार-बार प्रदर्शित किया है, या दर्शाता

है कि सीखना कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे उद्दीपक-प्रतिक्रिया पुनर्बलन के तत्वों तक सीमित किया जा सकता है, वह मोलर व्यवहार की आवश्यक को दृढ़ता से स्थापित करने में सफल रहे, और इसमें अनुसंधान के महान काम को प्रेरित किया। हल की तरह टोलमैन के बड़ी संख्या में अनुयायी या व्यवस्थित विचारों का सम्प्रदाय नहीं था, लेकिन उन्होंने निश्चित रूप से संज्ञानात्मक सीखने के शोध विषय का अनुमान लगाया, जो समकालीन मनोविज्ञान में मुख्य है।

9.3.4 बर्हस फ्रेड्रिक स्किनर

बी. एफ. स्किनर ने 1950 के दशक में अपने शोधपत्र *आर थ्योरीस ऑफ लर्निंग नेसेसेरी?*। यह शोधपत्र व्यवहारवाद के सिद्धांत निर्माण चरण को अंत कहलाया। स्किनर ने अनुभव किया कि सिद्धांत निर्माण में कई सीमाएँ थीं। उन्होंने महसूस किया कि सिद्धांत पूर्व धारणा पर आधारित होती है। जो व्यवहारात्मक विज्ञानों संदेहयुक्त और तोड़ मरोड़ कर उपस्थित करती है। सिद्धान्तों के बजाय स्किनर ने वह व्यवहार बाद की प्रणाली बतायी जो आंकड़े द्वारा निर्देशित हो। स्किनर के लिए, सिद्धान्त का प्रयोग सिर्फ वर्णनात्मक सामान्यीकरण के बनाने में किया जाना चाहिए, जो तथ्यों पर आधारित एक सकारात्मक दृष्टिकोण का उपयोग कर बने हैं।

स्किनर की उपागम में पद्धति पर अधिक जोर दिया गया। उन्होंने परिधीय घटनाओं के सम्बन्ध में व्यवहार के अध्ययन में वापसी का प्रचार किया। वह इस प्रकार व्याख्या की केन्द्रीय मध्यस्था एंजेसियों, चाहे वे संज्ञानात्मक या शारीरिक थी, के खिलाफ थे। केन्द्रीय मध्यस्था एंजेसियों के बजाय स्किनर ने दृढ़ता से माना कि व्यवहार केवल पर्यावरण द्वारा निर्धारित किया जाता है। कई बार इस वजह से स्किनर के दृष्टिकोण को कट्टरपंथी व्यवहारवादी के रूप में माना गया। पर्यावरणीय पर दृढ़ता से जोर देने के कारण, स्किनर मानते थे कि यदि वातावरण को नियंत्रित किया जाए, तो व्यवहार की भी नियंत्रित किया जा सकता है। इसी कारण से उन्होंने एकल प्रयोज्य अध्ययन को मान्यता दी, उन्होंने विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में प्रयोज्य की तुलना की। वह मानते थे कि जीव पर्यावरण में अन्तर के कारण अलग होता है न कि उनमें निहित व्यक्तिगत अन्तर के कारण।



चित्र 9.4 : बी. एफ. स्किनर
स्रोत : www.britannica.com

बॉक्स 9.4 : बी. एफ. स्किनर

बी. एफ. स्किनर को कई दशकों तक सबसे प्रभावशाली मनोवैज्ञानिक माना जाता था। 1950 से 1980 तक स्किनर व्यवहारवाद से जुड़े प्रमुख व्यक्ति बने रहे। इस समय के दौरान, उन्होंने किसी दूसरे मनोवैज्ञानिक की तुलना में अमेरिकी मनोविज्ञान को अधिक आकार दिया। स्किनर का उपागम तार्किक सकारात्मकता के बजाय सकारात्मकता की कतार में अधिक था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, स्किनर के व्यवहारवाद ने न केवल अन्य संस्करणों को टक्कर दी, बल्कि उन सभी को पीछे छोड़ भी दिया।

स्किनर ने अपने पूरे जीवन में कई उपलब्धियां हासिल की। उन्होंने बड़ी संख्या में निष्ठावान और उत्साही अनुयायियों को आकर्षित किया। उन्होंने समाज के व्यवहार को नियंत्रण के लिए एक कार्यक्रम विकसित किया। व्यवहार संशोधन तकनीकों को बढ़ावा दिया और नवजात शिशुओं के लिए एक स्वचालित पालना का निर्माण किया। उनका उपन्यास, *वाल्डेन टू* इसके प्रकाशन के दशकों बाद भी लोकप्रिय रहा। 1958 में स्किनर को अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन द्वारा विशिष्ट वैज्ञानिक योगदान

पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी किताब “*बिगॉन्ड फ्रीडम, एंड डिग्निटी*” (Freedom and Dignity, 1971) एक राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ विक्रेता थी, जिसने उन्हें टेलीविजन बातचीत कार्यक्रम में, अपने विचारों पर चर्चा करने का अवसर दिया। उन्हें 1971 में टाइम्स मैगजीन के कवर पर भी चित्रित किया गया था। वह एक प्रतिरोध व्यक्ति से अधिक बन गये थे। उनका नाम आम जनता के लिए बहुत परिचित हो गया। साइकोलॉजी टुडे पत्रिका ने 1972 में उल्लेख किया कि स्किनर ने मनोविज्ञान में प्रोफेसर होने के साथ ही एक फिल्म स्टार के प्रतिष्ठित दर्जे को भी हासिल कर लिया था। यंत्रवत सिद्धान्त का सख्ती से पालन करने के बावजूद एक मानवतावादी थे, और उनका समग्र लक्ष्य सबके हित में था। यह स्पष्ट रूप से वास्तविक जीवन सिद्धांतों जैसे कि घरों, स्कूलों और अन्य संगठनों में व्यवहार को संशोधित करने के उनके प्रयासों से परिलक्षित होता था। उनका दृढ़ विश्वास था कि उनकी विधियाँ मनुष्यों को अनेक कष्टों से मुक्त कर सकती हैं, और वे चाहते थे कि उनका दृष्टिकोण अधिक व्यापक तरीके से लागू हो। व्यवहार परिवर्तन तकनीक के विकास में उनके प्रयासों लिए, जिनका उपयोग मानसिक रूप से मन्द लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए किया जाता था, के लिए स्किनर को 1971 में कैंनेडी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान के साथ सम्मानित किया गया। 1972 में अमेरिकन ह्यूमैनिस्ट एसोसिएशन द्वारा “वर्ष का मानवतावादी” का नाम दिया गया था। 1972, 1990 में, स्किनर को मनोविज्ञान में (*लाइफ टाइम*) आजीवन योगदान का पुरस्कार दिया गया। इसके ठीक 8 दिन बाद 86 साल की उम्र में स्किनर का निधन हो गया। स्किनर को श्रद्धांजलि के रूप में, अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट का नवम्बर 1992 का अंक पूरी तरह से उनके विचारों को समर्पित था।

स्किनर के शोध का आधार क्रियाप्रसूत व्यवहार का अध्ययन था। इससे उनका दृष्टिकोण पावलव से अलग बन गया जिन्होंने प्रतिवादी व्यवहार का अध्ययन किया, जब प्रतिक्रिया किसी विशिष्ट उद्दीपक के कारण होनी है, इस प्रकार के व्यवहार को प्रतिवादी व्यवहार की तरह संदर्भित किया जाता है। इसके विपरीत क्रियाप्रसूत व्यवहार वह है जो बिना किसी आभासी उद्दीपक से हो रहा होता है। क्रियाप्रसूत व्यवहार इस बारे में भी है कि जोन इसमें वातावरण में खुद क्रिया करता है। क्रियाप्रसूत व्यवहार का अध्ययन करने के लिए, स्किनर ने एक पर्यावरण चेम्बर (कक्ष) का निर्माण किया जिसमें पक्षी को चोंच या चूहे को बार दबाने में संलग्न कर सकते थे। स्किनर ने महसूस किया कि इस प्रकार के उपकरण का प्रयोग करने में पर्यावरण को नियंत्रित करने में आसानी होती है, प्रतिक्रियाओं की चल रही परिचालन दर को नियंत्रित किया जा सकता है।

स्किनर के अनुसार, सीखना उस समय होता है जब वातावरण से पुनर्बलन क्रियाप्रसूत व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। शुरु में वांछित क्रियाप्रसूत व्यवहार को सन्निकटन के पुनर्बलन द्वारा क्रियाप्रसूत प्रतिक्रिया को आकार दिया जाता है। क्रियाप्रसूत की संभावना को बढ़ाने के लिए, शुरु में परिशुद्ध क्रियाप्रसूत के बाद एक पुनर्बलित घटना प्रस्तुत की जाती है, उदाहरण के लिए, एक चूहे ने बार दबाने को एक क्रियाप्रसूत के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, यदि बार दबाने के कार्य के बाद भोजन प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए स्किनर के लिए, पुनर्बलन क्रियाप्रसूत दर में परिवर्तन की संभाव्यता है। इससे पुनर्बलन का स्किनर का विचार थोर्नडाइक और हल से अलग बनता है। थार्नडाइक ने पुनर्बलन की संतोषजनक या कष्टप्रद के सन्दर्भ

में देखा और हल पुनर्बलन को प्रणोद की कमी के रूप में देखा। स्किनर ने पुनर्बलन को परिभाषित करने के इन दोनों तरीकों से परहेज किया।

स्किनर ने दिखाया कि, पुनर्बलन के विशेष अनुभव से विशेष प्रतिक्रिया दर प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार उन्होंने पुनर्बलन की शक्ति का प्रदर्शन किया। इसी प्रकार, उन्होंने अनुबन्धन प्रक्रियाओं जैसे, सामान्यीकरण और विभेदीकरण को पुनर्बलन आकस्मिक रूपरेखा में बदला। उन्होंने क्रियात्मक नियन्त्रण के सिद्धान्तों को मौखिक व्यवहार के विचार के लिए भी विस्तारित किया। स्किनर ने अपने प्रयोगात्मक आँकड़ों को तर्क कि व्यवहार को नियंत्रित किया जा सकता है। तदनुसार, उन्होंने सुझाव दिया कि मनोवैज्ञानिकों को प्रभावी नियन्त्रण के मापदण्डों को परिभाषित करना चाहिए, जो सामाजिक निहितार्थ के लिए उपयुक्त है।

स्किनर की उनके दृष्टिकोण के लिए भारी आलोचना की गयी। व्यवहार के नियंत्रण का उनका विचार और उनकी मानव प्रकृति की यांत्रिक अवधारणा, बहुत सारे लोगों के लिए अच्छा नहीं रहा। हालांकि स्किनर ने महसूस किया मानवीय गतिविधि में व्यक्तिगत स्वतंत्रता या आत्मनिर्णय शामिल नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि, मानवतावादी विशेषताएँ जो मनुष्य के पास है, जो उन्हें अन्य प्रजातियों से अलग बनाती है, एक भ्रम है जो पूरे इतिहास में बनाया गया है। स्किनर के अनुसार, सच्चे मानव का अर्थ नियंत्रण में रहना है, समय के साथ स्वयं के लाभ के लिए पर्यावरण का प्रयोग करना है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) टोलमैन का दृष्टिकोण वाट्सन के व्यवहारवाद से किस प्रकार अलग है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्किनर के अनुसार, व्यवहार में वातावरण की भूमिका क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 वर्तमान में व्यवहारवाद

सभी नवव्यवहारवादी किसी न किसी तरीके से अधिक प्रभावशाली रहे। टोलमैन के संज्ञानात्मक व्यवहारवाद ने उद्देश्यपूर्ण व्यवहार और मानसिक निर्माणों पर जोर देकर समकालीन संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का अग्रदूत रहा है। हल के गणितीय समीकरणों

को प्राप्त करने पर जोर देने पर कई मनोवैज्ञानिकों को विभिन्न प्रकार के व्यवहारों के लिए गणितीय मॉडल विकसित करने को आगे बढ़ाया। सभी नवव्यवहारवादियों के बीच स्किनर का प्रभाव वास्तव में सबसे मजबूत रहा।

स्किनर के व्यवहारवाद की लोकप्रियता, इससे परिलक्षित होती है कि स्किनर के अनुयायियों ने अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन में एक अलग भाग की स्थापना की, जिसका सीधा सम्बन्ध स्किनर से है। अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन में भाग-25, व्यवहार का प्रयोगात्मक मूल्यांकन के रूप में जाना जाता है, सभी स्किनर के उपागम के बारे में है, इस भाग की उनकी अपनी खुद का पत्रिका इस क्षेत्र में सभी सम्बन्धित अनुसंधान प्रकाशित करने के लिए है।

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में प्रगति ने, हालांकि पिछले कुछ वर्षों में व्यवहारवाद के प्रभाव को कम किया है। समकालीन मनोविज्ञान ने संज्ञानात्मक पहलुओं पर बहुत जोर दिया, जो टोलमैन को छोड़कर, पूरी तरह से व्यवहारवाद के विचार के खिलाफ देखा जा सकता है। विकासवादी मनोविज्ञान ने अनुसंधान ने बहुत सा प्रमाण दिया है कि पशुओं अधिकार व्यवहार, जिसमें मानव का सामाजिक व्यवहार शामिल है, आनुवंशिक रूप से निर्धारित होता है। यह भी व्यवहारवादी विचार के विरुद्ध है।

इसके अतिरिक्त नवव्यवहारवादियों का सैद्धांतिक पदों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित करने का आग्रह समस्यात्मक पाया गया। कई तार्किक सकारात्मकवादियों ने सख्त संक्रियावाद के विचार को छोड़ दिया, क्योंकि यह बहुत अधिक प्रतिबंधात्मक प्रतीत होता था। संक्रियावाद पर जोर देने के कारण, अवधारणाएँ जो बहुत जटिल थीं, और अनुसंधान को नया रास्ता देने में उपयोगी थी, फिर भी वैज्ञानिक प्रगति में बाधा डालने के कारण उन्हें बाहर करना पड़ा।

फिर भी, व्यवहारवाद और नवव्यवहारवाद की एक विरासत है जो अभी भी मनोविज्ञान की शाखा पर हावी है। अधिकतर मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मनोविज्ञान का विषय प्रकट व्यवहार है। यहां तक कि संज्ञानात्मक और न्यूरोमनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं अलग-अलग विभिन्न परिस्थितियों में, प्रकट व्यवहार के संदर्भ में बड़े पैमाने पर जांच की जाती है। इस अर्थ में आज के समय में अधिकांश प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिक व्यवहारवादी है।

9.5 सारांश

अब जब हम इस इकाई के अंत में आ गये हैं, तो हम उन सभी बिन्दुओं को सूचीबद्ध करेंगे जो हमने अब तक सीखे हैं।

- व्यवहारवाद, मनोविज्ञान के एक सम्प्रदाय के रूप में विभिन्न चरणों से गुजरा और लगातार विकसित से रहा है। व्यवहारवाद के विकास को तीन अलग-अलग चरणों में पहचाना जा सकता है – वाट्सन का व्यवहारवाद (1913-1930) नवव्यवहारवाद (1930 से लगभग 1960), और नया नवव्यवहारवाद (1960 से लगभग 1990) तक।
- वाट्सन के व्यवहारवाद के बाद के चरण के दौरान दर्शनशास्त्र में एक प्रमुख विकास तार्किक सकारात्मकवाद के रूप में और विज्ञान में एक प्रमुख विकास

संक्रियावाद के रूप में हो रहा था। इन दोनों विकासों का व्यवहारवाद पर सीधा प्रभाव पड़ा, जिससे नवव्यवहारवाद का जन्म हुआ।

- जब व्यवहारवाद तार्किक सकारात्मकवाद के साथ जुड़ा तो इसके परिणामस्वरूप नवव्यवहारवाद आया। नवव्यवहारवाद में मुख्य रूप से एडविन गुथरी, क्लार्क हल, एडवर्ड टोलमैन और बी. एफ. स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों के कार्यों का योगदान है।
- गुथरी ने वाट्सन की तरह ही पर्यावरण सम्बन्धी उद्दीपकों से उत्पन्न हुए मॉसपेशियों की गतियों और ग्रंथियों की प्रतिक्रियाओं से मुक्त अवलोकन व्यवहार की वकालत की।
- एकल सिद्धान्त जो सामीप्यता है, सीखने की नींव गुथरी के साहचर्यवाद सिद्धान्त की कुंजी है।
- हल का सिद्धान्त, सामान्य सिद्धान्तों द्वारा शामिल व्यवहारात्मक मुद्दों के व्यापक उपचार के सबसे करीब आया, हल के दृष्टिकोण का केन्द्रीय विचार आदत निर्माण है, जो प्रभावी अनुकूलन के लिए अनुभवी का संचय है। उन्होंने शोध को निर्देशित करने के लिए प्राक्कल्पित निगमनात्मक संरचना की वकालत की क्योंकि उन्होंने निरीक्षण और प्रयोग के महत्व को पहचाना।
- हल के सिद्धान्त में, आदत शक्ति, (sH_R) सीखने में मुख्य मध्यवर्ती चर है। मूल प्रक्रिया को प्राप्त करने के लिए, जिसमें पुनर्बलन की स्थिति में उद्दीपक और अनुक्रिया की सामीप्यता के कारण सीखना होता है, हल ने थार्नडाइक के प्रभाव के नियम के साथ पावलाव के अनुबंधन का जोड़ने की कोशिश की।
- टोलमैन के सिद्धान्त ने वाट्सन के व्यवहारवाद के विचार को गुथरी और हल से ज्यादा विस्तारित किया। टोलमैन ने व्यवहार के एक विचार का प्रस्ताव रखा जो कि मोलर या आणविक के विपरीत था। उन्होंने गेस्टाल्ट शब्द का उपयोग समग्र सूझपूर्ण सीखने के अनुभवों की व्याख्या करने के लिए किया। हालमैन का अधिग्रहण का नियम मुख्य रूप से अभ्यास पर, जोर गेस्टाल्ट के चिन्हों या अपेक्षाओं का निर्माण पर केन्द्रित है।
- टोलमैन ने संज्ञानात्मक सीखना के अनुसंधान विषय का अनुमान लगाया, जो समकालीन मनोविज्ञान में प्रमुख है।
- बी. एफ. स्किनर ने 1950 में अपना शोधपत्र "आर थयोरीस ऑफ लर्निंग नेसेसरी" प्रकाशित किया। इस शोधपत्र को व्यवहारवाद के सिद्धान्त निर्माण के चरण का अंत कहा जाता है। वातावरणीय निर्धारकता पर उनके मजबूत जोर के कारण, स्किनर का मानना था कि, यदि पर्यावरण को नियंत्रित किया जाये तो व्यवहार को भी नियंत्रित किया जा सकता है।
- स्किनर का मानना था कि पर्यावरण में अन्तर होने के कारण जीव अलग-अलग होते हैं न कि व्यक्तिगत अन्तर उनमें निहित होते हैं, क्रियाप्रसूत व्यवहार का अध्ययन स्किनर के शोध का आधार था। इसने उनकी दृष्टिकोण को पावलाव से अलग बनाया, जिन्होंने प्रतिक्रियात्मक व्यवहार का अध्ययन किया था। जब प्रतिक्रिया किसी विशेष उद्दीपक के कारण होती है, तब इसे प्रतिक्रियात्मक

व्यवहार कहा जाता है। इसकी तुलना में क्रियाप्रसूत व्यवहार वो है जो बिना किसी आभासी उद्दीपक के जारी रहता है।

- समकालीन मनोविज्ञान में संज्ञानात्मक पहलुओं पर बहुत अधिक जोर देता है, जो हालतों को छोड़कर व्यवहारवाद के पूरे विचार के खिलाफ प्रतीत होता है।
- विकासवादी मनोविज्ञान में अनुसंधान ने कई साक्ष्य दिये हैं कि पशुओं के व्यवहार, जिसमें मानव का सामाजिक व्यवहार भी शामिल है, अनुवंशिक रूप से निर्धारित होता है। यह भी पूरी तरह से व्यवहारवाद के विचार के खिलाफ है।

9.6 मुख्य शब्द

- तार्किक सकारात्मकवाद** : 1924 के आसपास वियना (वियना सर्कल) के दार्शनिकों के एक छोटे समूह द्वारा विकसित विज्ञान के दृष्टिकोण को दिया गया नाम है। काम्टे और मच के पुराने सकारात्मकवाद को इन दार्शनिकों द्वारा लिया गया और औपचारिक तर्क को कठोरता के साथ जोड़ा गया। उनके अनुसार, अमूर्त सैद्धांतिक पदों को केवल तभी अनुमति दी जानी चाहिए यदि उन्हें तार्किक रूप से अनुभवजन्य निरीक्षणों से बांधा जा सके।
- संक्रियात्मक परिभाषा** : अमूर्त सम्प्रत्यों को प्रक्रिया जो उस सम्प्रत्य का मापन करने के लिए प्रयोग की जाती है के संदर्भ में परिभाषित करना।
- संक्रियावाद** : सभी वैज्ञानिक पदों को संक्रियात्मक रूप से परिभाषित करने का आग्रह।
- भौतिकवाद** : विज्ञानों के बीच, जिसमें मनोविज्ञान भी शामिल है, के लिए एकीकरण और एक सामान्य शब्दावली की ओर बल देना है।
- सामीप्यता का नियम** : जब उद्दीपक तत्वों का एक संयोजन गति के साथ होता है, तो गति अनुक्रम की पुनरावृत्ति होगी। सीखना एक पैटर्न या श्रृंखला है, जो पर्यावरण और आंतरिक उद्दीपक संकेतों से प्राप्त होती है।
- प्राक्कल्पित निगमनात्मक** : यूक्लिडियन ज्यामिति के दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए, इस उपाय के व्यवहार सिद्धान्त या सूत्रीकरण का पहले तर्क से अभिग्रहित कर तत्पश्चात् कठोरता से जाँच की जाती है। परिणाम को सफलतापूर्वक परीक्षण से समर्थन दे कर अभिगृहीत में परिवर्तन किया जाता है।
- आदत निर्माण** : प्रभावपूर्ण अनुकूलन के लिए अनुभवों का संचयन।
- मध्यवर्ती चर** : मनोवैज्ञानिकों के द्वारा नियोजित अनिरीक्षणीय तत्व जो निरीक्षणीय व्यवहार के लिए जिम्मेदार होते हैं।
- आदत की शक्ति** : हल के सिद्धान्त में मुख्य मध्यवर्ती चर यह दो कारकों के साहचर्य पर निर्भर करता है। पहला सामीप्यता का सिद्धान्त, जिसका अर्थ है, उद्दीपक और पुनर्बलन के बीच एक निकट

सामयिक सम्बन्ध होना चाहिए। पुनर्बलन अपने आप में दूसरा सिद्धान्त है, इसके प्राथमिक रूप में प्रणोद की कमी की तरह परिभाषित किया जाता है। गौण पुनर्बलन भी होती है, प्राथमिक पुनर्बलन के साथ विश्वसनीयता से सहचारित संकेत और जिसमें पुनर्बलन की विशेषताएँ आ जाती हैं।

प्रतिक्रिया क्षमता : उद्दीपक के प्रभाव के तहत कुछ प्रतिक्रिया उत्पन्न करने की प्रवृत्ति।

मोलर व्यवहार : एक एकीकृत और पूर्ण क्रिया, जो मनोविज्ञान के लिए उचित इकाई प्रदान करती है, टोलमैन ने तर्क दिया कि न्यूनतावाद के परिणामस्वरूप मोलर स्तर पर दृढ़ रहने में विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक स्तर का हानि होता है। इसके अनुसार, आणविक तत्वों पर आधारित व्याख्याएँ पर्याप्त नहीं हैं। इसलिए टोलमैन के लिए मोलर व्यवहार आणविक तत्वों के योग से अधिक है।

सीखने का स्थान : संज्ञानात्मक मानचित्र भूलभैलया में सम्बन्ध का अधिग्रहण करना।

अव्यक्त सीखना : पुनर्बलन की गुणवत्ता के आधार पर, प्रदर्शन के स्तर पर विभिन्न प्रभाव डाले जा सकते हैं। वातावरणीय निर्धारित एकता वातावरण के द्वारा व्यवहार निर्धारित होता है।

पर्यावरण निर्धारण : व्यवहार द्वारा वातावरण निर्धारण।

संचालक व्यवहार : व्यवहार जो प्रतिवादी के विपरीत किसी भी स्पष्ट उत्तेजना के बिना चल रहा है। विशिष्ट उत्तेजनाएँ जहाँ प्राप्ति क्रियाओं से संबंधित हैं।

स्किनर का सुदृढ़ीकरण : प्रभाव डालने की दर में परिवर्तन की संभावना।

9.7 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) व्यवहारवाद के क्रमिक विकास के तीन चरण कौन से हैं?
- 2) तार्किक सकारात्मकवाद का मनोविज्ञान पर क्या प्रभाव पड़ा?
- 3) संक्रियावाद ने किन तरीकों से मनोविज्ञान को प्रभावित किया?
- 4) जिन विभिन्न बिन्दुओं पर नवव्यवहारवादियों ने सहमति व्यक्त की, उनका वर्णन कीजिए।
- 5) गुथरी के अनुसार, सीखने में सामीप्यता की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
- 6) हल के प्रतिक्रिया ढाँचे में, उपयोग किये गये विभिन्न मध्यवर्ती चरों का वर्णन कीजिए।

- 7) टालमैन ने अपने दृष्टिकोण में जिन संज्ञानात्मक घटकों को शामिल किया, उन्हें स्पष्ट कीजिए।
- 8) स्किनर ने सीखने का वर्णन करने में क्रियाप्रसूत व्यवहार के विचार का इस्तेमाल कैसे किया था।
- 9) स्किनर का पुनर्बलन का विचार थार्नडाइक और हल से कैसे अलग है?
- 10) समय के साथ व्यवहारवाद का प्रभाव क्यों कम हुआ है?

9.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*. Harlow: Pearson Education Ltd.

Glassman, W. E. & Hadad, M. (2009). *Approaches to Psychology*. London: McGraw-Hill Education.

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*. Wadsworth: Cengage Learning.

Marx, M. H. & Hillix, W. A. (1963). *Systems and Theories in Psychology*. New York: McGraw-Hill

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology*. Wadsworth: Thomson Learning, Inc

9.9 चित्रों के संदर्भ

Cherry, K. (2020). Psychologist Clark Hull Biography (1884 – 1952). <https://www.verywellmind.com/clark-hull-biography-1884-1952-2795504>

Editorial Team (2014). Cognitive Maps and Edward Chace Tolman. <https://consciousnessandculture.com/cognitive-maps-edward-chace-tolman/>

History of Behavior Analysis (n.d.) Guthrie, Edwin. <https://behavioranalysis.history.pbworks.com/w/page/36260764/Guthrie,%20Edwin>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). B. F. Skinner. <https://www.britannica.com/biography/B-F-Skinner>

9.10 ऑनलाइन संसाधन

B. F. Skinner Foundation (n.d.). Biographical Information. <https://www.bfskinner.org/archives/biographical-information/>

Hasok, C. (2019). Operationalism, The Stanford Encyclopaedia of Philosophy. <https://www.britannica.com/topic/logical-positivism>

Hogan, J. D. & Frishberg, N. (2015). Edward C. Tolman: Eminent Learning Theorist and Outspoken Speaker of Academic Freedom, The General

Psychologist <https://www.apadivisions.org/division-1/publications/newsletters/general/2015/04/tolman>

Landrum, E. (2013). Neobehaviorism. <https://www.youtube.com/watch?v=GaGBldE4LGM>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2015). Logical Positivism. <https://www.britannica.com/topic/logical-positivism>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). B. F. Skinner. <https://www.britannica.com/biography/B-F-Skinner>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Clark L. Hull. <https://www.britannica.com/biography/Clark-L-Hull>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Edward C. Tolman. <https://www.britannica.com/biography/Edward-C-Tolman>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Edwin Ray Guthrie. <https://www.britannica.com/biography/Edwin-Ray-Guthrie>



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 10 गेस्टाल्ट मनोविज्ञान*

संरचना

- 10.0 प्रस्तावना
- 10.1 पूर्ववर्ती कारक
- 10.2 गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के मूल सिद्धांत
 - 10.2.1 प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम
 - 10.2.2 चिन्तन
 - 10.2.3 सीखना
 - 10.2.4 स्मृति
 - 10.2.5 विकासात्मक सम्प्रत्य
 - 10.2.6 समकृतिकता
- 10.3 कर्ट लेविन और क्षेत्र सिद्धान्त
 - 10.3.1 लेविन का संदिशात्मक मनोविज्ञान
- 10.4 समूह गतिकी
- 10.5 गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आलोचनाएँ
- 10.6 सारांश
- 10.7 मुख्य शब्द
- 10.8 पुनरावलोकन प्रश्न
- 10.9 संदर्भ और पढ़ने के सुझाव
- 10.10 चित्रों के संदर्भ
- 10.11 ऑनलाइन संसाधन

सीखने का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न में सक्षम होंगे:

- गेस्टाल्ट मनोविज्ञान को जन्म देने वाले संदर्भ और बलों की व्याख्या करने में;
- विभिन्न सिद्धांतों की पहचानने में जिन्होंने गेस्टाल्ट प्रणाली को एक आधार बनाया; और
- कर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत के योगदान का वर्णन करने में।

10.0 प्रस्तावना

1912, के **मैक्स वर्दाइमर** आभासी गति पर अपने प्रयोगों को प्रकाशित किया, इसने एक नई अभिविन्यास के रूप में काम किया जिसे गेस्टाल्ट मनोविज्ञान कहा गया।

* ब्रशाली पाठक, शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

इसका नेतृत्व वर्दाइमर और उनके दो निकट सहयोगियों **वोल्फगैंग कोहलर** और **कर्ट कोपका** ने किया था।

‘गेस्टाल्ट’ शब्द का शब्दशः में अंग्रेजी अनुवाद नहीं है, और शब्द ‘आकार’ रूप, विन्यास, संरचना और ‘पैटर्न’ शब्दों का प्रयोग कार्यात्मक अनुवाद करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान वुन्ट के संरचनात्मक मनोविज्ञान और इसके प्राथमिक आयामों के प्रति विद्रोह के रूप में उभरा और इन्होंने अमेरिकी व्यवहारवाद की भी आलोचना की। यह इस विचार के विरुद्ध था कि, अनुभव के कुछ अंश और टुकड़ों से मिलाकर “सम्पूर्ण” का रूप बनाया जा सकता है। गेस्टाल्ट यह विश्वास करते थे कि यह कभी भी पूरा अनुभव नहीं हो सकता है, इस प्रकार, गेस्टाल्ट ने व्यक्त किया, कि मनोविज्ञान की एक प्रणाली को मनोवैज्ञानिक घटनाओं को वैचारिक रूप देकर संगठित, सुसंगत और एकीकृत घटना के रूप में समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब हम मुस्कराते हैं, तो या एक निश्चित तरीके से काम करने वाली मांसपेशियाँ नहीं होती हैं। व्यक्ति के आसपास क्या चल रहा है इस बात पर भी निर्भर करता है, या घटना के साथ सम्बन्धित होता है, फिर मस्तिष्क इसे संसाधित करता है, और मांसपेशियाँ एक निश्चित तरीके से मुस्कराने के लिए प्रतिक्रिया करती हैं।

गेस्टाल्टवादियों का मानना है कि एक तत्व अपनी पहचान खो देती है, यदि पूर्व-कल्पित ढाँचों से इसका विश्लेषण किया जाता है, यह व्यक्ति के अनुभवों की सीमा या घटना को शोधकर्ता के साँचे के अनुकूल बनाने के लिए सीमित नहीं करता है। इसके अनुसार, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का लक्ष्य मानसिक गतिविधियों के संगठन और इस प्रकार व्यक्ति-पर्यावरण की पारस्परिक क्रियाओं की सही प्रकृति का निर्धारण करना था (ब्रेनन और हौडे, 2017)।

10.1 पूर्ववर्ती कारक

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान पर प्रभाव डालने वाली कुछ बलों पर नीचे चर्चा की गयी है:

क) इमैन्जुअल कान्ट

कान्ट के अनुसार प्रत्यक्षीकरण को दो भागों में विभाजित करने के बाद विश्लेषण नहीं किया जा सकता, और या विशेष विचार गेस्टाल्ट सम्प्रदाय का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त बना। संगठन को एक चल रही प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में समझा गया है, और जिस तरह से हम आन्तरिक रूप से घटना का अनुभव करेंगे। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू जो गेस्टाल्टवादियों ने कान्ट के विचारों से लिया था, कि हमारी समय और स्थान का प्रत्यक्षीकरण की क्षमता सिर्फ सीखने पर निर्भर नहीं करती है बल्कि यह जन्मजात या मूल होती है।

ख) विलहम वुन्ट और जे. ए. स. मिल

वुन्ट और मिल दोनों ने ‘मनोरसायन’ की उनकी अवधारणा थी) माना कि कुछ नयी विशेषताएँ चेतना के दो या अधिक तत्वों के संयोजन से उत्पन्न हो सकती हैं, इस प्रकार, इन्होंने स्वीकारा की सम्पूर्णता और उसके हिस्सों के योग के बीच अन्तर हो सकता है। इस विचार का गेस्टाल्ट मनोविज्ञान पर सीधा प्रभाव पड़ा,

जिसका मानना था कि सम्पूर्ण की विशेषताएँ उसकी व्यक्तिगत विशेषताएँ से भिन्न हो सकती हैं।

ग) फ्रांज ब्रंटोनी और कार्ल स्टम्फ

ब्रंटोनी और स्टम्फ ने उस मनोविज्ञान पर आपत्ति जताई जिनमें तात्विक सामग्री का प्रयोग कर परिभाषित किया गया था। उनका मनोविज्ञान कुछ चरों पर नियन्त्रण करने वाली प्रायोगिक विधि नहीं माना, बल्कि यह घटना क्रिया विज्ञान और गेस्टाल्ट मनोविज्ञान दोनों के मनोविज्ञान के विषय के बारे में अलग-अलग विचार थे लेकिन ये दोनों जर्मनी में एक ही बौद्धिक बल के उत्पाद थे। दोनों सम्प्रदाय की नियंत्रित प्रयोगशाला विधियों के विश्लेषात्मक चरित्र के बारे में भी संदेह थे और इस प्रकार उन्हें एक सूत्रीकरण की तलाश थी जो जन्मजात संगठन और मन की क्रियाओं को स्वीकार करते थे।

घ) अर्नस्ट मैक

मैक ने दो प्रकार की संवेदनाओं पर चर्चा की स्थान प्रारूप और समय प्रारूप, जिन्हें उन्होंने समग्राकृति माना। हालांकि मैक का अनुभववाद गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों के लिए असहनीय था, लेकिन संवेदना पर उनके काम के लिए एक प्रेरणादायक स्रोत था। उन्होंने स्थान रूपों और समय रूपों को उनके तत्वों से स्वतंत्र माना। उदाहरण के लिए, यद्यपि एक धुन वैयक्तिक सुर (इसके तत्व) से बना होता, अपने सुरों से अलग होता है, और उसकी एक पहचान भी होती है। जब हम आगे किसी अलग धुन के लिए स्थानांतरित किया जाता है, तो वैयक्तिक सुर बदल जाते हैं लेकिन धुन वही रहती है।

ङ) गोटिंगन विश्वविद्यालय में प्रयोगशाला कार्य

गोटिंगन विश्वविद्यालय में प्रयोगशाला में किया जा रहा शोध कार्य ने एक प्रमुख पूर्ववर्ती बल के रूप में काम किया। मुलर का काम गेस्टाल्ट के घटनात्मक दृष्टिकोण के साथ मिलता जुलता था। वर्दाइमर, कोपका और कोहलर ने उनके कार्यों का समर्थन दिया और वे जेन्सच (Jaensch) (दृश्य प्रत्यक्षीकरण), काज (रंग का प्रत्यक्षीकरण) और रुबिन (Rubin) (आकृति-पृष्ठभूमि के प्रत्यक्षीकरण) काम से अत्यधिक प्रभावित थे, जो गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की नींव के लिए महत्वपूर्ण साबित हुए।

10.2 गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के मूल सिद्धांत

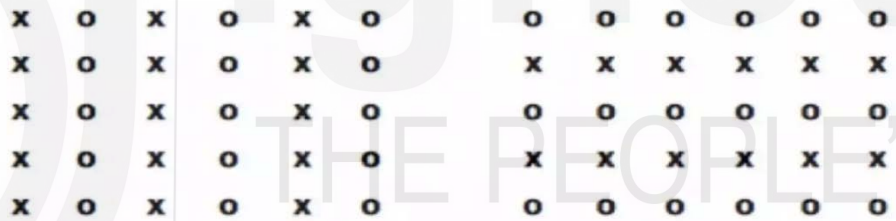
मेक्स वर्दाइमर ने फाई-घटना (Phi-phenomena) पर 1910 में प्रयोग करने प्रारम्भ किये, जो गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की औपचारिक शुरुआत थी। फाई-घटना या अभासी गति (जैसा कि इसे कभी-कभी कहा जाता है) को दो अलग रोशनियों का उपयोग करके उदाहरण दिया जा सकता है। जब दो स्थिर वस्तुओं (प्रकाश) को दृष्टिपटल पर (विभिन्न स्थानों पर) पलैश किया जाता है, और यदि यह एक दूसरे के बाद छोटे अंतराल में उपस्थित किया जाता है तो प्रयोज्य एक प्रकाश के एक पलैश से दूसरे तक एक दिशा में व्यापक गति से करता है। इस प्रकार, प्रयोज्य दो अलग तत्वों को नहीं देखता है, जो दो अलग प्रकाश है बल्कि एक सम्पूर्ण घटना, जो इसके तत्वों से मौलिक रूप से अलग है, को देखता है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों के लिए यह बहुत

स्पष्ट था कि व्यक्तिक तत्वों का क्रम से परीक्षण कभी भी सम्पूर्ण के अनुभव की व्याख्या नहीं कर सकता है। उन्होंने यह भी आंका कि हिस्सों को एक साथ रखकर भी पूर्ण नहीं बनाते हैं, जबकि सम्पूर्ण अपने हिस्सों में पहले से मौजूद है। कोहलर के अनुसार (1947), "गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का एक मुख्य कार्य सम्पूर्ण के किसी भी काल्पनिक हिस्से के बजाय वास्तविक को दर्शाना है" (पृष्ठ-168) यह दर्शाता है कि केवल व्यक्तिगत और पृथक हिस्सों पर ध्यान देना काल्पनिक हो सकता है।

10.2.1 प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम

वर्दाइमर ने (1923/1938) पाया कि, गेस्टाल्ट के मूल सिद्धान्त विभिन्न बौद्धिक और संवेदी क्षेत्रों में सही बने रहे। हम जो कुछ भी करते हैं, हम हमारी दुनिया को एकीकृत रूप में देखते हैं और संगठन पहले ही हमारे अनुभव में होता है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने कुछ सिद्धान्तों को व्यक्त किया, जो प्रत्यक्षणात्मक 'सम्पूर्ण' के मूल संगठन को बताने हैं। इन सिद्धान्तों को मूल संगठन के नियम भी कहा जाता है, इस समझ के कारण कि ये मूल और प्राकृतिक थे। कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्त इस प्रकार हैं :

क) **समानता का सिद्धान्त** : यह सिद्धान्त बताता है कि तत्व जो एक दूसरे के किसी भी तरह समान है (रंग, अभिविन्यास, आकार आदि) को एक एकीकृत समूह के रूप में प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। चित्र 10.1 में आकृति के आधार पर दो अलग-अलग समूहों में देखा जा सकता है - वृत्त और वर्ग।



चित्र 10.1 : समानता का नियम

स्रोत : <https://healthywaymag.com/psychology/gestalt-psychology-principles-theory>

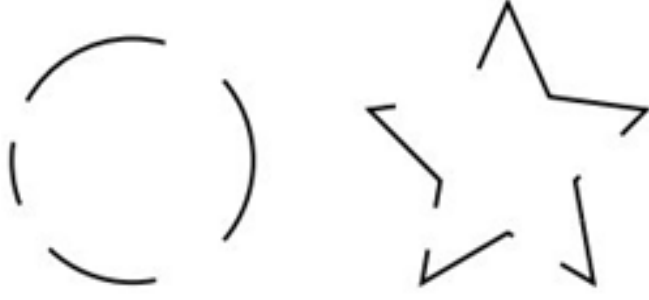
ख) **निकटता का सिद्धान्त** : तत्व जो या तो समझ या स्थान में एक साथ समीप है; उन्हें एकीकृत समूह के रूप में प्रत्यक्षीकरण किया जाता है चित्र 10.2 में चार ऊर्ध्वाकार रेखाओं के अपेक्षा दो जोड़ी ऊर्ध्वाकार रेखाएँ देखते हैं।



चित्र 10.2 : निकटता का नियम

ग) **पूर्ति का सिद्धान्त** : यह सिद्धान्त बताता है कि अगर कुछ ऐसे भाग हैं जो गायब हैं या प्रत्यक्ष की गयी वस्तु में छूट गये हैं, तब हम इसे मनोवैज्ञानिक रूप

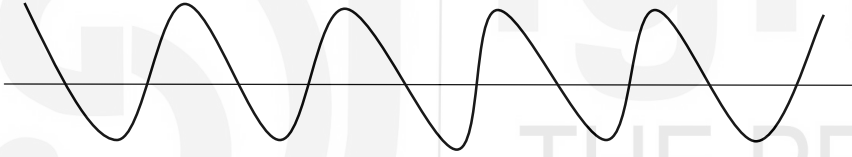
से पूरा कर या रिक्त स्थान को भरकर एक सम्पूर्ण चित्र के रूप में देखते हैं।
चित्र 10.3 हम अधूरी रेखाओं के बजाय एक वर्त और तारा देखते हैं।



चित्र 10.3 : पूर्ति का सिद्धांत

स्रोत : <https://uxpro.cc/publications/using-gestalt-laws-of-perceptual-organization-in-ui-design/>

- घ) **निरन्तरता का सिद्धांत** : जिन वस्तुओं में एक दूसरे के साथ निरन्तरता होती है, उन्हें एक की दिशा में जाते हुए देखा जाता है और उन्हें एक आकृति के रूप में देखा जाता है (जैसा कि चित्र 10.4 में देखा जा सकता है)। इसे अच्छी निरन्तरता के सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है (फील्ड एवं अन्य, 1993)। जब भी तत्वों के पैटर्न एक दिशा का संकेत देते हैं, तो हम आकृति का अनुसरण करते हैं।



चित्र 10.4 : निरन्तरता का सिद्धान्त

- ङ) **आकृति और पृष्ठभूमि का सिद्धान्त** : यह बताता है कि सूचना को अकेले संगठित रूप में प्रत्यक्षीकरण नहीं किया जाता है, आँकड़ों से जानकारी से जानकारी इकट्ठा करने के लिए कुछ विपरीत की भी आवश्यकता होती है। एडगर रूबिन (1886-1951) ने व्याख्या दी कि जो तत्व के रूप में उभर कर दिखायी देता है, और दूसरी वस्तु जो पृष्ठभूमि की तरह समझी जाती है, को पृष्ठभूमि के रूप में जाना जाता है। यह मुख्य रूप से तर्क दिया जाता है कि पृष्ठभूमि से आकृति को पहचानना महत्वपूर्ण है। आकृति की एक मुख्य विशेषता है कि यह पृष्ठभूमि की तुलना में अलग हैं जो अस्पष्ट और अविभाज्य हैं। एक प्रतिवर्ती आकृति में, आकृति और पृष्ठभूमि पीछे हटने लगती है या एक दूसरे के पीछे दिखते हैं, व्यक्ति उसे अपनी आँखों में उतारता है।



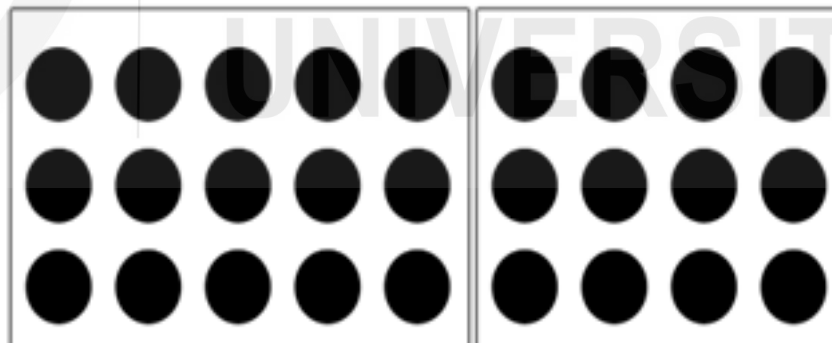
चित्र 10.5 : व्यक्ति और क्रेन मिम्ब्रेस कल्चर पाट, c. 1000 -1150 AD

स्रोत : Figure-ground (perception) - Wikipedia

- च) **प्रेगनैन्ज का नियम** : वर्दाइमर के अनुसार, ऊपर दिये गये सभी सिद्धान्त, प्रेगनैन्ज के नियम में योगदान देते हैं यह नियम कहता है कि हम वस्तुओं के सर्वोत्तम संभावित रूप की कल्पना करते हैं भले ही भौतिक वस्तुएँ उसके सममितीय और विकसित आकार में न हो। इस प्रकार यह हमारी दुनिया को एक सुसंगत और व्यवस्थित तरीके से देखने में मदद करता है।

प्रत्यक्षणात्मक संगठन के मूल सिद्धान्तों में कुछ अन्स सिद्धान्तों को भी जोड़ा गया था। उनमें से तीन इस प्रकार हैं:

- छ) **सामान्य क्षेत्र का सिद्धान्त** — आकार व रूप में समान तत्वों को एक समूह में प्रत्यक्षीकरण किया जाता है, यदि वे स्पष्ट परिभाषित सीमा के क्षेत्र को साझा करते हैं। हम इन्हें उस सेट से अलग करते हैं, जो संलग्न नहीं होता है। नीचे दिये गये चित्र में वृत्त समान रूप से अलग-अलग स्थान पर है, फिर भी हम उन्हें दो समूहों में अलग करते हैं।



चित्र 10.6: सामान्य क्षेत्र का सिद्धान्त

स्रोत : https://www.usertesting.com/sites/default/files/inline-images/common-regions_0.png

- ज) **सामान्य गति का नियम** : यह सिद्धान्त केवल गतिशील तत्वों पर लागू होता है और यह इसे सामान्य क्षेत्र के सिद्धान्त को अलग करता है। जब तत्व एक ही दिशा में गतिशील होते हैं तो मस्तिष्क उन्हें समूह के एक हिस्से के रूप में मानता है, वे पूरी छवि में बाकी तत्वों से अलग भी हो जाते हैं।



चित्र 10.7 : सामान्य गति का नियम

स्रोत : <https://uxpro.cc/publications/using-gestalt-laws-of-perceptual-organization-in-ui-design/>

- झ) **वस्तु स्थिरता** : यह सिद्धान्त कहता है कि संगठित आकृतियां स्थित होती हैं और उद्दीपक की विशेषताओं में कुछ परिवर्तन होने के बावजूद वे अपनी स्थिरता को पूर्ण बनाए रखती हैं। उदाहरण के लिए, बहुत दूर खड़ा एक आदमी हमें बहुत छोटा नहीं दिखता बल्कि हम उसे उसी आकार का अनुभव करते हैं, जब वह निकट होता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

- 1) गेस्टाल्ट सिद्धान्त पर कुछ प्रमुख प्रभावों का पता लगाएं और इसके पूर्ववर्तियों कारकों को विस्तार से बताइए।

.....

.....

.....

.....

- 2) फाई घटना की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

- 3) प्रत्यक्षात्मक संगठन के सभी सिद्धान्तों को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्रेगनैन्ज का सिद्धान्त क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

10.2.2 चिन्तन

वर्दाइमर (1980) ने स्वीकार किया कि, गेस्टाल्ट का अनुस्थापन, "चिन्तन के मनोविज्ञान में, या "वोलकरसाइकोलोजी" प्रत्यक्षीकरण में होने के बजाय, चिन्तन के मनोविज्ञान में, या 'वोलकरसाइकोलोजी' में पाया जाता है (पृष्ठ-13)। इसलिए वर्दाइमर चिन्तन के मनोविज्ञान का अधिकतर योगदान उनकी पुस्तक (1945 में मरणोपरांत प्रकाशित) 'प्रोडक्टिव थिंकिंग' में पाया जा सकता है। उत्पादकता सोच वही पायी गयी है जिसके परिणामस्वरूप नये, अभिनव और सफलता के विचार सामने आते हैं। दूसरी तरफ पुनः उत्पादक चिन्तन पुनरावृत्ति, अनुबन्धन, सामान्य अभ्यास, नियमित कार्यों से सम्बन्धित हैं। वर्दाइमर ने निष्कर्ष निकाला कि यद्यपि तर्क महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अपने आप उत्पादक चिन्तन को जन्म नहीं दे सकती है। इस प्रकार, तार्किक होना और सर्जनात्मक होना दो अलग-अलग चीजें हो सकती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसी समस्या को हल करते समय, किसी के विवरण पर ध्यान देने के बजाय पूर्णतः विचार किया जाना चाहिए। खंडित या टुकड़ों की अपेक्षा संरचनात्मक सच्चाईयों पर अधिक ध्यान देने से सोच की संभावना अधिक होती है।

पुस्तक (प्रोडक्टिव थिंकिंग) 'उत्पादक चिन्तन' में इसे कई उदाहरणों से समझाया गया है। उदाहरण के लिए, एक स्कूल शिक्षक ने अपने छोटे विद्यार्थियों को सरल जोड़-घटा वाली समस्या पर काम करने के लिए कहा। समस्या इस प्रकार थी : $1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 + 9 + 10 = ?$ 55 छात्रों में से एक लगभग तुरन्त समस्या समाधान के साथ आया, शिक्षक ने उससे स्पष्टीकरण पूछा और पाया कि जब दूसरे $1 + 2 + 3 + 4$ इस तरह से जोड़ रहे थे, तो इस छात्र ने पूरी श्रृंखला को देखा और उसमें 5, 11 का पैटर्न पाया। उन्होंने वास्तव में $1 + 10, 2 + 9, 3 + 8$ और इसी तरह संयोजन किया। इस प्रकार इस नये तरीके से इस विशेष समस्या के समाधान तक पहुंचने का तरीका इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि उत्पादक सोच टुकड़ों की बजाय सम्पूर्ण की व्यापक जाँच का परिणाम है।

यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि वह छात्र कार्ल फ्रेडरिक गॉस था, जो बाद में एक प्रसिद्ध गणितज्ञ बन गए।

एक और प्रकार का चिन्तन जिस पर चर्चा की गई है, वह 'अभ्यास और त्रुटि' है। यहां कोई संभावना तक पहुंचता है (यदि ऐसा होता है), तो संयोग से उत्पादक चिन्तन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता "केन्द्रीयकरण और पुनःकेन्द्रीयकरण" (सिंह, 2011) हैं। केन्द्रीयकरण का अर्थ, निजी या व्यक्तिगत दृष्टिकोण से हटकर स्थितियों के अलग दृष्टिकोण की रचना, यह एक पक्षी की आँख को देखने की तरह है इसे वस्तुनिष्ठ

तरीके से और सम्पूर्ण रूप से देखा पुनः केन्द्रीयकरण का अर्थ एक नया और एक तेज परिप्रेक्ष्य होता है। यह सार्वजनिक समाधान तक पहुंचने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। वर्दाइमर का मानना था कि उत्पादक चिन्तन की प्रक्रिया विभिन्न समस्याओं में प्रयुक्त होती है। जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, स्कीमा, योजना और ज्ञान संरचना को प्रतिनिधित्व करती है।

10.2.3 सीखना

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहारवाद और उनके सिद्धान्तों पर हमला किया और आलोचना की, कि किस प्रकार यह 19वीं शताब्दी के भौतिक विज्ञान के परमाणुवाद और तंत्र पर आधारित था। उन्होंने वाटसन के एस. आर. मनोविज्ञान, थार्नडाइक के सम्बन्धात्मक और पावलव के केन्द्र प्रतिवर्तवाद का विरोध किया।

इस क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध में से एक कोहलर द्वारा किया गया था। प्रयोज्याओं को घूसर रंग के दो गहरे रंगों का चयन करने के लिए परीक्षण किया गया। प्रयोज्याओं की उपस्थिति दो वस्तुओं में से गहरे रंग की वस्तु का चयन करने के लिए पुरस्कृत किया गया था। प्रयोग के प्रत्येक चरण में, पहले से पुरस्कृत वस्तु को किसी अन्य वस्तु के साथ जोड़ा गया था, जो इस विशेष वस्तु की तुलना में अधिक गहरा था। चरण-1 में दो वस्तुओं के बीच चमक अंतराल समान थे। अब, जब उन्होंने दो अन्य वस्तुओं (पहले पुरस्कृत और एक और गहरा), तब प्रयोज्या ने गहरे वस्तु को चुना। यहां ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि ये गहरे रंग की वस्तु जिसे उन्होंने चरण-2 में चुना को कभी भी पुरस्कृत नहीं किया गया था। इस प्रकार के परिणाम सम्बन्धतावाद, एस. आर. सिद्धान्त और पुनर्बलन सिद्धान्तों के भी विरोध में जाते हैं। कोहलर ने व्याख्या की कि इस पूरे क्षेत्र प्रारूप में प्रयोज्याओं ने तर्क से 'गहरे से अधिक में अन्तर करना सीखा न कि एक निश्चित उद्दीपक के प्रतिक्रिया करना। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला गया कि प्रयोज्याओं ने सम्बन्धों के पैटर्न को तर्क विशेष तत्व को देखा। यदि सम्बन्धों का प्रत्यक्षीकरण स्थापित हो जाता है, तो प्रयोज्या बस उसे एक स्थिति से दूसरी में स्थानांतरित करता है। उदाहरण के लिए, इस मामले में यह 'से अधिक गहरा' है जो क्रम परिवर्तन में जीतता है। सम्बन्ध की पहचानना और समझना और उस ज्ञान का एक घटना में दूसरी में अंतरण क्रम परिवर्तन कहलाता है। ये विभिन्न प्रजातियों जिन्हें विभिन्न स्थितियों में जाँचा गया, ने भी इसे प्रदर्शित किया (ब्रेनन और हॉडे, 2017)। सीखने के क्षेत्र में गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों का एक अन्य प्रमुख योगदान यह विचार था कि सीखना में अन्तर्दृष्टि होती है, जब किसी व्यक्ति को एक समस्या का सामना करना पड़ता है, तो सम्भव समाधान के रूप में कई परिकल्पनाएँ निर्धारित करता है। जैसे-जैसे वो सही समाधान तक पहुंचता है (जिससे समस्या का समाधान होता है) यह माना जाता है कि अन्तर्दृष्टि आती है और साथ-साथ सीखना भी घटित होता है।

अन्तर्दृष्टि को प्रत्यक्षज्ञानात्मक क्षेत्र में अचानक बदलाव के रूप में परिभाषित किया गया है (माक्स और क्रोनन-हिलिक्स, 1987)। क्योंकि अन्तर्दृष्टि अचानक होती है, इसलिए सीखने को भी यहां अचानक माना जाता है, न कि कुछ ऐसा जो अभ्यास के साथ धीरे-धीरे सुधरता है। कोहलर ने पशुओं के साथ अपने अध्ययन के माध्यम से प्रदर्शित किया कि वे अक्सर एक पूर्ण स्थिति की कल्पना करते हैं और फिर इसके विभिन्न हिस्सों का पुनर्गठन कर, वांछित लक्ष्य प्राप्त करने/समस्या का समाधान करते हैं। उदाहरण के लिए, एक केले को चिंपाजी के सिर के ऊपर बांधकर छोड़ा गया था,

उसे केला प्राप्त करना था। कूदने को समाप्त कर दिया गया था क्योंकि लटकाया हुआ केला, एक चिंपाजी की सामान्य कूद से अधिक ऊँचाई पर था। आसपास के क्षेत्र में जमीन पर बक्से पड़े हुए थे और उनके माध्यम से चिंपाजी समस्या को दूँढ सकता था (मॉर्गन, किंग, वीज और शोपलर, 2006)। चिम्पाजी के लिए स्थिति को सीमित कर दिया गया था, वह बक्सों की व्यवस्था एक के उपर एक उस बिन्दु तक रखकर केले तक पहुंच सकता था। कोहलर के चिंपाजियों में से एक जिसका नाम ग्रांडे था, जो बक्सों की चार मंजिल संरचना से पहुंच सका।

सुल्तान नाम के एक चिम्पाजी के साथ एक अन्य प्रयोग में (जिसे सबसे बुद्धिमान चिंपाजी में से एक माना जाता था) दो बांस की छड़े थी, जिन्हें सुल्तान के साथ पिंजरे में रखा गया था, न तो लाठी इतनी लम्बी थी कि पिंजरे के बाहर केले तक पहुंच सके। हालांकि लाठी इस तरह से बनाई गयी थी कि वे एक साथ जुड़ सकती थी और एक दूसरे में अच्छी तरह फिट हो सकती थी। जब सुल्तान ने दोनों में से किसी भी लाठी की मदद से केले तक पहुंचने की कोशिश की, तो वह असफल रहा। इसलिए उन्होंने लाठी के साथ खेलना शुरू कर दिया इस दौरान वह लाठियों को एक साथ जोड़ने में सफल हुआ। इन जुड़ी हुई छड़ी के साथ केले की तरफ भागते हुए उसने केला प्राप्त किया। लम्बी छड़ी ने उसे समस्या समाधान की अन्तर्दृष्टि दी। अगले दिन सुल्तान समस्या को बिना किसी अनावश्यक कोण के हल कर सकता था। कोहलर (1925) ने अन्तर्दृष्टि की कसौटी पर कहा, "सम्पूर्ण क्षेत्र के नक्शे के सन्दर्भ में एक पूर्ण समाधान की उपस्थिति"।

बॉक्स 10.1 : व्यावहारिक अंतर्दृष्टि सीखने के चार व्यवहारात्मक संकेत

- अचानक असाध्यता से दक्षता में परिवर्तन
- सिद्धान्तों की समझ के बाद प्रदर्शन में जल्दी और सहजता
- ध्वनि धारणा
- समान सिद्धान्त से सम्बन्धित समान समस्याओं के समाधान को स्थानांतरित करने की तत्परता।

कोहलर और कोपका दोनों ने, व्यवहार सम्बन्धी अध्ययनों की आलोचना इस तथ्य पर की कि वे बहुत संरचित थे और पशुओं को पूरे क्षेत्र के नक्शे को देखने की सम्भावना को बाधित कर रहे थे। एक भूलभूलैया में दृश्य की कल्पना की सम्भावनाएँ सीमित हैं और केवल अभ्यास और त्रुटि ही सम्भव है। यद्यपि उन्होंने थार्नडाइक के अभ्यास और त्रुटि सीखना को अस्वीकृत किया लेकिन कोहलर के प्रयोग कम से कम अंतर्दृष्टि होने से पहले प्रयास और त्रुटि प्रतीत हुए।

10.2.4 स्मृति

गेस्टाल्ट के सिद्धान्तों को स्मृति पर भी लागू किया गया। उस समय स्मृति को समझने का एक सामान्य तरीका यह था कि किसी चीज का प्रत्यक्षीकरण करने के बाद, मस्तिष्क में छोड़े गये चिन्ह के कारण हम उसे सफलतापूर्वक याद कर पाए। चिन्ह धीरे-धीरे साफ हो जाते हैं जिससे विस्मरण होता है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्मृति को एक गत्यात्मक प्रक्रिया के रूप में समझा गया है, जिसमें स्मृति चिन्ह समय बीतने के कारण विभिन्न परिवर्तनों से गुजरते हैं।

वुल्फ (1922) द्वारा किये गये एक प्रयोग में या प्रदर्शित किया कि कैसे प्रत्यक्षज्ञानात्मक संगठन के सिद्धांतों के अनुसार स्मृति चिन्हों में परिवर्तन हुए। प्रयोज्याओं के सामने 5 सेकण्ड की अवधि के लिए सरल लेकिन अनियमित ज्यामितीय चित्र प्रस्तुत किए गये। फिर उन्हें 30 सेकण्ड, 24 घण्टे और एक सप्ताह के अंतराल के बाद, उनके द्वारा देखे गये चित्रों को बनाने के लिए कहा गया। परिणाम में यह पाया गया कि प्रयोज्या ने चित्रों को गहरा किया, जिससे ये अच्छे समग्राकृति में दिखे। इसी प्रकार के आगे समर्थन भी मिले (*गिब्सन*, 1929; *बार्टलेट*, 1932; *ऑलपोर्ट एंड पोस्टमेने*, 1947)। यह कहा गया कि, पहले देखी गयी आकृति फिर से पुनः उत्पादन के परिणामस्वरूप विकृति हो सकती है लेकिन यह अच्छे आकार की दिशा में है।

10.2.5 विकासात्मक सम्प्रत्य

कोपका के काम ने बच्चे के मस्तिक के विकास पर जोर देने के साथ विकास प्रक्रियाओं के लिए गेस्टाल्ट सिद्धान्तों का विस्तृत उपयोग प्रदान किया। कोपका (1924/1980) ने बच्चों में संवदी प्रेरक सीखना पर उदाहरण दिया, "एक बार जला हुआ बच्चा लपट (आग) से बचता है" (पृष्ठ, 302)। जले हुए हाथ को बच्चे द्वारा प्राकृतिक प्रविवर्त पीछे खींच लिया जाता है, लेकिन इस प्रक्रिया में हाथ पीछे खींचना नहीं सीखा बल्कि भविष्य में आग से बचना सीखा, दर्द और आग को सम्बन्धित करना सीखना, प्रतिवर्त नहीं है जो प्राकृतिक रूप से उत्पन्न हो। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बच्चा सिर्फ सम्बन्ध नहीं सीखता है बल्कि एक रचनात्मक उपलब्धि भी करता है जिसका भविष्य में अनुकूली प्रभाव पड़ता है। कोपका का यह भी मानना था कि बच्चों में सीखने का प्रमुख पहलू में अनुकरण भी शामिल है। जो आमतौर पर कृत्रिम या नकली स्थितियों के बजाय घटनाओं और स्थितियों के प्राकृतिक रूप में होता है। कोपका के अनुसार "वैचारिक सीखना" सीखने का उच्चतम प्रकार था जिससे भाषा का प्रयोग होता है। बच्चों के लिए वस्तुओं में तथ्यों को स्वीकारना, नाम देना और समझना एक महत्वपूर्ण चरण है। शुरुआत में वे मानते हैं कि नाम ही वस्तु में मौजूद है, लेकिन इस चरण के बाद उस चरण में पहुंचते हैं जहाँ वे भाषा के सम्बन्ध में लचीलेपन को समझते हैं।

वे एक ही शब्द को कई अन्य चीजों पर लागू कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हिल्डा स्टने ने नाक शब्द सीखा और इसे अपने जूते की नोक के लिए प्रयोग किया। करेन वर्दाइमर ने 'तितली' के लिए अपने स्वयं के शब्द 'स्पंदन' उत्पन्न किया। यहां पर ध्यान दिया जा सकता है कि 'स्पंदन' शब्द वर्णात्मक है, इस तरह 'तितली' एक शब्द के रूप में नहीं है। यह मौखिक पुनर्संरचना एक उपकरण हो सकता है जो हमारी समस्या समाधान की क्षमता की विस्तारित कर सकता है।

10.2.6 समकृतिकता

गेस्टाल्ट समकृतिकता को मन-मस्तिष्क की समस्या के समाधान के रूप में देखते थे। 'समकृतिकता' शब्द का अर्थ "समान रूप या दिखाकर होना है। इसे निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया गया है : "स्थान में अनुभवी क्रम हमेशा संरचनात्मक रूप से अन्तर्निहित मस्तिष्क प्रक्रियाओं के वितरण में एक कार्यात्मक क्रम समान होता है" (कोहलर 1929/1947; पृष्ठ 61)। यह "अनुभव और अंतर्निहित मस्तिष्क प्रक्रियाओं के बीच संरचनात्मक अनुरूपता है" (*ब्रेनन*, 2017; पृष्ठ, 381) उदाहरण के लिए, यदि हम एक लय का अनुभव करते हैं (जो सामयिक श्रवण अनुक्रम है) तो हम अनुभव के साथ

मस्तिष्क में ऐसी घटनाओं के पैटर्न को उम्मीद कर सकते हैं जो समरूप (आकार या दिखावाट में एक)। समकृतिकता प्रतिनिधि प्रत्यक्षनात्मक और शारीरिक स्तरों के बीच समानांतर प्रक्रिया है, किस प्रकार प्रत्यक्षज्ञानात्मक से (उद्दीपक क्रिया द्वारा प्राप्त हासिल) मस्तिष्क क्षेत्र (विद्युत रसायनिक क्रिया से बना) से सम्बन्धित है।

समाकृतिकता के सिद्धांत को भी व्यापक रूप से गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। उनमें से एक, भौतिक संरचना के समान तस्वीर हमारे मस्तिष्क में बनती है। उदाहरण के लिए, सवाल उठाए गये कि क्या बाहरी दुनिया में जिस तरह से रंग मौजूद हैं, वह मस्तिष्क के एक हिस्से के साथ समाकृतिकता है जो उस रंग से मेल खाता है। यहां सबसे महत्वपूर्ण पहलू जिसे छोड़ा गया है, वह कार्यात्मकता है। (कोहलर, 1938/1966; पृष्ठ 195) ने कहा कि, "एक रंग के समकक्ष कार्यात्मक कार्टिकल को रंग नहीं होना चाहिए, न ही ध्वनि के समकक्ष कार्यात्मक कार्टिकल को ध्वनि होना चाहिए, जैसे वायलिन की ध्वनि को ध्वनि की भौतिक विशेषताओं की तरह होना चाहिए"। वुडवर्थ (1948) ने समरूपता की व्याख्या के लिए एक सादृश्य का उपयोग किया। उन्होंने मानचित्र और उस देश के बीच सम्बन्ध को दिखाया, जो मानचित्र का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों समान नहीं हैं पर इस अर्थ में समानता साझा करते हैं कि देश की विशेषताओं को वर्तमान मानचित्र से पढ़ा जा सकता है। इस प्रकार यह कहना ठीक होगा कि यह मस्तिष्क में घटनाओं और प्रक्रियाओं के बीच सम्बन्ध के बारे में एक सिद्धान्त नहीं है, बल्कि यह मस्तिष्क प्रक्रियाओं और अनुभव के बीच सम्बन्ध के बारे में है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) उत्पादक और पुनः उत्पादक चिन्तन के बीच अन्तर कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उदाहरण सहित अन्तर्दृष्टि सीखने की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) विकासात्मक प्रक्रियाओं के प्रति गेस्टाल्ट का क्या योगदान रहा है?

.....

.....

.....

.....

4) मन-मस्तिष्क समस्या के लिए गेस्टाल्ट दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। क्या "सिर में चित्र" समकृतिकता की गलत प्रतिनिधित्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

बॉक्स 10.2 : संक्षेप में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का निकाय

परिभाषा

वर्दाइमर, कोहलर और कोपका ने कहा कि, मनोविज्ञान प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन, स्मृति, सीखने आदि जैसे कार्यों को प्रभावित करने वाले तात्कालिक प्रत्यक्ष अनुभव का अध्ययन है। बाद के गेस्टाल्टवादियों जैसे लेविन, प्रत्यक्षीकरण और व्यवहार को सम्बन्धित करते हुए मनोविज्ञान की विषयवस्तु के तहत भी व्यवहार को लिया। इस प्रकार मनोविज्ञान जीव के तत्काल प्रत्यक्ष अनुभव और व्यवहार दोनों का अध्ययन माना जाता है।

विधियाँ

उन्होंने प्रयोग और अंतर्निरीक्षण विधि का प्रयोग किया। यद्यपि उनके द्वारा अंतर्निरीक्षण विधि का उपयोग संरचनात्मक के विपरीत था।

अभिधारणाएं

प्राथमिक अभिधारणा : संपूर्ण इसके भागों का योग नहीं है। सम्पूर्ण की विशेषताएँ इसके भागों से भिन्न है।

द्वितीयक अभिधारणा : समरूपता का सिद्धांत -

अवधारणात्मक संगठन का सिद्धांत

गैर-निरन्तरता दृष्टिकोण (सीखने के सम्बन्ध में कि यह अचानक हो सकता है)

सीखने की वृद्धि (विकासात्मक अवधारणा)

विचारात्मक सीखना (विकासात्मक अवधारणा)

मन-मस्तिष्क समस्या

उन्होंने समकृतिकता की स्थिति को लिया प्रत्यक्षज्ञानात्मक अनुभव और मस्तिष्क अनुभव प्रत्येक से अलग आधार पर नहीं, बल्कि सम्बंधों के संदर्भ में मेल खाते हैं।

आँकड़ों की प्रकृति

आँकड़े तत्काल "विश्लेषण नहीं" अपितु अनुभव से प्राप्त किये जाते हैं। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने आँकड़ों को अनुभव पर आधारित दिया गया कहा"। तात्कालिक अविश्लेषित अनुभवों पर आधारित आँकड़ों को स्वीकार करने पर वे संरचनावादियों के समान थे, लेकिन वे उनसे अलग थे क्योंकि उन्होंने संरचनावादियों द्वारा दी गयी व्याख्या को अस्वीकार कर दिया था।

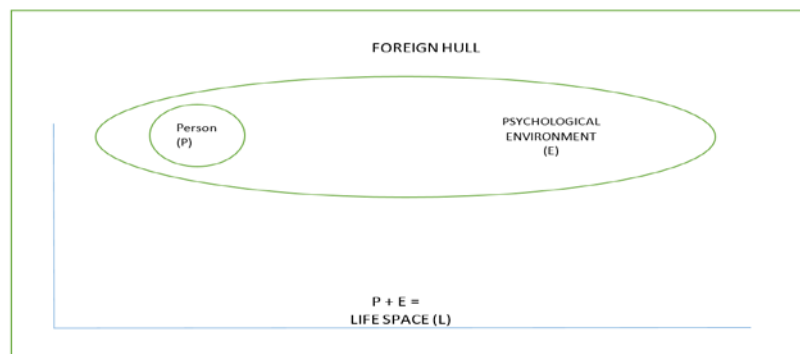
चयन के सिद्धांत

गेस्टाल्टवादियों के लिए प्रत्यक्षीकरण में तत्वों का चयन किस प्रकार होता है से महत्वपूर्ण आकृति किस प्रकार संगठित की गयी है, क्योंकि वे मानते थे कि प्रत्यक्षीकरण में क्षेत्र के सभी हिस्सों की भूमिका होती है, हालांकि उन्होंने यह भी बताया कि प्रत्यक्षज्ञानात्मक सम्पूर्ण के कुछ हिस्सों को आकृति के रूप में और कुछ को पृष्ठभूमि के रूप में चुना जाता है।

10.3 कर्ट लेविन और क्षेत्र सिद्धान्त

कर्ट लेविन एक प्रमुख व्यक्ति थे, जिनका गेस्टाल्ट मनोविज्ञान को व्यापक बनाने में बड़ा योगदान रहा। लेविन ने अपने क्षेत्र सिद्धांत को स्थलाकृतिक और संदिशात्मक मनोविज्ञान के रूप में वर्णित किया। उन्होंने ये दोनों पद स्थलाकृतिक और संदिशा दोनों गणित से उधार लिए हैं। इस अनुभाग में हम लेविन की स्थलाकृतिक या संरचनात्मक अवधारणाओं पर चर्चा करेंगे। पहले से चले आ रहे प्रणालियों ने, लक्षण पूर्ववत्ति, अन्तरात्मक प्रक्रियाओं पर अधिक जोर दिया। इस प्रकार उनकी प्रकृति व्यक्तिवादी थी। दूसरी ओर लेविन ने व्यक्ति और वातावरण की परस्पर निर्भरता पर जोर दिया। उनका मानना था कि व्यवहार, व्यक्ति और वातावरण के कार्य के फलस्वरूप होता है, और उन्होंने अपना विशेष सूत्र (चित्र 10.8 में, बी = एफ (पी., ई.) दिया। सम्पूर्ण मनोविज्ञान को विकसित करने के लिए, उन बलों की सम्पूर्ण क्षेत्र को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, जिनकी मानव जीवन में भूमिका है और जिसमें उनका मनोवैज्ञानिक वातावरण भी शामिल है।

लेविन ने अपनी प्रणाली को 'जीवन स्थान' के विवरण और विश्लेषण के साथ शुरू किया। इसमें विभिन्न मनोवैज्ञानिक तथ्य शामिल हैं जो प्रभावशाली होते हैं और किसी व्यक्ति के जीवन करण में निश्चित समय में भूमिका निभाते हैं। जीवन स्थान में भौतिक घटनाएँ, व्यक्तिगत और जैविक तथ्य और सामाजिक तथ्य शामिल हैं। लेविन का मानना था कि शिक्षा की एक बच्चे के जीवन में जीवन समिष्टा होती है, अन्यथा यह सीमित रह जाती है (स्थानिक और अस्थायी दोनों रूप से)।



चित्र 10.8: बी = एफ (पी, ई) : सूत्र का चित्रण: जीवन समिष्टि का सम्प्रत्य
स्रोत : Singh (2011)

चित्र 10.7 में, व्यक्ति (पी) को संलग्न वृत्त में दर्शाया गया है। व्यक्ति को जीवन समष्टि में शामिल किया गया है लेकिन वातावरण से विभेदित है। लेविन के अनुसार (1936) व्यक्ति न केवल पर्यावरण से अलग है, बल्कि उसे खुद से भी अलग कर दिया गया है। व्यक्ति को दो क्षेत्रों में विभाजित किया गया है: प्रत्यक्षज्ञानात्मक पेशीय क्षेत्र और आन्तरिक व्यक्तिगत क्षेत्र (सिंह, 2011)। प्रत्यक्षज्ञानात्मक क्षेत्र वह है, जो 'पी' चिन्ह वाले वृत्त की परिधि पर स्थित है, और किसी व्यक्ति के प्रत्यक्षनात्मक और पेशीय कार्यों को नियंत्रित करता है।

आन्तरिक व्यक्तिगत क्षेत्र वृत्त का मुख्य या केन्द्रीय भाग है, जो प्रत्यक्षज्ञानात्मक मोटर क्षेत्र से घिरा हुआ है, और व्यक्ति के प्रत्येक पहलुओं को नियंत्रित करता है। आन्तरिक क्षेत्र का वातावरण के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता है। वे मानते थे कि पहले दूसरे मनोवैज्ञानिकों ने प्रेरणा और दूसरे सामाजिक बलों की भूमिका को अस्वीकार किया था और इस तरह उन्होंने इन्हें अपने तंत्र में शामिल किया।

जीवन समष्टि की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता *मनोवैज्ञानिक पर्यावरण* (ई) है, लेविन ने इसे कई क्षेत्रों में विभाजित किया है, उन्होंने तर्क दिया कि कुछ क्षेत्रों में पारगम्य सीमाएँ हो सकती हैं, और जिसके द्वारा हम दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं या उनसे प्रभावित हो सकते हैं, कुछ क्षेत्र अभेद्य सीमाओं के साथ भी होते हैं। इस प्रकार, मानव व्यवहार व्यक्ति और पर्यावरण का या जीवन समष्टि में समग्रता का फल है।

एक अन्य पद जिसे लेविन ने व्याख्या की वो बाह्य आवरण है। बाह्य वातावरण जो किसी व्यक्ति के जीवन समष्टि से बाहर है उसे बाह्य आवरण कहा जाता है। व्यक्ति के जीवन समष्टि के बाहर के वातावरण को बाह्य आवरण कहा जाता है। ये पृष्ठभूमि में भौतिक और सामाजिक तथ्य हैं और जीवन समष्टि का हिस्सा नहीं हैं। उन्होंने बाह्य आवरण और मनोवैज्ञानिक वातावरण के बीच सीमा को प्रवेश बताया और इस प्रकार, इन दोनों के बीच एक दो तरफ आदान प्रदान सम्भव है। इसके माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, मनोवैज्ञानिक वातावरण, भौतिक वातावरण में बदलाव ला सकता है और भौतिक दुनिया में होने वाली घटनाएँ मनोवैज्ञानिक वातावरण और व्यक्ति को विस्तार से प्रभावित करने में सक्षम हैं।

जीवन समष्टि में वस्तुओं की सकारात्मक और नकारात्मक विशेषताओं को लेविन की प्रणाली में कर्षण शक्ति कहा जाता है। एक वस्तु में वांछनीय और आकर्षक गुणों को सकारात्मक कर्षण शक्ति कहा जाता है, जबकि नकारात्मक कर्षण शक्ति में वस्तु में अनआकर्षक या प्रतिकारक गुण शामिल होते हैं। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति की आवश्यकताओं के साथ कर्षण शक्ति बदल सकता है। उदाहरण के लिए, एक वस्तु के रूप में भोजन, एक भूखे बच्चे के लिए सकारात्मक कर्षण शक्ति होगी, लेकिन एक बार खिलाए जाने के बाद, इसकी कर्षण शक्ति कम हो जाती है और फिर शायद टेलीविजन सेट या कुछ खिलौने में उच्च सकारात्मक कर्षण शक्ति हो सकती है (किंग, बुडी, और विनेय, 2015)।

यह पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि जीवन समष्टि के विभिन्न क्षेत्र एक दूसरे के साथ सम्पर्क करते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अब सवाल यह है कि ये विभिन्न क्षेत्र आपस में कैसे जुड़ते हैं? जब जीवन समष्टि के कोई दो पहलू या क्षेत्र आपस में अन्तःक्रिया करते हैं तो इसे एक घटना कहा जाता है। ये क्षेत्र एक दूसरे को दो प्रक्रियाओं *संचार* और *गमन* के द्वारा प्रभावित करते हैं। संचार, वह घटना है,

जिसके माध्यम से जीवन समष्टि का एक क्षेत्र दूसरे के साथ सम्पर्क में आ जाते हैं या दूसरे के साथ संचार करता है। गर्भन में व्यक्ति जीवन समष्टि के एक पहलू से दूसरे में शारीरिक या मनोवैज्ञानिक गति शामिल है। इससे अवधानात्मक या प्रत्यक्षणात्मक प्रक्रियाओं (मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में) में परिवर्तन हो सकते हैं, यह भी बताया गया है कि गमन की प्रक्रिया होने के कारण एक निश्चित मार्ग आवश्यक है और इसे *होडोलॉजिकल स्पेस* (Hodological space) की संज्ञा दी है। लेविन (1936) ने संचार और गमन नियंत्रित करने वाले तीन प्रमुख सिद्धान्तों को बताया है। पहला संबद्धता का नियम है यह बतलाया है कि किसी भी घटना के होने के कारण दो या दो से अधिक तथ्यों की परस्पर अन्तर्क्रिया है, जो एक दूसरे से संबंधित है। दूसरा *दृढ़ता या मूर्तता का नियम* वास्तव में व्यक्ति के जीवन समष्टि में मौजूद तथ्यों का उस पर प्रभाव पड़ता है। अर्थात् वही तथ्य जिसका जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। तीसरा *समकालिकता का नियम* है, यह बताता है कि वर्तमान में उपस्थित तथ्यों में ही, वर्तमान व्यवहार को उत्पन्न करने की क्षमता होती है। बचपन से सम्बन्धित घटनाएँ ही व्यवहार को प्रभावित करती हैं यदि वे समकालीन समय में भी मौजूद हैं, नहीं तो वर्तमान व्यवहार पर उनका कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ेगा (सिंह, 2011)। यद्यपि इस बात पर जोर दिया कि अतीत और भविष्य के बारे में हमारा प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन और भावनाएँ और वर्तमान मनोवृत्ति हमारे वर्तमान आचरण को प्रभावित करते हैं और वर्तमान जीवन समष्टि में आते हैं (लेविन, 1951)।

जीवन समष्टि संरचना में लेविन का एक प्रमुख योगदान संघर्ष का संप्रत्य है। तीन प्रकार के द्वन्द्वों की पहचान की गयी हैं, जो हम में कुण्ठा उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार है। ये *उपागम – उपागम द्वंद्व* और *उपागम-परिहार द्वंद्व* है। हम अपने दैनिक जीवन में एक *उपागम – उपागम द्वंद्व* का सामना करते हैं, जब हम दो सकारात्मक कर्षण या घटनाओं के बीच में फंसा पाते हैं, और केवल एक ही प्राप्त किया जा सकता है। *परिहार – परिहार द्वंद्व* में हम दो नकारात्मक कर्षणों से घिरे होते हैं। *उपागम – परिहार द्वंद्व* वह है, जब किसी वस्तु में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही स्थितियां होती हैं, इसलिए व्यक्ति आकर्षित होता है और लक्ष्यों से भी पीछे हट जाता है। इन परिस्थितियों संकल्प में जटिल होता है और व्यक्ति के संदर्भ में सकारात्मक और नकारात्मक कर्षण के सापेक्ष वनज पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, बहुत अच्छे वेतन पैकेज और भर्ती के साथ नौकरी की पेशकश की जा रही है, सकारात्मक कारण है। परन्तु एक दूरस्थ क्षेत्र में रहने की स्थिति, परिणामस्वरूप परिवार से दूर रहना कारणवंश नकारात्मक स्थिति उत्पन्न होती है।

10.3.1 लेविन का संदिशात्मक मनोविज्ञान

इस भाग में लेविन के तल के इन संप्रत्यों को शामिल किया गया है जो मानव व्यवहार के प्रेरणात्मक पहलुओं से संबंधित थे और इस प्रकार मानव व्यवहार को पूरी तरह समझने में उनकी प्रमुख भूमिका है। लेविन के अनुसार, एक व्यक्ति एक जटिल ऊर्जा प्रणाली है। मनोवैज्ञानिक ऊर्जा वह है, जिसका उपयोग मनोवैज्ञानिक कार्य को पूरा करने के लिए किया जाता है। तब के एक या दूसरे भाग में तनाव में वृद्धि के कारण असमानता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जब एक व्यक्ति संतुलन प्राप्त करने की इच्छा रखता है जिसके परिणामस्वरूप मनोवैज्ञानिक ऊर्जा उत्पन्न होती है और जब तंत्र अपने सभी भागों में तनाव को एक समान करने में सफल हो जाता है, तो ऊर्जा की उत्पत्ति रुक जाती है।

आवश्यकता को या तो शारीरिक स्थिति (जैसे कि भूख, प्यास, काम) या एक मनोवैज्ञानिक स्थिति (जैसे अमीर बनने की चाह) के रूप में वर्णित किया गया है लेविन ने आवश्यकता तथा अर्द्ध-आवश्यकता के बीच अन्तर भी किया है। एक अर्द्ध-आवश्यकता वह है, जो विशिष्ट इरादों के साथ हो और सामाजिक कारकों से जिसे आकार मिला हो (लेविन, 1951)। उदाहरण के लिए, एक विशेष रेस्टोरेन्ट में विशिष्ट पिज्जा खाने की आवश्यकता।

लेविन यह भी माना कि तनाव प्रणाली के साथ जरूरतें अत्यधिक जुड़ी हुई हैं और तनाव का खत्म होना केवल एक विशेष आवश्यकता की संतुष्टि के साथ ही सम्भव है। ज्ञान को आन्तरिक वैयक्तिक क्षेत्रों दो या अधिक स्थितियों के बीच असमानता की स्थिति के रूप में वर्णित किया गया है। इस विचार की जांच ब्लुमा जिगानिकर द्वारा किया गया था। इस शोध में प्रयोज्याओं को सरल कार्यों की एक श्रृंखला दी गई थी। कुछ उदाहरणों में उन्हें कार्य पूरा होने से पहले बाधित किया गया था और अन्य में, उन्हें पूरा करने की अनुमति दी गयी थी। यह अनुमान लगाया गया कि, जब कोई कार्य पूरा हो जाता है, तो तनाव कम जो जायेगा, लेकिन यदि कार्य बाधित होता है तो तनाव लम्बी अवधि तक बना रहता है। इस धारणा का परीक्षण उन प्रयोज्याओं को विभिन्न कार्यों को याद करते कहा गया कि पूर्ण हुए कार्यों की तुलना में बाधित कार्यों के लिए स्मरण अच्छा होगा। निष्कर्षों ने इस भविष्यवाणी का समर्थन किया और इस घटना को जैगारनिक प्रभाव कहा गया। इसके लिए यह स्पष्टीकरण दिया गया कि अधूरे कार्य से उत्पन्न तनाव, प्रयोज्याओं के लिए उस कार्य से जुड़ी सामग्री का पूर्वाभ्यास करने का एक कारण हो सकता है। बाद में इस प्रभाव के लिए और अधिक प्रमाण मिले (एलपर, 1948; डिधूर, 1954)।

लेविन द्वारा एक और महत्वपूर्ण संप्रत्य पर "संदिशा" पर चर्चा की गयी। संदिशा से तात्पर्य वैसे मनोवैज्ञानिक बलों से होता है, जो व्यक्ति को एक हद तक प्रभावित करता है कि व्यक्ति किसी निश्चित दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित हो। संदिशा के तीन गुणों पर प्रकाश डाला गया है। वे हैं : दिशा (यह लक्ष्य वस्तु की तरफ या दूर हो सकता है), शक्ति (संदिशा वस्तु के आकर्षण के साथ सहसंबंध हो सकता है - आकर्षण या प्रतिकर्षण इसकी ताकत को परिभाषित करता है), और सम्पर्क का एक बिन्दु। संदिशा को एक तीर हाथ दिखाया जाता है जब यह व्यक्ति (पी) से सम्बंधित होता है। तीर की रेखा अकेली होती है, तो संदिशा की ताकत अधिक होती है।

10.4 समूह गतिकी

लेविन ने समूह गतिकी या सामूहिक बातचीत के संप्रत्य जो समूह में होते हैं जैसे नेतृत्व, समूह निर्माण, शक्ति परिवर्तन, एकजुटता, निर्णय लेना आदि पर भी ध्यान दिया है, यद्यपि उन्होंने कहा, समूह की गतिकी को परिभाषित करना मुश्किल है, लेकिन इसे सामाजिक प्रक्रिया, जिसके द्वारा लोग समूह में एक दूसरे के साथ आमने सामने बातचीत करते हैं के रूप में बताया। इसमें समूहों का व्यक्तियों के ऊपर और व्यक्तियों का समूहों के ऊपर प्रभाव के अध्ययन को शामिल था। लेविन का विचार था कि व्यक्ति का समूह और उसका वातावरण एक व्यक्ति के सामाजिक क्षेत्र का निर्माण करते हैं। इसमें समूह की संरचना विशेषकर नेतृत्व के सम्बन्ध में (लोकतांत्रिक बनाम सत्तावादी नेता) और इसकी प्रभावशीलता के अध्ययन को भी शामिल किया गया था।

ये अध्ययनों औद्योगिक कार्य समूहों, शैक्षिक समूहों और यहाँ तक कि सामुदायिक क्रिया कार्यक्रमों पर किया गया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, लेविन (1943) ने यह समझने के लिए शोध किया कि निर्णय लेने के तरीके को कैसे बदला जा सकता है। खाने के कुछ उत्पादों जैसे माँस की कमी के कारण, गृहणियों को कुछ अप्रसिद्ध माँस जैसे किडनी, मस्तिष्क, लीवर और दूसरे अंगों, जिनको आमतौर पर बाहर कर दिया जाता था आदि को खरीदने और उपयोग करने के लिए अनुनय किया गया था। गृहणियों के 6 समूहों को चुना गया था और दो अनुनय विधियों का उपयोग किया गया था। शुरू को तीन समूहों के साथ व्याख्यान विधि के द्वारा उन्हें माँस के पोषण मूल्य के साथ-साथ स्वादिष्ट और स्वरूप तरीके से तैयार करने के बाद में बताया गया, अन्य तीन समूहों के लिए समूह चर्चा पद्धति का उपयोग किया गया था।

जहाँ सदस्य खुद इन माँस को पकाने और खाने के पक्ष और विपक्ष के बारे में बातचीत करते थे। बाद में यह पाया गया कि पहला समूह (जिन्हें व्याख्यान विधि के माध्यम से मनाया गया था) से 3 प्रतिशत गृहणियों ने इन माँस पदार्थों का उपयोग किया था जबकि गृहणियां जिन्हें समूह चर्चा विधि से मनाया गया था। उनमें 32 प्रतिशत ने माँस पदार्थों का उपयोग किया। लेविन (1958) से द्वारा बाद में प्रयोगों की एक श्रृंखला की और इसी तरह के परिणाम पाए गये।

लेविन और उनके तंत्र की विशेष रूप से इस तथ्य के लिए भी आलोचना की गयी, कि उनके द्वारा चर्चा किये गए संप्रत्य जैसे तनाव तंत्र, ऊर्जा आदि का परीक्षण करना कठिन है, और इस प्रकार संदिग्ध है। ब्रॉईलर (1936-37) ने इसे "सचित्र उपमाएँ और चित्रमय रूपक" कहा है। इस तंत्र में प्रयुक्त शब्द भौतिकी, गणित और रसायन विज्ञान के प्रसंग से लिए गये हैं, लेकिन गलत तरीके से उन्हें मनोविज्ञान में प्रयोग किया गया है (हॉल और लिंडजे, 1978)। लेविन के तंत्र के विरोध में एक और प्रमुख आलोचना संप्रत्ययों की व्याख्याओं को लेकर की गयी। उदाहरण के लिए, जीवन समष्टि का वातावरण से सम्बन्ध सर्वांगीण नहीं है (कार्टराइट, 1969; लीपर, 1943; टोलमैन, 1948)। इन आलोचनाओं के बावजूद, यह महत्वपूर्ण है कि, लेविन की प्रणाली ने मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कुछ अविश्वसनीय अनुसंधान उत्पन्न किये साथ ही आगे के विकास का वादा भी किया।

10.5 गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आलोचनाएँ

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की भारी आलोचना का कारण इसके सिद्धान्त पर अकादमिक निर्भर होना और उसके समर्थन के लिए पर्याप्त ठोस सबूतों की कमी (मार्क्स और क्रोनन, 1937) को लेकर की गयी। उदाहरण के लिए, सूझ शब्द संज्ञान्तिक रूप से अनुमानित है और इसकी अनुभवजन्य काफी कमजोर हैं। इस प्रकार, तंत्र को अस्पष्ट और अनिश्चित है समाकृतिकता से सम्बन्धित शारीरिक धारणा की भी आलोचना की गयी। यह निश्चित रूप से एक अनूठी व्याख्या है, और गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक केवल इसे अप्रत्यक्ष रूप से कह सके हैं। उनके द्वारा किये गये प्रयोगों और अध्ययनों की खराब नियन्त्रण, गैर मात्रात्मक और बूरे डिजाइन मानकर आलोचना की गयी है (सिंह, 2011)। कुछ ने यह भी सवाल उठाया कि प्रयोज्या की अनावश्यक संकेत प्रदान किये गये, जिसके उनकी समस्या समाधान की क्षमता प्रभावित कर रहे थे। हैरोवर (1932) ने कहा कि गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने अपने मुख्य पद, संगठन को अनुभवजन्य रूप से

परिभाषित संगठन और गैर संगठन के बीच अन्तर स्पष्ट रूप से किया जाना चाहिए था, जिसके प्रयोगात्मक अध्ययन केवल संगठन को ठीक प्रकार समझने के लिए किए जाते।

इन आलोचनाओं के बावजूद गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का योगदान और निरन्तर प्रासंगिकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में इसका प्रभाव ने निश्चित रूप से प्रत्यक्षीकरण को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। वे जिससे सम्पूर्ण की तरफ, संरचना से प्रक्रिया की और वस्तुनिष्ठ विज्ञान से ज्ञानात्मक विज्ञान की तरफ बदलाव के लिए जिम्मेदार थे।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) जीवन समष्टि के सम्प्रत्य की व्याख्या करें और मनोविज्ञान के दृष्टिकोण में इसके महत्व को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

2) जैगारनिक प्रभाव क्या है? इसकी कुछ व्यावहारिक उपयोगिता भी बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आलोचनाओं को रेखांकित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10.6 सारांश

अब जब हम इस इकाई के अंत में आ गए हैं तो हम उन सभी बिन्दुओं को सूचीबद्ध करेंगे जो हमने अब तक सीखे हैं :

- गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना और नेतृत्व मैक्स वर्दाइमर और उनके दो निकट सहयोगियों कोहलर और कोपका द्वारा की गयी थी। इमैन्जुअल कान्ट, विलिहम वुण्ट, जॉन स्टुअर्ट मिल, फ्रांज ब्रेटानो, कार्ल स्टम्फ और अर्नस्ट मैक, कुछ पूर्ववर्ती बल थे जो गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की नींव रखने में सहायक हुए।

- आभासी गति पर किये गये प्रयोगों की एक श्रृंखला में वर्दाइमर ने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि दो असतत् लेकिन स्थिर प्रकाश की चमक के बीच एक उचित समय अंतराल दिया जाता है, तो एक प्रकाश से दूसरे के बीच गति का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है इसे फाई घटना कहा जाता है।
- गेस्टाल्ट मनोविज्ञान इस विचार के खिलाफ एक विद्रोह था कि कुछ टुकड़ों और अनुभव के हिस्से को जब एक साथ जोड़ा जाता है, तो वे मिलकर 'सम्पूर्ण' बनता है, इस प्रकार सम्पूर्ण अपने व्यक्तिगत और पृथक भागों के योग से बहुत अधिक होता है।
- गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने प्रत्यक्षज्ञानात्मक संगठन के कुछ सिद्धान्तों, जो प्रत्यक्षात्मक सम्पूर्ण के मूल संगठन का संचालन करते हैं पर प्रकाश डाला जैसे, समानता, निकटता, पूर्ति, निरन्तरता आकृति-पृष्ठभूमि और वस्तु स्थिरता।
- गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का विस्तार सीखने, स्मृति और चिन्तन के क्षेत्रों में भी हुआ। सीखने के क्षेत्र में प्रयास और त्रुटि के बजाय अचानक सूझ (अंतर्दृष्टि) से सीखने पर जोर दिया। वर्दाइमर ने उत्पादक चिन्तन पर बात कही और कहा कि किसी समस्या को हल करते समय व्यापक दृष्टिकोण या सम्पूर्ण पर विचार करना चाहिए। स्मृति के पहलुओं पर चर्चा करते हुए उन्होंने जोर दिया कि, स्मृति विशेष रूप से समझ के अंतराल के साथ प्रत्यक्षज्ञानात्मक संगठन के सिद्धान्तों के अनुसार कई प्रकार के परिवर्तनों से गुजरती है।
- लेविन के क्षेत्र सिद्धान्त में स्थालाकृतिक मनोविज्ञान और संदिशा मनोविज्ञान दोनों के तत्व हैं। उनके स्थालाकृतिक मनोविज्ञान के अनुसार जीवन समिष्ट के सम्प्रत्य का अत्यधिक महत्व है। इसमें व्यक्ति और उसका पर्यावरण शामिल है। यह माना जाता था कि मानव व्यवहार, व्यक्ति और वातावरण के अन्तःक्रिया का परिणाम है। अपने संदिशात्मक मनोविज्ञान के हाथ उन्होंने प्रेरणात्मक सम्प्रत्य जैसे ऊर्जा, आवश्यकता तनाव और संदिशा पर ध्यान आकर्षित किया है।

10.7 मुख्य शब्द

- फाई घटना** : यह आभासी गति का एक प्रकार है। जिसे दो असतत् लेकिन स्थिर रोशनी के लगातार, एक विशेष समय अंतराल पर दिखाया जाता है, इस स्थिति में जो देखा जाता है वह दो असतत् रोशनी के बजाय पहली से दूसरी रोशनी तक एक गति देखी जाती है।
- पूर्ति** : जो अपूर्ण है, उसे सम्पूर्ण करने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति अंतराल को भरना, जबकि वो इस समय उपस्थित न होने पर भी, सम्पूर्ण रूप में देखना।
- आकृति-पृष्ठभूमि** : किसी वस्तु की आकृति के रूप में देखना और पृष्ठभूमि पर अन्य बाह्य वस्तुओं को देखने की अवधारणात्मक प्रवृत्ति।
- प्रेगनैन्ज** : प्रत्यक्षज्ञानात्मक संगठन उपस्थित परिस्थितियों में यथासम्भव सुसंगत, अच्छा और व्यवस्थित होता है का विचार है।

अन्तर्दृष्टि	: समस्या को एक बड़े संदर्भ में देखने की क्षमता और समस्या के समाधान तक पहुंचने के लिए समस्या से प्रत्यक्षज्ञानात्मक रूप से पुनर्गठन करना।
समकृतिकता	: मन-मस्तिष्क समस्या के लिए गेस्टाल्ट की एक व्याख्या। इसके अनुसार, अनुभव और उसमें शामिल मस्तिष्क प्रक्रियाओं के बीच कार्यात्मक सम्बन्ध होता है।
क्षेत्र सिद्धान्त	: व्यक्ति और वातावरण या कुल क्षेत्र के बीच अंतःक्रिया और परस्पर निर्भरता के पैटर्न की जांच करती है।
जीवन समष्टि	: किसी भी समय में, किसी व्यक्ति को प्रभावित करने वाली सभी भौतिक घटनाओं, जैविक, सामाजिक तथ्यों और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को संदर्भित करता है।
बाह्य आवरण	: भौतिक और सामाजिक तथ्य जो वर्तमान में जीवन समष्टि का हिस्सा नहीं है और केवल पृष्ठभूमि में है।
उपागम-उपागम द्वंद्व	: दो सकारात्मक और आकर्षक लक्ष्यों की उपस्थिति के कारण उत्पन्न द्वंद्व।
परिहार-परिहार द्वंद्व	: दो अनाकर्षक और अवांछनीय लक्ष्यों के उपस्थिति के कारण उत्पन्न द्वंद्व।
उपागम-परिहार द्वंद्व	: एक द्वंद्व जिसमें एक सकारात्मक लक्ष्य किसी अनाकर्षक या अवांछनीय पहलू से भी जुड़ा होता है।
जैगारनिक प्रभाव	: बाधित, अपूर्ण कार्यों को पूर्ण कार्यों की तुलना में बेहतर याद कर पाने की प्रकृति।

10.8 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के उद्भव को प्रभावित करने वाले कारक कौन से थे।
- 2) प्रत्यक्षणात्मक संगठन के विभिन्न सिद्धान्तों पर चर्चा कीजिए।
- 3) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का चिन्तन, स्मृति और सीखने में क्या योगदान था?
- 4) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की भूमिका और योगदान की व्याख्या कीजिए।
- 5) मानव व्यवहार को समझने के लिए लेविन के स्थलाकृतिक मनोविज्ञान के महत्व की व्याख्या कीजिए।
- 6) लेविन के संदिशा मनोविज्ञान के संप्रत्यों को स्पष्ट कीजिए।
- 7) लेविन की मनोविज्ञान प्रणाली की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

10.9 संदर्भ और पढ़ने के सुझाव

Allport, G. W., & Postman, L. (1947). *The Psychology of Rumor*. New York: L Henry Holt and Co.

Alper, T.G. (1948). Memory for completed and incompleted task as a function of personality: Correlation between experimental and personality data. *Journal of Personality*, 17, 104-37.

Bartlett, F.C. (1932). *Remembering: Experimental and Social Study*. London: Cambridge University Press.

Brennan, J. F., & Houde, K. A. (2017). *History and Systems of Psychology*. Cambridge University Press.

Brolyer, C.R. (1936-37). Review of Lewin's Principles of topographical psychology. *Character and Personality*, 5, 251-258.

Cartwright, D. (1959). A field theoretical conception of power. *Studies in Social Power*, 183-220.

Deutsch, M. (1954). Field theory in social psychology. *Handbook of Social Psychology*, 1, 181-222.

Field, D. J., Hayes, A., & Hess, R. F. (1993). Contour integration by the human visual system: evidence for a local "association field". *Vision Research*, 33(2), 173-193.

Gibson, J. J. (1929). The reproduction of visually perceived forms. *Journal of Experimental Psychology*, 12(1), 1.

Hall, C. S. & Lindzey, (1978). *Theories of Personality (3rd ed.)* (New York: John Wiley and Sons).

Harrower, M. R. (1932). Organization in Higher Mental Process. *Psychologische Forschung*, 17, 56-120.

King, D. B., Woody, W. D., & Viney, W. (2015). *History of Psychology: Ideas and Context*. Routledge.

Koffka, K. (1980). *Growth of the mind*. New Brunswick, NJ: Transaction Books. (Original work published in 1924)

Köhler, W. (1925). *An aspect of Gestalt psychology*. *The Pedagogical Seminary and Journal of Genetic Psychology*, 32(4), 691-723.

Köhler, W. (1947). *Gestalt Psychology: An introduction to the new concepts in modern psychology*. New York : Liverright.

Köhler, W. (1966). *The place of value in a world of facts*. New York: Liveright. (Original work published 1938)

Leeper, R. W. (1943). Lewin's Topological and Vector psychology: A digest and critique. *Study of Psychology*, Vol. 1.

Lewin, K. (1936). *A Dynamic Theory of Personality*. New York: McGraw-Hill.

Lewin, K. (1943). Forces behind food habits and methods of change. *Bulletin of the National Research Council*, 108, 35-65.

Lewin, K. (1951). *Field Theory in Social Science: Selected theoretical papers* (D. Cartwright, ed.) New York: Harper and Row.

Lewin, K. (1958). Group decision and Social change. In E. Macoby, T.M. Newcomb and E.L. Hartley (eds.) *Readings in Social Psychology* (3rd edition), New York: Holt, Rinehart and Winston INC, 197-211.

Marx, M.H. & Cronan-Hillix, W.A. (1987). *Systems and Theories in Psychology*, New York: McGraw-Hill Book Co.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R., & Schopler, J. (2006). Introduction to Psychology, 7th eds.

Singh, A. K. (2011). *The comprehensive history of psychology*. Motilal Banarsidas Publ.

Tolman, E. C. (1948). Cognitive maps in rats and men. *Psychological review*, 55(4), 189.

Wertheimer, M. (1938). Gestalt psychology. *Source Book of Gestalt Psychology*. New York: Harcourt, Brace and Co.

Wertheimer, M. (1980). Max Wertheimer, Gestalt prophet. *Gestalt Theory*, 2, 3-17.

Woodworth, R.S. (1948). *Contemporary Schools of Psychology*. New York: Ronald Press.

Wulff, F. (1922). Uber die veränderung von verstellungen. In C.E. Osgood's book *Method and Theory in Experimental psychology* (1953). Oxford University Press.

10.10 चित्रों के संदर्भ

Law of similarity: <https://healthywaymag.com/psychology/gestalt-psychology-principles-theory>

Law of closure: <https://healthywaymag.com/psychology/gestalt-psychology-principles-theory>

Principle of Figure and Ground: Figure-ground (perception) - Wikipedia

Principle of common region:

https://www.usertesting.com/sites/default/files/inline-images/common-regions_0.png

Principle of common fate: <https://uxpro.cc/publications/using-gestalt-laws-of-perceptual-organization-in-ui-design/>

10.11 ऑनलाइन संसाधन

- Gestalt Principles of Perception with examples, visit;
<https://www.youtube.com/watch?v=ZWucNQawpWY>
- Insight learning in Chimpanzee (Köhler study footage), visit;
<https://www.youtube.com/watch?v=6-YWrPzsmEE>
- Zeigarnik Effect, visit;
<https://www.youtube.com/watch?v=PKtzot7U4hY>



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 मानवतावादी – आस्तित्ववादी मनोविज्ञान (तृतीय-बल आंदोलन)*

संरचना

- 11.0 प्रस्तावना
- 11.1 तृतीय-बल आंदोलन का पूर्ववृत्त
- 11.2 मानवतावादी मनोविज्ञान
 - 11.2.1 अब्राहम मैस्लो
 - 11.2.2 कार्ल रोजर्स
- 11.3 अस्तित्ववादी मनोविज्ञान
 - 11.3.1 विक्टर फ्रैंकल
 - 11.3.2 रोलो मे
- 11.4 मानवतावादी एवं आस्तित्ववादी मनोविज्ञान: समानता एवं असमानता
- 11.5 सारांश
- 11.6 मुख्य शब्द
- 11.7 पुनरावलोकन प्रश्न
- 11.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 11.9 चित्रों के संदर्भ
- 11.10 ऑनलाइन संसाधन

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप इस योग्य होंगे कि:

- तृतीय-बल आंदोलन की व्याख्या करने में;
- तृतीय-बल आंदोलन के भीतर विभिन्न भावों की सामान्य विशेषताओं पर चर्चा करने में;
- मानवतावादी एवं आस्तित्ववादी मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करने में; और
- अब्राहम मैस्लो, कार्ल रोजर्स, विक्टर फ्रैंकल एवं रोलो मे के योगदान का संक्षेपण कर सकेंगे।

11.0 प्रस्तावना

मनोविज्ञान में बीसवीं शताब्दी में विस्तृत रूप से एक नया आंदोलन, *तृतीय-बल आंदोलन* के रूप में संदर्भित हुआ। तीसरा बल शब्द मनोविज्ञान में कई अनुस्थापन के लिए एक सामान्य वर्गीकरण है। यह मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद से अलग दृष्टिकोण है जिसे क्रमशः प्रथम बल तथा द्वितीय बल कहा जाता है।

* डॉ. सैफ. आर. फारुकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

तृतीय-बल आंदोलन ने फ्रेनॉमनॉलोजी (संवृत्तिशास्त्र) की पद्धति पर महत्व दिया। फ्रेनॉमनॉलोजी, किसी घटना का अध्ययन है जो व्यक्ति द्वारा अनुभव किया जाता है, जिसमें इस बात को महत्व दिया जाता है कि वह घटना कैसे घटित हुई। एक कार्यप्रणाली के रूप में, फ्रेनॉमनॉलोजी किसी घटना को समझने के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है। जो व्यक्ति घटना को अनुभव करता है, उसे ठीक उसी समय उपस्थित होना पड़ता है ताकि किसी पूर्वाग्रह तथा पूर्व धारणा के बिना वह चेतना में प्रकट हो।

तृतीय-बल आंदोलन के लिए अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं, जिनमें मुख्य हैं मानवतावादी मनोविज्ञान एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान। मानवतावादी मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिकों का एक समूह सम्मिलित है जो सुझाव देता है कि मनुष्य हमेशा अपनी पूर्ण क्षमता विकसित करने का प्रयास करता है। वे मानव व्यवहार के यांत्रिक स्पष्टीकरण की भी उपेक्षा करते हैं। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान मनोवैज्ञानिक मुद्दों के लिए अस्तित्ववादी दर्शन का अनुप्रयोग है।

तृतीय बल के आंदोलन को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है जिसमें कुछ सामान्य साझा पहलू हैं। तृतीय बल आंदोलन के तहत दृष्टिकोण में एक चीज यह है कि वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं मानवीय क्षमता की पूर्ति में व्यक्तिगत जवाबदेही को महत्व देते हैं। तृतीय-बल आंदोलन के लिए बुद्धि सक्रिय एवं गतिशील है। यह सक्रिय एवं गतिशील बुद्धि मनुष्य को अपनी अनूठी क्षमताओं को व्यक्त करने में सक्षम करती है। इसके अतिरिक्त, तृतीय-बल आंदोलन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए न्यूनतावाद के विचार को अस्वीकृत करता है। तृतीय-बल आंदोलन के मनोवैज्ञानिक "स्वयं" पर जोर देते हैं, जो व्यक्तित्व की पूर्ति के विकास को प्रेरित करता है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय है। इसके लिए, तृतीय-बल आंदोलन के मनोवैज्ञानिकों का सुझाव है कि व्यक्तियों को सुखवादी संतुष्टि से परे जाने की आवश्यकता है। इस इकाई में, आप उन घटनाओं के बारे में जानेंगे जिनके परिणामस्वरूप तृतीय बल आंदोलन का उदय हुआ तथा अंत में मानवतावादी मनोविज्ञान एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के रूप में स्थापित हुआ। मैसलो, रोजर्स, फ्रैंकल एवं रोलो मे का योगदान पर वर्तमान इकाई में चर्चा की जाएगी।

11.1 तृतीय-बल आंदोलन का पूर्ववृत्त

तृतीय-बल आंदोलन का पूर्ववृत्त अन्य मनोवैज्ञानिकों के शोध में पाया जा सकता है। क्रियापरक मनोविज्ञान के संस्थापक "फ्रांज ब्रेंटानो" के तृतीय बल आंदोलन के पूर्ववृत्त में से एक का पता लगाया जा सकता है। ब्रेंटानो ने वुण्टीयन मनोविज्ञान का विरोध किया था एवं गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का अनुमान लगाया। ब्रेंटानो ने वुण्ट के तत्ववाद एवं अपचयवाद के साथ पूरी तरह से असहमति अभिव्यक्त करी। उन्होंने इसके स्थान पर यह प्रस्तावित किया कि चेतना का अध्ययन मोलर की गुणवत्ता के रूप में किया जाना चाहिए अर्थात् एक इकाई के रूप में, इसे छोटे तत्वों में विभाजित किए बिना।

उसी प्रकार से, विलियम जेम्स ने चेतना की एक धारा के विचार का सुझाव देते हुए तत्ववाद का विरोध किया तथा एक इकाई के रूप में सचेत अनुभवों का अध्ययन करने को महत्व दिया। इसके अतिरिक्त, गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने इस बात को भी महत्व दिया कि मनोविज्ञान शास्त्र की चेतना को समग्र रूप में देखना चाहिए।

तृतीय-बल आंदोलन की जड़ें एडलर, हार्नी जैसे मनोविश्लेषकों तथा अन्य पश्च-फ्रायडवादी सिद्धांतकारों के कार्यों में भी पाई जा सकती हैं। सिगमंड फ्रायड के विपरीत, उन्होंने सुझाव दिया कि मनुष्य सचेत प्राणी हैं। उनके अनुसार, व्यक्तियों के पास अपने व्यक्तित्व को आकार देने की रचनात्मक शक्ति होती है। तृतीय-बल के आंदोलन पर सीधा प्रभाव रूमानीवाद के दर्शन में पाया जा सकता है। प्रकृतिवादियों ने अनुभववादियों का विरोध यह सुझाव देते हुए किया कि मनुष्य केवल यांत्रिक तरीके से व्यवहार करने वाली मशीनों से अधिक है। वे तर्कवादियों से भी असहमत थे कि मानव व्यवहार को तार्किक एवं तर्कसंगत प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता है। प्रकृतिवादियों के लिए, मानव स्वभाव को व्यक्तिगत, व्यक्तिपरक भावनाओं तथा अनुभवों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। उनके अनुसार, प्रकृति में मानव स्वाभाविक रूप से अच्छा है। स्वतंत्रता को महत्व देते हुए, उनका मानना है कि मनुष्य सामाजिक सोच वाला हो सकता है, और एक संतुष्ट जीवन जी सकता है। रूमानीवादी लोगों ने आगे सुझाव दिया कि यदि लोग आत्म-विनाश में लिप्त हैं तो यह केवल सामाजिक शक्तियों द्वारा प्राकृतिक आवेगों में हस्तक्षेप करने के कारण होता है।

यह दर्शन एवं मनोविज्ञान में पहले के सोच तथा विचार थे जिनके प्रभाव के कारण तृतीय-बल आंदोलन उभर कर सामने आया।

11.2 मानवतावादी मनोविज्ञान

1940-1950 के दशक में उभरे मानवतावादी मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान के दो मौजूदा प्रमुख विचारधाराओं (मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद) का विरोध किया। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए व्यवहारवाद बहुत संकीर्ण एवं कृत्रिम है। उनके लिए, बस प्रत्यक्ष व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करना कुछ ऐसा है जो अमानवीय है एवं मनुष्य को जानवरों तथा मशीनों के बराबर खड़ा कर देता है। वे इस विचार से असहमत थे कि मानव व्यवहार नियतात्मक है एवं यह भी सुझाव दिया कि मानव केवल पर्यावरणीय प्रोत्साहन की प्रतिक्रिया करते हुए मानव व्यवहार की प्रकृति को सीमित करता है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि मानव व्यवहार को उद्देश्य के रूप में नहीं देखा जा सकता है, इसे मात्रा, प्रोत्साहन एवं प्रतिक्रिया की इकाइयों तक सीमित नहीं किया जा सकता है। इसके कारण उन्होंने अनुभव किया कि मानवों का प्रयोगशाला प्रणाली में अध्ययन नहीं किया जाना चाहिए।

मानवतावादी मनोविज्ञान केवल मानसिक बीमारी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मनोविश्लेषण का विरोध करता है। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि केवल तंत्रिका एवं मनोचिकित्सा का अध्ययन करके मनोविश्लेषण मानव के कई सकारात्मक गुणों की अवहेलना एवं व्यक्तित्व को मानव प्रकृति के गहरे पक्ष तक सीमित कर रहा है। ऐसा करने से, मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों का मानना था कि मनोविश्लेषण मानव की कई शक्तियों तथा गुणों को अनदेखा कर रहा है।

इसलिए, व्यवहारवाद एवं मनोविश्लेषण में उपर्युक्त सीमाओं को इंगित करके मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन करने का इरादा किया, जो उन्होंने अनुभव किया कि मानव प्रकृति के उपेक्षित पहलू हैं। अब्राहम मैस्लो एवं कार्ल रोजर्स को मनोविज्ञान में मानवतावादी आंदोलन का अग्रणी माना जाता है।

11.2.1 अब्राहम मैस्लो

मनोविज्ञान में मानवतावादी आंदोलन के पीछे अब्राहम मैस्लो की प्रमुख भूमिका थी। वह इसे अकादमिक सम्मान देने में भी सफल हुए। इसके कारण, मैस्लो को अक्सर मानवतावादी मनोविज्ञान के संस्थापक के रूप में संदर्भित किया जाता है। मैस्लो का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी क्षमताओं को पूरी तरह से विकसित करने एवं वास्तविक क्षमता का एहसास करने की एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति को आत्म-बोध कहा जाता है। यह मैस्लो के अनुसार सबसे अधिक मानवीय आवश्यकता एवं एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्तिगत क्षमताओं का सक्रिय उपयोग अंतरभूत है, और यह व्यक्ति की क्षमता की पूर्ति करता है। यह अधिक से अधिक बनने की इच्छा है जो एक आदर्श है और यह वह सब कुछ बनना है जो एक बनने में सक्षम है।



चित्र 11.1 अब्राहम मैस्लो
(1908–1970)

स्रोत:

www.verywellmind.co

बॉक्स 11.1 : अब्राहम मैस्लो

मानवतावादी मनोविज्ञान के संस्थापक माने जाने वाले अब्राहम मैस्लो शुरू में वाटसनोनियन व्यवहारवाद से अत्यधिक प्रभावित थे। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण के बारे में पढ़ने के बाद उनकी रुचियां बदल गईं। पर्ल हार्बर हमला, 1941 में, मैस्लो के लिए एक जीवन बदलने वाली घटना बन गई। उन्हें इस हमले से गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने तब एक मनोविज्ञान विकसित करने का फैसला किया जो मानवता को बेहतर बनाने के बारे में था, तथा यह दिखाया कि मानव स्वभाव केवल नफरत और युद्ध के बारे में नहीं है।

पहले, उनके विचारों को बहुत अपरंपरागत माना जाता था। लेकिन बाद में, उन्हें स्वीकृति की एक विस्तृत श्रृंखला मिली। उन्होंने ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका में बिताए अपने समय के दौरान अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत किया। यहां तक कि उन्होंने लोकप्रिय पुस्तकों की एक श्रृंखला में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। 1960 के दशक तक, मैस्लो सेलिब्रिटी बन गए। 1967 में, उन्हें अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का अध्यक्ष चुना गया।

भले ही मैस्लो के विचारों को अच्छी तरह से प्राप्त किया गया हो, लेकिन उसके विरुद्ध कुछ आलोचनाएं हुई थी। मैस्लो द्वारा प्रयोग की गई अनुसंधान पद्धति एवं आंकड़ों को आलोचना का सामना करना पड़ा था। यह तर्क दिया गया था कि मैस्लो द्वारा उपयोग किए गए नमूने का आकार सामान्यीकृत करने के लिए बहुत छोटा है। यह भी तर्क दिया गया था कि मैस्लो ने अपने प्रतिभागियों को मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ के रूप में वर्गीकृत करने के लिए एक बहुत ही व्यक्तिपरक मानदंड का उपयोग किया। वहाँ भी मैस्लो ने एक बहुत अस्पष्ट तरीके से अपनी शर्तों को परिभाषित किया था।

मैस्लो इन आलोचनाओं से सहमत थे, परंतु यह भी तर्क दिया कि आत्म-सिद्धि का अध्ययन करने का कोई अन्य तरीका नहीं था। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि उनका शोध प्रारंभिक है तथा उन्हें लगा कि उनके निष्कर्षों को भविष्य में कुछ समय के अंदर सिद्ध कर दिया जाएगा। मैस्लो के सिद्धांत में अनुभवजन्य साक्ष्य सीमित हैं, परंतु इसके बाद इसे बड़े पैमाने पर प्राप्त करने के लिए बंद नहीं किया गया। उनके दृष्टिकोण का मनोविज्ञान से परे भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उनका सिद्धांत कॉर्पोरेट क्षेत्रों, शिक्षा, चिकित्सा तथा मनोचिकित्सा में लागू किया गया है। कई अधिकारियों एवं प्रबंधकों का मानना है कि कार्यस्थल के लिए आत्म-सिद्धि एक महत्वपूर्ण अवधारणा है,

तथा इसे नौकरी की संतुष्टि के लिए एक उपयोगी प्रेरक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है।

मैसलो को अक्सर सकारात्मक मनोविज्ञान के रूप में ज्ञात समकालीन दृष्टिकोण के अग्रदूत होने का श्रेय दिया जाता है। उनके दृष्टिकोण के कुछ पहलुओं को सकारात्मक मनोविज्ञान आंदोलन में पाया जा सकता है। इससे पता चलता है कि मैसलो की विरासत कई दशकों से जारी है।

मैसलो ने आगे सुझाव दिया कि आत्म-वास्तविक आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पहले उन आवश्यकताओं को पूरा करना होगा जो पदानुक्रम में कम हैं। जब एक आवश्यकता पूरी हो जाती है, तब व्यक्ति को पदानुक्रम पर अगली आवश्यकता के लिए प्रेरित किया जाता है।



चित्र 11.2: मैसलो की आवश्यकताओं का पदानुक्रम

स्रोत: www.medium.com

इस प्रकार, आवश्यकताएँ विषम होती हैं। जरूरतों के पदानुक्रम पर सबसे कम शारीरिक आवश्यकताएँ हैं, जिनमें भूख, प्यास, नींद एवं सेक्स सम्मिलित हैं। पदानुक्रम में बढ़ते हुए आगे सुरक्षा की आवश्यकताएँ हैं। इनमें सुरक्षा, स्थिरता तथा बचाव की आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं। आगे पदानुक्रम में अपनेपन एवं प्यार की आवश्यकताएँ हैं जिसमें देखभाल तथा संबद्धता की आवश्यकता सम्मिलित है। आगे पदानुक्रम में दूसरों एवं स्वयं के सम्मान की आवश्यकता है जिसमें आत्म-सम्मान, सम्मान, प्रतिष्ठा तथा उपलब्धि की आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं। अंत में उच्चतम स्तर पर आत्म-सिद्धि की आवश्यकता है।

मैसलो द्वारा वर्णित आत्म-सिद्धि की अवधारणा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद दोनों द्वारा प्रस्तावित कार्य परंपरा से हटकर है। इसके स्थान पर यह एक दूरदर्शी दृष्टिकोण को दर्शा रहा है। मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद दोनों का सुझाव है कि व्यवहार का विशिष्ट कारण है - मनोविश्लेषण के संदर्भ में, अचेतन तथा बचपन के अनुभव, एवं व्यवहारवाद के संदर्भ में पर्यावरण उत्तेजनाओं तथा सुदृढीकरण।

मैस्लो स्पष्ट रूप से इन दो दृष्टिकोणों से असहमत था जो बताता है कि व्यक्तियों का व्यवहार एक कारण से संचालित नहीं होता लेकिन भविष्य में वे जो हासिल करना चाहते हैं इससे होता है, वह यह है कि व्यक्ति भविष्य की स्थिति की ओर प्रयास करते हैं न कि उस चीज के लिए जो काल में हो चुकी है। इस परिप्रेक्ष्य को *उद्देश्यवाद* के रूप में जाना जाता है। मैस्लो द्वारा समझाया गया उद्देश्यवादी परिप्रेक्ष्य, भविष्य की स्थिति के संबंध में व्यवहार की व्याख्या करने के बारे में है, एक ऐसा उद्देश्य जिसके लिए व्यक्ति प्रयास करते हैं। यह उद्देश्यवादी परिप्रेक्ष्य उन पारंपरिक भौतिक विज्ञानों से दूर हो जाता है जिनका मनोविज्ञान पीछा करता था। मैस्लो के अनुसार, वैज्ञानिक स्पष्टीकरण पूरी तरह से प्रकृति में मनोवैज्ञानिक हैं तथा शरीर विज्ञान में नहीं पाए जा सकते हैं।

आत्म-सिद्धि की अवधारणा के बारे में एक विशेषता प्रत्येक व्यक्ति को अपने तरीके से विशिष्ट होने की धारणा होती है। आत्म-सिद्धि की स्थिति, मैस्लो के अनुसार, एक बेहतर व्यक्ति होने के बारे में नहीं है। यह वास्तव में एक व्यक्ति होने के बारे में है जैसा वह व्यक्ति को होना चाहिए। यह इंगित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है, इस अर्थ में कि वे वह पोषण जाने के बजाय आनुवांशिक रूप से निर्धारित होता है।

मैस्लो ने आत्म-सिद्धि को एक व्यक्ति के रूप में वास्तविक व्यक्ति में विकसित करने की आवश्यकता के रूप में वर्णित किया है जो कि वह वास्तव में है। एक व्यक्ति के लिए वास्तविक व्यक्ति दूसरे से अलग होगा, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए आत्म-सिद्धि की प्रक्रिया को अद्वितीय बनाता है। आत्म-सिद्धि केवल इसलिए किसी विशेष व्यक्ति से संबंधित व्यवहार के संबंध में देखा जा सकता है। मैस्लो ने उन व्यक्तियों का अध्ययन किया जिन्होंने उसके अनुसार, आत्म-सिद्धि की आवश्यकता को पूरा किया था। मैस्लो ने ऐसे लोगों को *मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति* कहा। अपने शोध के लिए, मैस्लो ने पाया कि ऐसे लोग कई विशेषताओं को साझा करते हैं। मैस्लो ने पाया कि ऐसे लोग वास्तविकता का उद्देश्य धारणा, पूर्ण आत्म-स्वीकृति, काम के प्रति प्रतिबद्धता, सादगी, स्वायत्तता तथा स्वतंत्रता की आवश्यकता, शिखर अनुभव, सहानुभूति, गैर-अनुरूपता, रचनात्मकता तथा सामाजिक हित की एक उच्च डिग्री रखते हैं। मैस्लो ने यह भी कहा कि आत्म-सिद्धि प्राप्त लोग न्यूरोसिस से मुक्त होते हैं और उनकी एक प्रतिशत से भी कम आबादी हैं।

मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के अध्ययन को महत्व देकर मैस्लो ने उन लोगों के साथ काम नहीं किया जिन्हें मानसिक रूप से बीमार माना जाता है। ऐसा करने में वह इलाज के बजाय सुधार के पहलुओं को महत्व दे रहा था। इस प्रकार, वह मानव व्यवहार के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर रहा था।

मानव के सकारात्मक पहलुओं का महत्व, बाद में आधुनिक आंदोलन पर प्रभाव पड़ा, जिसे सकारात्मक मनोविज्ञान के रूप में जाना जाता है। *सकारात्मक मनोविज्ञान* जीवन की अच्छी बातों पर ध्यान केंद्रित करता है, बजाय इसके कि बुरी चीजों को बदल दिया जाए। 1950 के दशक में, मैस्लो ने "सकारात्मक मनोविज्ञान" शब्द का भी इस्तेमाल किया था। हालांकि, मैस्लो ने ऐसे लोगों के साथ काम नहीं किया, जिन्हें मानसिक बीमारी थी, उनके विचारों का इस्तेमाल उस संदर्भ में अन्य लोगों द्वारा किया गया था। एक व्यक्ति जिसने उनके विचारों को आगे बढ़ाया एवं मानसिक बीमारी वाले लोगों के संबंध में उनका उपयोग किया, वह कार्ल रोजर्स है।

11.2.2 कार्ल रोजर्स

कार्ल रोजर्स ने व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण नामक एक दृष्टिकोण विकसित किया। इस दृष्टिकोण से, रोजर्स ने व्यक्तित्व के अपने सिद्धांत को व्युत्पन्न किया जो एकल प्रेरक कारक को महत्व देता है, जो कि मैस्लो के आत्म-सिद्धि के कुछ विचारों के समान है। हालांकि, मैस्लो की तरह, रोजर्स ने मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों का अध्ययन करके अपने सिद्धांत को आधार नहीं बनाया। इसके बजाय, वह उन व्यक्तियों का अध्ययन करके अपने सिद्धांत पर आधारित था जो उपचार के लिए उनके परामर्श केंद्र में आए थे।

रोजर्स द्वारा प्रस्तावित दृष्टिकोण का नाम - व्यक्ति-केंद्रित - इंगित करता है कि परिवर्तन की जवाबदेही चिकित्सक के बजाय व्यक्ति पर केंद्रित है। रोजर्स ने दृढ़ता से माना कि व्यक्तियों में अपने विचारों एवं व्यवहार को बदलने की क्षमता है, एक सकारात्मक बदलाव लाती है, जिससे व्यक्तिगत विकास होता है। रोजर्स के अनुसार, व्यक्तियों को हमेशा अचेतन या बचपन के अनुभवों द्वारा निर्देशित नहीं किया जाता है, जैसे मनोविश्लेषक ने सुझाव दिया था। उन्होंने अनुभव किया कि व्यक्तित्व को सचेत प्रक्रियाओं द्वारा आकार दिया जा सकता है, जैसे व्यक्ति वर्तमान को देखता है।

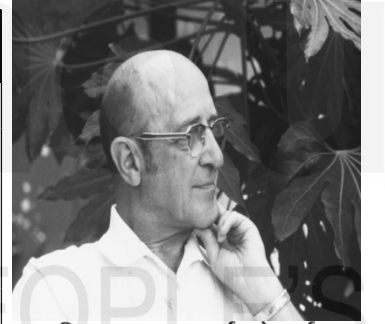
बॉक्स 11.2 : कार्ल रोजर्स

कार्ल रोजर्स ने 1931 में कोलंबिया विश्वविद्यालय के टीचर्स कॉलेज से नैदानिक एवं शैक्षिक मनोविज्ञान में अपनी पीएचडी की थी। उन्होंने 1940 में अपने शैक्षणिक जीवन की शुरुआत। यह वह समय था जब रोजर्स ने अपने सिद्धांत एवं मनोचिकित्सा के विधि को विकसित करना शुरू किया।

मनोविज्ञान के अनुशासन में रोजर्स का दृष्टिकोण अत्यधिक प्रभावशाली रहा है। स्वयं पर बहुत महत्व देने के साथ, मनोचिकित्सा एवं व्यक्तित्व दोनों के संबंध में उनके सिद्धांत को अच्छी तरह से प्राप्त किया गया है। रोजर्स के खिलाफ प्रमुख आलोचना उनकी विशिष्टता की कमी है। रोजर्स, अपने सिद्धांत में, उन सहज संभावनाओं के बारे में विशिष्टता नहीं देते हैं जो व्यक्तियों को स्वयं-बोध प्राप्त करने में होती हैं। रोजर्स को व्यक्तिपरक सचेतन अनुभवों पर बहुत महत्व देने तथा अचेतन ताकतों को पूरी तरह से बाहर करने के लिए भी आलोचना की गई है।

फिर भी, सिद्धांत एवं चिकित्सा को पर्याप्त अनुसंधान साक्ष्य द्वारा समर्थित किया गया है एवं व्यापक रूप से नैदानिक सेटिंग्स में उपयोग किया जाता है। रोजर्स संभावित मानव क्षमता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं। उनका काम उस समग्र प्रवृत्ति के अंतर्गत आता है जिसे मनोविज्ञान के मानवीकरण के रूप में सुझाया गया है।

रोजर्स के दृष्टिकोण को कई अन्य क्षेत्रों में लागू किया गया है, न कि केवल संवेगात्मक रूप से परेशानी के इलाज के लिए। लोगों की स्वयं-छवि को बढ़ाने के लिए उनके दृष्टिकोण का प्रमुख रूप से उपयोग किया गया है। इसका उपयोग प्रशिक्षण प्रबंधकों, नैदानिक मनोवैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा परामर्शदाताओं के लिए भी किया जाता है। रोजर्स ने मनोविज्ञान के मानवीकरण को ज्ञात करने में प्रमुख योगदान दिया है। 1946 में, उन्हें अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। बाद में, उन्हें विशिष्ट वैज्ञानिक योगदान पुरस्कार एवं विशिष्ट पेशेवर योगदान पुरस्कार मिला।



चित्र 11.3: कार्ल रोजर्स
(1902–1987)

स्रोत:

www.verywellmind.com

रोजर्स ने सुझाव दिया कि *स्वयं* को अनुभव किया जाता है। स्वयं एक संगठित वैचारिक गेस्टाल्ट है जिसका अर्थ है कि यह एक संगठित संपूर्ण है, एवं छोटे तत्वों से नहीं बना है। इसके अलावा, स्वयं विकसित हो सकता है एवं बढ़ सकता है, एवं फिर भी अपनी पहचान बनाए रखता है। स्वयं, रोजर्स के अनुसार, वास्तविक स्वयं एवं *आदर्श स्वयं* के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है। *वास्तविक स्वयं* वह है जो व्यक्ति अनुभव करता है जो वह वास्तव में है, तथा *आदर्श स्वयं* वह है जो व्यक्ति बनना चाहता है।

वास्तविक स्वयं एवं आदर्श स्वयं या तो समान हो सकते हैं या वे एक दूसरे से बहुत भिन्न हो सकते हैं। जब वास्तविक एवं आदर्श स्वयं के बीच एक विसंगति होती है, तो यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत या खुद को होने वाले अनुभव एवं वास्तविक अनुभव के बीच विसंगति है। यह *असंगतता* के रूप में जाना जाता है। रोजर्स के अनुसार, असंगतता की स्थिति मनोवैज्ञानिक रूप से अस्वस्थ है, एवं चिंता की ओर ले जाती है। असंगतता की चिंता से निपटने के लिए, लोग रक्षा तंत्र का उपयोग करते हैं। रोजर्स ने दो प्रकार के रक्षा तंत्रों का सुझाव दिया – विकृति एवं अस्वीकरण। विकृति में स्वयं के वैकल्पिक दृष्टिकोण को विकसित करना अंतरभूत है, जो किसी को लगता है एवं वास्तविक अनुभव के बीच स्थिरता बनाए रखना है। इससे व्यक्ति स्वयं के बारे में तर्कहीन सकारात्मक विचार या तर्कहीन नकारात्मक विचार रख सकता है। अस्वीकरण के रक्षा तंत्र में अनुभव को पूरी तरह से नकारना शामिल है।

रोजर्स स्पष्ट रूप से कहते हैं कि रक्षा तंत्र का उपयोग अस्वास्थ्यकर है। अधिक से अधिक असंगतता, अधिक रक्षा तंत्र का उपयोग किया जाता है, एवं अधिक से अधिक अस्वस्थ व्यक्ति में अंतरभूत हो जाता है। इसलिए, रोजेरीयन थेरेपी का एक प्रमुख उद्देश्य – व्यक्ति जो अनुभव करता है एवं वास्तविक अनुभव (वास्तविक आत्म और आदर्श स्वयं के बीच एक कम विसंगति) के बीच विसंगति को कम करना है। विसंगति जितनी कम होगी, व्यक्ति उतना ही अधिक *संगतता* की स्थिति में होगा, जो एक मनोवैज्ञानिक स्वस्थ स्थिति है। इसके अतिरिक्त, अधिक से अधिक संगतता की स्थिति का अर्थ यह है कि व्यक्ति के आत्म-सिद्धि प्राप्ति की अधिक सम्भावना है।

रोजर्स ने सुझाव दिया कि आत्म-सिद्धि का तरीका व्यक्तित्व में प्रमुख प्रेरक शक्ति है। आत्म-सिद्धि की यह प्रवृत्ति जन्मजात है, लेकिन बचपन के अनुभव एवं अध्ययन इसमें भूमिका निभा सकते हैं। रोजर्स के अनुसार, अपने या अपने माता-पिता के साथ बच्चे का संबंध आत्म-सिद्धि में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह माता-पिता का बच्चे से संबंध है जो बच्चे के स्वयं के विकास में महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि बच्चे की प्यार की आवश्यकता माता-पिता द्वारा अप्रतिबंधित रूप से संतुष्ट है, तो बच्चा अप्रतिबंधित रूप से सकारात्मक संबंध का अनुभव करता है। यह बच्चे के स्वस्थ विकास को सक्षम बनाता है।

यदि बच्चे के लिए माता-पिता का प्यार उचित व्यवहार पर प्रतिबंधित है, तो बच्चा प्रतिबंधित सकारात्मक संबंध का अनुभव करता है। इस वजह से, बच्चा तब माता-पिता के मनोभाव को अनदेखा कर देता है एवं माता-पिता की अस्वीकृति से बचने की प्रवृत्ति विकसित करता है। यह स्वयं को पूरी तरह से विकसित नहीं होने की ओर बढ़ावा देता है। बच्चा स्वयं के सभी दृष्टिकोणों को व्यक्त नहीं करता है इस डर से कि यह कुछ अस्वीकृति ला सकता है। इसलिए, रोजर्स के लिए, बच्चे के प्रति माता-पिता से अप्रतिबंधित सकारात्मक संबंध स्वस्थ मनोवैज्ञानिक विकास के लिए प्राथमिक

आवश्यकता है। माता-पिता को बच्चे के व्यवहार का विचार किए बिना बच्चे के प्रति प्यार एवं स्वीकृति प्रदर्शित करनी चाहिए। यदि बच्चा इस तरह के अप्रतिबंधित सकारात्मक संबंध प्राप्त करता है, तो व्यक्ति को आत्म-सिद्धि की संभावना अधिक होती है।

रोजर्स ने सुझाव दिया कि आत्म-सिद्धि मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का उच्चतम स्तर है। ऐसे व्यक्ति को *पूरी तरह से कार्यशील व्यक्ति* भी कहा जाता है। रोजर्स के अनुसार, एक पूरी तरह से कार्यशील व्यक्ति में निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

- 1) सभी अनुभव के लिए खुलापन
- 2) हर पल पूरी तरह से जीने की प्रवृत्ति
- 3) किसी कारण या दूसरों की राय के बजाय एक स्वयं की प्रवृत्ति द्वारा निर्देशित होने की क्षमता
- 4) विचार एवं कर्म में स्वतंत्रता की भावना
- 5) रचनात्मकता की एक उच्च डिग्री

पूरी तरह से कार्यशील व्यक्ति को वास्तव में वर्णित करने के बजाय, रोजर्स ने व्यक्ति को "वास्तविक" के रूप में वर्णित किया। यह इंगित करना है कि स्वयं-विकास एक सतत प्रक्रिया है तथा यह कभी समाप्त नहीं होती है।

बॉक्स 11.3 : मानवतावादी मनोविज्ञान: मनोविज्ञान की सम्प्रदाय नहीं है

मानवतावादी मनोविज्ञान का मनोविज्ञान विषय पर भारी प्रभाव पड़ा। इसके व्यापक प्रभाव के बाद भी, मानवतावादी मनोविज्ञान को मनोविज्ञान का एक उचित सम्प्रदाय नहीं माना जाता है।

इसका एक कारण यह है कि अधिकांश मानवतावादी मनोवैज्ञानिक नैदानिक अभ्यास में अंतरभूत थे, एवं शिक्षाविद नहीं थे। इसके कारण वे बहुत अधिक शोध में शामिल नहीं थे तथा बहुत सारे शोधपत्र प्रकाशित नहीं कर सके। विश्वविद्यालयों में काम नहीं करने के कारण, वे अपनी परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए अगली पीढ़ी के छात्रों को प्रशिक्षित नहीं कर सके। मानवतावादी मनोविज्ञान के दृष्टिकोण को गैर-वैज्ञानिक भी माना जाता है, जिसे कई मनोवैज्ञानिकों की भारी आलोचना मिली है।

मानवतावादी मनोविज्ञान को मनोविज्ञान का एक सम्प्रदाय नहीं माना जाता है, इसका एक बड़ा कारण यह है कि मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों को अपने विचारों को प्रस्तावित करने में थोड़ी देर हुई। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रचारित विचार, वास्तव में बाद के मनोविश्लेषक द्वारा उनके बारे में बड़े पैमाने पर लिखे जा रहे थे। मानवतावादी मनोविज्ञान के विचार एवं अवधारणाएं जैसे कि *स्वतंत्र इच्छा*, *स्वयं आदर्श*, *सकारात्मक संबंध*, *प्रेम*, *संबद्धता*, आदि के बारे में बहुत पहले नव-फ्रायडियन एवं पश्च-फ्रायडियन जैसे अल्फ्रेड एडलर, कारन होर्ने, हैरी स्टैक सुलिवन, हेंज कोहुत एवं एरीक फ्रॉम ने बात की है।

मनोविज्ञान के कई इतिहासकारों का यह भी सुझाव है कि मैस्लो के बजाय एडलर को पहले मानवतावादी मनोवैज्ञानिक माना जाना चाहिए। यह एडलर की सामाजिक रुचि के बारे में अवधारणा थी जो मानव व्यवहार के सकारात्मक पहलुओं के बारे में लाया गया था, जिसे बाद में मानवतावादी मनोवैज्ञानिक महत्व दे रहे थे।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) तृतीय-बल आंदोलन के दो अलग-अलग भावों के नाम बताइए।

.....
.....
.....
.....

2) मनोविज्ञान में मानवतावादी आंदोलन के पीछे प्रमुख प्रभाव किसका है?

.....
.....
.....
.....

3) रोजर्स के दृष्टिकोण को व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित क्यों किया जाता है?

.....
.....
.....
.....

4) वास्तविक स्वयं एवं आदर्श स्वयं के मध्य क्या अंतर है?

.....
.....
.....
.....

5) संगतता एवं असंगतता के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....

उत्तर : 1) मानवतावादी मनोविज्ञान एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान; 2) अब्राहम मैस्लो

11.3 अस्तित्ववादी मनोविज्ञान

मानवतावादी –
आस्तित्ववादी
मनोविज्ञान (तृतीय
बल आंदोलन)

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का मूल यह है कि व्यक्ति विकल्पों की निरंतर उत्तराधिकार के माध्यम से जीवन की दिशा को परिभाषित करने के लिए स्वतंत्र है लेकिन यह स्वतंत्रता व्यक्तिगत निर्णयों के परिणामों के लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व भी देती है ताकि स्वतंत्रता पीड़ा एवं भय का एक स्रोत हो।

द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में अस्तित्ववादी मनोविज्ञान उभरने लगा। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान **सोरेन कीर्कगार्ड, फ्रेडरिक नीत्शे, मार्टिन हाइडेगर** और **जीन पॉल सारत्रे** जैसे अस्तित्ववादियों के दर्शन में निहित है। पहले अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक एवं मनोचिकित्सक भी यूरोपीय थे, तथा इनमें **लुडविग बिन्सवांगर, मेडार्ड बॉस** एवं **विक्टर फ्रैंकल** अंतरभूत थे। लगभग 50 वर्षों तक अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के सबसे प्रमुख प्रवक्ता रोलो मे थे।

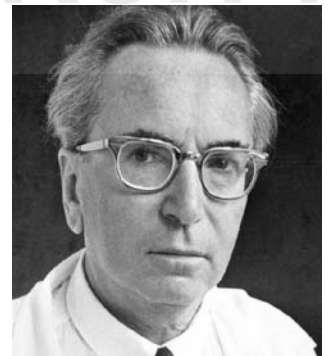
11.3.1 विक्टर फ्रैंकल

विक्टर फ्रैंकल ने सुझाव दिया कि मानव व्यवहार विशिष्ट लक्ष्यों की दिशा में प्रयास करके निर्देशित होता है। वह पहले के सिद्धांतवादी सिद्धांतों से सहमत नहीं थे। उन्होंने सुझाव दिया कि मानव परिवर्तन की स्थिति को कम करने के लिए प्रेरित नहीं होता है। वह विशेष रूप से सिगमंड फ्रायड के व्यक्तियों के सिद्धांत को प्रभावित करता है जिससे वे आवेगों को कम करते हैं, तथा आनंद सिद्धांत द्वारा निर्देशित होते हैं। फ्रैंकल ने सुझाव दिया कि परिवर्तन को कम करने के बजाय, और आंतरिक असुविधा से धक्का दिया जा रहा है, व्यक्तियों को वास्तव में भविष्य की स्थिति की ओर खींचा जाता है।

बॉक्स 11.4 : विक्टर फ्रैंकल

ऑस्ट्रियाई मनोचिकित्सक एवं मनश्चिकित्सक विक्टर फ्रैंकल ने उद्धोधक चिकित्सा के दृष्टिकोण को विकसित किया। उद्धोधक चिकित्सा को वीयानीज मनोचिकित्सा के तीसरे सम्प्रदाय के रूप में जाना जाता है। वीयानीज मनोचिकित्सा के पहले सम्प्रदाय को सिगमंड फ्रायड के दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है, तथा वीयानीज मनोचिकित्सा के सम्प्रदाय स्कूल को अल्फ्रेड एडलर के दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। फ्रैंकल के अनुसार, व्यक्तियों का मुख्य प्रेरणा जीवन में अर्थ ढूँढना है, तथा इस प्रकार, उन्होंने सुझाव दिया कि उनके दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य लोगों को जीवन में उस अर्थ को खोजने में मदद करना है।

चिकित्सा में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने के बाद, 1930 में, फ्रैंकल ने पहली बार 1938 तक वियना में एम स्टीनहॉफ मनोरोग अस्पताल में काम किया, जिसे नाज़ी राज्य-हरण के कारण इसे बंद होना पड़ा। वह वियना में रोथ्सचाइल्ड अस्पताल में मुख्य न्यूरोलॉजिस्ट बन गए। 1942 के दशक में जब यहूदी-विरोध में वृद्धि हुई। तब फ्रैंकल यहूदी होने के नाते अपने परिवार के साथ नाज़ी बंदी शिविरों में ले जाया गया। ये उनके लिए सबसे अधिक परेशान करने वाले समय थे, क्योंकि उस पीड़ा के साथ, जिसका सामना उन्होंने खुद किया था, उनके परिवार के सदस्य, पिता, माँ तथा उनकी पत्नी कष्टों से बच नहीं सके एवं वे सभी गुजर गए।



चित्र 11.4: विक्टर फ्रैंकल
स्रोत:
www.brainpickings.com

उन समयों के दौरान फ्रैंकल ने जीवन में अर्थ के महत्व को अनुभव किया, एवं उद्धोधक चिकित्सा के विचार के साथ आए। अपनी टिप्पणियों के आधार पर, तथा नाजी शिविरों में अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर, फ्रैंकल ने सुझाव दिया कि जो लोग दुख में अर्थ प्राप्त कर सकते हैं, वे ही हैं जो इससे बच सकते हैं।

मुक्ति के बाद, फ्रैंकल वियना लौट आए। 1946 में, फ्रैंकल ने मनुष्य की खोज के लिए क्लासिक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने नाजी शिविरों में अपने अनुभवों के बारे में लिखा तथा उद्धोधक चिकित्सा के अपने दृष्टिकोण का वर्णन किया। फ्रैंकल का यह काम सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से एक बन गया है जिसने कई अलग-अलग भाषाओं में लाखों प्रतियां बेची हैं।

फ्रैंकल ने 1990 तक वियना विश्वविद्यालय में पढ़ाया। उन्होंने अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाया। अपनी मृत्यु के कुछ महीने पहले, 1997 में, फ्रैंकल ने अपनी पुस्तक, "मैन्स सर्च फॉर अल्टीमेट मीनिंग" प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने जीवन में अर्थ के विचारों का वर्णन किया जो कि पहले की तुलना से बहुत अधिक गहराई में था। 1992 में, विएना में, विक्टर फ्रैंकल इंस्टीट्यूट की स्थापना हुई थी जिसका उद्देश्य फ्रैंकल की विरासत को आगे बढ़ाना है।

फ्रैंकल के अनुसार, जिन लक्ष्यों के लिए लोग प्रयास कर रहे हैं, उनमें से एक का जीवन का अर्थ है, जिसे अर्थ इच्छा के रूप में संदर्भित किया गया है। फ्रैंकल ने जीवन को तीन अलग-अलग तरीकों से वर्गीकृत किया। फ्रैंकल के अनुसार, पहला प्रकार का अर्थ, एक की उपलब्धियों से लिया गया अर्थ है, तथा जो मानव दुनिया के लिए करता है। फ्रैंकल के अनुसार, इसमें रचनात्मक प्रयास एवं कला के कार्य भी शामिल हैं। फ्रैंकल ने सुझाव दिया कि एक व्यक्ति जो कार्य करता है, वह जीवन को अर्थ देता है। दूसरे प्रकार का अर्थ दुनिया के साथ अलग-अलग अनुभवों से लिया गया है। इनमें सभी प्रकार के प्राकृतिक अनुभव, प्रकृति का आनंद, साथ ही प्रेम की भावनाओं से जुड़े अनुभव अंतरभूत हो सकते हैं। फ्रैंकल के अनुसार तीसरे प्रकार का अर्थ है जो व्यक्ति के दुख के प्रति दृष्टिकोण से आता है, तथा उन चीजों से आता है जो बदला नहीं जा सकता। इस प्रकार के अर्थ उन अनुभवों से संबंधित हैं जो फ्रैंकल के पास थे जब वह नाजी बंदी शिविर में थे।

फ्रैंकल ने पाया कि दुख की ऐसी स्थितियों में, जो लोग अर्थ निकालते हैं, वे सबसे अच्छे तरीके से जीवित थे। उन्होंने दया, हास्य, तथा बदले की भावना को विकसित करके पीड़ित लोगों में अर्थ निकालते हैं। फ्रैंकल ने अनुभव किया कि तीसरे प्रकार का अर्थ दुख में गरिमा की भावना से जुड़ा है। फ्रैंकल के अनुसार, इस प्रकार का अर्थ मानव अनुभव के पारलौकिक स्वरूप से संबंधित है। जीवन में अर्थ के संबंध में, फ्रैंकल ने उद्धोधक के विचार की उत्पत्ति की। उद्धोधक चिकित्सा एक चिकित्सीय दृष्टिकोण है जो व्यक्तियों को जीवन में अर्थ खोजने में मदद करता है।

11.3.2 रोलो मे

रोलो मे का दृष्टिकोण प्रयोग पद्धति के अथवा उनके नैदानिक अनुभवों पर आधारित है। उन्होंने वर्तमान अनुभवों की दुनिया में रहने वाले लोगों को देखा जो आखिरकार स्वयं के लिए जवाबदेह हैं कि वे कौन बनते हैं। मे का मानना था कि कई लोगों के पास अपने भाग्य का सामना करने, इससे बचने तथा अपनी स्वतंत्रता को नकारने की बहादुरी नहीं है। ऐसा करने से वे अपनी जवाबदेही से बच जाते हैं। जब वे विकल्प बनाने के लिए तैयार नहीं होते हैं, तो वे स्वयं को खो देते हैं जिसके कारण वे

अर्थहीनता एवं अलगाव की भावना विकसित करते हैं। इसके विपरीत, स्वस्थ लोग अपने भाग्य का सामना करते हैं, अपनी स्वायत्तता को संजोते हैं, तथा अन्य लोगों के लिए भरोसेमंद होते हैं। वे निश्चित मृत्यु का एहसास करते हैं एवं वर्तमान समय में जीवन जीने की दुस्साहस रखते हैं।

रोलो मे ने इस स्वस्थ अवस्था को उस व्यक्ति से संबंधित किया जिसे उन्होंने *स्वस्थ व्यक्तिवाद* कहा। इन विशेषताओं ने सीमा को स्पष्ट करने में मदद की, आर्थिक विकास की गारंटी दी, एवं सभी की समृद्धि में वृद्धि की।

बॉक्स 11.5 : रोलो मे

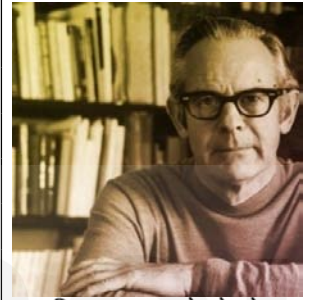
रोलो मे अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के प्रमुख समर्थकों में से एक है मे वर्ष 1932 में कम उम्र में उनके प्रारंभिक महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक था।

रोलो मे अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के प्रमुख समर्थकों में से एक थे। कम उम्र में, 1932 में, मे ने अपने सबसे शुरुआती गहरे प्रभावों में से एक को परिभाषित किया था। उन्होंने अल्फ्रेड एडलर के ग्रीष्मकालीन सेमिनार में से एक में भाग लिया था, तथा उनके लिए एक बहुत गहरी प्रशंसा हुई थी। उनका मानना था कि उन्होंने एडलर से मानव व्यवहार के बारे में बहुत कुछ सीखा है।

बाद में वाइट इंस्टीट्यूट ऑफ साइकियाट्री, साइकोअनलिसिस एवं साइकोलाजी, न्यूयॉर्क में मनोविश्लेषण का अध्ययन किया। वहाँ उन्होंने हैरी स्टैक सुलिवन, नव-फ्रायडियन एवं मनोविज्ञान के पारस्परिक दृष्टिकोण के अग्रणी से मुलाकात की। रोल्लो मे सुलिवन से बहुत प्रभावित थे, जो संस्थान के अध्यक्ष तथा संस्थापक थे। मे एरिक फ्रॉम, पश्च-फ्रायडियन एवं सबसे प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों में से एक से प्रभावित थे, जो वाइट इंस्टीट्यूट में संकाय सदस्य थे।

1949 में, कोलंबिया विश्वविद्यालय से रोल्लो मे ने 40 वर्ष की आयु में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। वह विश्वविद्यालय से नैदानिक मनोविज्ञान में पहले पीएचडी थे। अपने डॉक्टर की उपाधि प्राप्त करने से पहले, रोल्लो मे तपेदिक से पीड़ित थे, जिसने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल दिया था। उस समय, तपेदिक के लिए कोई उचित उपचार नहीं था। वे अपने जीवन के बारे में अनिश्चित थे। वे घबरा गए एवं उदास हो गए। यह इस समय के दौरान था कि उन्होंने सिगमंड फ्रायड, मनोविश्लेषण के संस्थापक एवं सोरेन कीर्केगार्ड, डेनिश अस्तित्ववादी दार्शनिक के लेखन का अध्ययन शुरू किया। उन्होंने मुख्य रूप से चिंता के बारे में उनके कार्यों को पढ़ा। मे उन दोनों से प्रभावित थे, लेकिन यह कीर्केगार्ड की चिंता का परिप्रेक्ष्य था जिससे वे पूरी तरह से स्थानांतरित हो गए।

ठीक होने के बाद, उन्होंने मनोचिकित्सा का शिक्षण, लेखन एवं अभ्यास जारी रखा। उन्होंने कई प्रभावशाली पुस्तकें लिखीं। पहली पुस्तक उनके शोध प्रबंध, *मिनिंग ऑफ ऐगजाइटी* (1950) पर आधारित थी। तीन साल बाद, उन्होंने *मेन सर्च फॉर हिम सेल्फ* (1953) लिखी। इस पुस्तक ने उन्हें बहुत पहचान दिलाई। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक *लव एंड विल* (1969) थी, जो उस समय एक राष्ट्रीय बेस्ट-सेलर थी।



चित्र 11.5: रोलो मे
स्रोत:

www.brainpickings.com

मे ने कई प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते, जिनमें अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन से मनोवैज्ञानिक प्रोफेशनल स्वर्ण पदक हैं जो पेशेवर मनोविज्ञान में उनके उत्कृष्ट जीवनकाल के योगदान के लिए पुरुस्कारित किया गया था।

स्वस्थ व्यक्तिवाद के अलावा, रोलो ने एक और प्रकार के व्यक्तिवाद को अस्वस्थ व्यक्तिवाद के रूप में बताया। अस्वस्थ व्यक्तिवाद में समुदाय की भावना नहीं होने के कारण व्यक्तियों के लिए गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं अंतरभूत हो जाते हैं। उनका मानना था कि लोग प्रतिस्पर्धा के अनुचित साधनों, यानी अति प्रतिस्पर्धात्मकता के प्रति अविकसित भाव रखते हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति को अपने साथी का गहरा दुश्मन बनाता है, जिससे गहरी पारस्परिक दुश्मनी एवं घृणा पैदा होती है। बदले में, यह आशंका एवं दूसरों से अलगाव को बढ़ाता है।

मे का यह भी मानना था कि अस्वस्थ व्यक्तिवाद में अत्यधिक आत्मनिर्भरता शामिल है, जो बहुत से व्यक्तियों को जरूरत पड़ने पर सहायता एवं मदद मांगने से दूर रखती है। इसके अलावा, इस भ्रष्ट स्वार्थ को कई व्यक्तियों के व्यवहार में प्रदर्शित किया जाता है, क्योंकि वे लगातार अपनी उपलब्धियों एवं भौतिक गुणों का पीछा करते हैं।

मे के अनुसार अस्वास्थ्यकर व्यक्तिवाद, व्यक्तियों को उनके जीवन में जटिल समस्याओं का सामना करवाता है, जिसके परिणामस्वरूप शून्यता की भावना अनुभव होती है। मे सुझाव देते हैं कि शून्यता की भावनाओं का अर्थ अधूरा या भावना की कमी नहीं है। इसके अलावा, यह शून्यता तब होती है जब कोई व्यक्ति शक्ति की कमी अनुभव करता है, जिसमें घटनाओं को नियंत्रण से परे माना जाता है। यह इस हद तक होता है कि व्यक्ति लक्ष्यहीन एवं दिशाहीन हो जाता है। वह दूसरों को प्रेरित करने, या अपने परिवेश में परिवर्तन लाने में असमर्थ हैं। इसके परिणामस्वरूप, गहन निराशा एवं संवेदनहीनता है। आखिरकार, जब व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं होता है, तो लोग अपनी इच्छा एवं भावनाओं को छोड़ देते हैं, तथा उदासीन हो जाते हैं।

मे ने आगे सुझाव दिया कि यह शून्यता दृढ़ित रूप से *अकेलेपन* से जुड़ी हुई है। शून्यता की भावना व्यक्ति को इस बात के बारे में उलझन में डालती है कि वह क्या चाहता है, क्या मानता है। ऐसे परिदृश्य में, व्यक्ति इस बात का अनुसरण करता है कि *अस्वस्थ समुदायी सांप्रदायिक अभिविन्यास* क्या है। इसमें, व्यक्ति दूसरों की तलाश में व्यर्थ की भावना से निपटने के लिए व्यर्थ प्रकारों से देख सकता है। जितना अधिक एक व्यक्ति दूसरों के साथ अलग-अलग भावनाओं को जारी करता है, वह उतना ही अलग एवं चिंतित हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, अकेलेपन की इस भावना में लोगों के साथ समारोहों की पेशकश भी समाविष्ट है। स्वाभाविक रूप से व्यक्ति इस तरह के समारोहों का हिस्सा बनने की इच्छा नहीं कर सकता है, लेकिन ऐसा करने की प्रवृत्ति होती है ताकि व्यक्ति खुद को यह सिद्ध करने का दबाव अनुभव करता है कि वे अलग-थलग नहीं हैं एवं एक दूसरों से जुड़ा हुए हैं। व्यक्तिगत स्वीकृति के लिए तरसता है, एवं अनुभव करता है कि यह केवल तभी हो सकता है जब वे हमेशा दूसरों के साथ जुड़ा रहे। दूसरों द्वारा स्वीकार किए जाने की यह भावना उस व्यक्ति को जीवित अनुभव कराती है। यह आरंभ में आराम का अनुभव दिलाता है, परंतु आगे जाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को खो देता है। वह व्यक्ति तब विकसित नहीं हो पाता है जिसे मे ने एक स्वस्थ समुदायी अभिविन्यास के रूप में संदर्भित किया है। एक स्वस्थ समुदायी अभिविन्यास लंबे समय

में अकेलेपन से निपटने में सहायता करता है। इसमें दूसरों की भलाई के लिए एक दृढ़ एवं वास्तविक चिंता विकसित करना सम्मिलित है।

मे ने सुझाव दिया कि अकेलेपन एवं खालीपन के अनुभव से चिंता की भावना पैदा होती है। जब वे अपने अस्तित्व के बारे में संज्ञान लेते हैं या इससे जुड़े कुछ मूल्य क्षतिग्रस्त हो सकते हैं, तो वह व्यक्ति चिंतित हो जाता है। में के अनुसार, चिंता व्यक्तिगत स्थिति है जिसमें व्यक्ति को पता चलता है कि उसका अस्तित्व नष्ट हो सकता है।

बाद में, मे ने चिंता को एक महत्वपूर्ण मूल्य के लिए खतरा बताया है। इसलिए, चिंता का परिणाम या तो इसकी अनुपस्थिति के बारे में जागरूकता या इसके अस्तित्व के लिए आवश्यक मूल्य के खतरे से हो सकता है। यह तब होता है जब व्यक्ति अपनी क्षमताओं को प्राप्त करने के मुद्दे का सामना करता है। इस टकराव से निष्क्रियता एवं टूटने की स्थिति पैदा हो सकती है, परंतु इससे विकास एवं परिवर्तन भी हो सकता है। जब चिंता विकास एवं परिवर्तन की ओर ले जाती है, तो इसे सामान्य चिंता कहा जाता है। मे के अनुसार, सामान्य चिंता खतरे के बराबर होती है, परंतु इसमें कोई दमन नहीं होता एवं इसका सचेत स्तर पर रचनात्मक रूप से सामना किया जा सकता है। जैसे एक सामान्य व्यक्ति बचपन से बुढ़ापे तक विकास करता है, उसका मूल्य बदलता रहता है एवं प्रत्येक चरण के दौरान, वे सामान्य चिंता का अनुभव करता है। रचनात्मकता के दौरान सामान्य चिंता भी अनुभव की जा सकती है। उदाहरण के लिए जब एक कलाकार, वैज्ञानिक तथा दार्शनिक अचानक एक अंतर्दृष्टि का अनुभव करता है। सामान्य चिंता का अनुभव सभी को होता है।

मे के अनुसार, हालाँकि चिंता भी विक्षिप्त या बीमार हो सकती है। उन्होंने इसे *विक्षिप्त चिंता* का नाम दिया। खतरे के प्रति असंगत प्रतिक्रिया के रूप में विक्षिप्त प्रतिक्रिया को परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें दमन एवं इंद्राप्सिक द्वंद्व के अन्य रूप अंतरभूत होते हैं। व्यक्ति को खतरा होने पर सामान्य चिंता अनुभव होती है, जब मूल्य हठधर्मिता हो जाती है तो विक्षिप्त चिंता अनुभव होती है। मे के अनुसार, किसी व्यक्ति के विश्वास में अबोध रूप से सही होना अस्थायी सुरक्षा प्रदान करता है, मगर यह सुरक्षा नए सीखने एवं नई वृद्धि की संभावना को फिर से निर्धारित करने की कीमत पर आती है।

उपर्युक्त धारणाओं के अतिरिक्त, मे ने बड़े पैमाने पर देखभाल, प्रेम एवं इच्छा के बारे में भी लिखा। मे के अनुसार, देखभाल व्यक्ति की पीड़ा, अपराधबोध या अफ़सोस के बारे में जागरूक होने तथा उस व्यक्ति को एक साथी व्यक्ति के रूप में स्वीकार करने की एक सक्रिय प्रक्रिया है। इसे उदासीनता के विपरीत के रूप में देखा जा सकता है जो चिंता का अभाव है।

मे ने आगे सुझाव दिया कि किसी के बारे में विचार करने का आशय उस व्यक्ति के रूप में स्वयं की पीड़ा या उत्साह, एवं दोष या दया से संबंधित होता है। देखभाल एक कार्य शीलचक्र है। मे के लिए, देखभाल एक ऐसी स्थिति है जहां कुछ फर्क पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, मे के अनुसार देखभाल प्रेम के समान नहीं है, बल्कि यह प्रेम का स्रोत है। प्रेम करने का अर्थ देखभाल करना, दूसरे व्यक्ति की आवश्यक मानवता को पहचानना तथा सक्रिय संबंध में व्यक्ति का विकास करना होता है। अन्य व्यक्ति की

उपस्थिति में खुशी को परिभाषित किया जा सकता है तथा उस व्यक्ति के मूल्यों एवं विकास की पुष्टि की जा सकती है, जो किसी व्यक्ति के स्वयं के रूप में हो। बिना देखभाल के प्यार नहीं हो सकता।

मे ने यह भी सुझाव दिया कि प्यार के स्रोत के अतिरिक्त देखभाल भी इच्छा का स्रोत है। रोलो मे ने परिभाषित करने की क्षमता एक निश्चित दिशा या उद्देश्य में एक संचार के लिए खुद को व्यवस्थित करने की क्षमता बताया। इच्छा और आशा के बीच अंतर किया जा सकता है। मे के अनुसार, स्वयं-चेतना में इच्छा तथा निर्णय पर अवसर प्रदान करना सम्मिलित है, जो कि आशा से नहीं जुड़ा है। दूसरी तरफ इच्छा की चमक, पदार्थ, रचनात्मक भावना, नवीनता एवं समृद्धि के साथ इच्छा प्रदान करती है। इच्छा ऑटो-गाइडिंग प्रदान करती है जोकि विकास की आशा करती है। इच्छा आशा को सुरक्षित करता है, तथा अत्यधिक असाधारण जोखिम उठाए बिना आगे बढ़ने की अनुमति देता है।

बॉक्स 11.6 : अस्तित्ववादी मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के कई अनुप्रयोग उन लोगों से आए हैं जिन्हें मनोविश्लेषण में प्रशिक्षित किया गया था। रोलो मे, को भी मनोविश्लेषण में प्रशिक्षित किया गया था। उनका दृष्टिकोण फ्रायडियन मनोविश्लेषण एवं अस्तित्ववाद का एक संयोजन है। इसका कारण यह है कि उनके दृष्टिकोण को अस्तित्व-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के रूप में भी संदर्भित किया जाता है।

फलस्वरूप, मनोविश्लेषण एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के बीच कई समानताएं पाई गई हैं:

- दोनों मानव अस्तित्व के संबंध में आवश्यक प्रश्नों की अपेक्षा करते हैं।
- दोनों तर्कशक्ति के साथ-साथ तर्कहीनता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। फ्रायड ने मृत्यु के महत्व के बारे में बात की और स्वयं-विनाशकारी आग्रह के रूप में मृत्यु की वृत्ति का उल्लेख किया। इसी प्रकार, अस्तित्ववादी मनोविज्ञान इस बारे में सुझाव देता है कि मृत्यु कैसे अपरिहार्य है तथा शून्य से सामना करने के तरीके सुझाते हैं।
- दोनों को मानवीय पीड़ा के निवारण पर गहरा महत्व देते हैं।
- दोनों इस बात पर महत्व देते हैं कि किसी व्यक्ति के भीतर द्वंद्व एवं चिंता कैसे व्यवधान पैदा कर सकती है।
- दोनों में यह धारणा है कि व्यक्ति अक्सर जवाबदेही से बचकर चिंता से निपटने लग जाता है। फ्रायड दमन के माध्यम से जवाबदेही से बचने के बारे में बात करते हैं, एवं अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक उन लोगों के बारे में बात करते हैं जो जवाबदेही से बचते हैं जिससे सम्बंधित वे जो वास्तव में हैं उसे नकारते हैं।
- दोनों ही समाज को बहुत हद तक दोष देते हैं, क्योंकि लोग अपने स्वभाव के अनुरूप नहीं हो पाते हैं। फ्रायड संयम के कारण पराहम् के बारे में बात करता है। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक लोगों के आत्मनिर्भर बनने में समाज की भूमिका के बारे में बात करते हैं।
- अंत में, दोनों को मानव प्रकृति को समझने की गहरी चिंता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) विक्टर फ्रैंकल का दृष्टिकोण सिगमण्ड फ्रायड से कैसे अलग है?

.....
.....
.....
.....
.....

2) मे के अनुसार, अस्वस्थ व्यक्तिवाद का परिणाम शून्यता एवं अकेलापन कैसे होता है?

.....
.....
.....
.....
.....

3) सामान्य एवं विक्षिप्त चिंता के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

11.4 मानवतावादी एवं आस्तित्ववादी मनोविज्ञान: समानता एवं असमानता

मानवतावादी एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान घटना सम्बंधित आंदोलन से उभरा है, यही वजह है कि उनके बीच कई समानताएं पाई जा सकती हैं। हालांकि, वे दोनों के बीच कई अंतर भी हैं।

मानवतावादी एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान दोनों में कई सामान्य सिद्धांत हैं:

- 1) मानव की स्वतंत्र इच्छा है, तथा इस प्रकार, अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हैं।
- 2) फ्रेनॉमनॉलॉजी, व्यक्तिपरक अनुभवों का अध्ययन मानव की जांच करने के लिए सबसे उपयुक्त तरीका है।
- 3) मानव को सही तरीके से समझने के लिए, उसका पूरा अध्ययन करना चाहिए। तत्ववाद मानव प्रकृति के बारे में दृष्टिकोण को विकृत करता है।

- 4) मनुष्य अद्वितीय है, एवं जानवरों से बहुत अलग है। जानवरों के व्यवहार के बारे में जो कुछ भी सीखा जाता है वह मनुष्य को समझने के लिए सीमित उपयोग का होता है।
- 5) सभी मानव अपने तरीके से अद्वितीय हैं। एक मानव की समझ अन्य मानवों को समझने के लिए सीमित उपयोग की होती है।
- 6) एक प्रामाणिक जीवन जीने में सक्षम होने के नाते एक अमानवीय जीवन जीने से बेहतर है।
- 7) पारंपरिक वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करके मानव का प्रभावी ढंग से अध्ययन नहीं किया जा सकता है। मानव के पास स्वतंत्र इच्छा जैसे अद्वितीय दृष्टिकोण हैं, जो वैज्ञानिक पद्धति के लिए अनुकूल नहीं है।

भले ही मानवतावादी एवं अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों के पास कई सामान्य सिद्धांत हैं, वे मानव प्रकृति के बारे में अपनी धारणा के संबंध में भिन्न हैं। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों की धारणा है कि मानव मूल रूप से अच्छा है, एवं इस प्रकार, यदि स्वस्थ वातावरण में रखा जाता है, तो वे एक दूसरे के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से रहेंगे। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मानव की मुख्य प्रेरणा, वास्तविक प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति सहज है एवं व्यक्तियों को गतिविधियों तथा घटनाओं की ओर ले जाती है जो आत्म-सिद्धि का पक्ष लेते हैं।

अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक, यह मानने के बजाय कि मनुष्य अच्छे स्वभाव वाले हैं, उनका मानना है कि मनुष्य अनिवार्य रूप से तटस्थ हैं। अस्तित्ववादियों के अनुसार, मानव केवल एक गुण जिसके साथ मानव पैदा होता है जो है उनके अस्तित्व की प्रकृति को चुनने की स्वतंत्रता। उनका सुझाव है कि मानव अपनी विशिष्टता का चयन करने के लिए स्वतंत्र है। अस्तित्ववादियों के अनुसार, व्यक्ति वही होता है जो वे खुद बनाता है। सही प्रकार के विकल्प बनाकर, मानव जीवन में अर्थ की तलाश कर रहा है। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों का सुझाव है कि अर्थ के बिना, जीवन का मूल्य बहुत कम है। जीवन में अर्थ का पता लगाना अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जीवन में एक प्रमुख प्रेरणा है। अस्तित्ववादी, विक्टर फ्रैंकल, ने इस आवश्यकता को "अर्थ की इच्छा" बताया।

मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों का दृष्टिकोण उन्हें लोगों के बारे में अधिक आशावादी बनाता है। उनके अनुसार, यदि समाजों को संगत बनाया जा सके, तो लोग शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण तरीके से एक साथ रह सकते हैं।

मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों की तुलना में, अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का परिप्रेक्ष्य अधिक निराशावादी है। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों का सुझाव है कि सभी व्यक्तियों को पसंद की स्वतंत्रता है; उनकी स्वतंत्र इच्छा है। इस स्वतंत्र इच्छा के कारण, व्यक्ति अपने कार्यों एवं व्यवहारों के लिए किसी और को या किसी और चीज़ को दोष नहीं दे सकता है, जिससे वे जो भी करता है उसके लिए वह स्वयं जवाबदेह होता है। हालांकि, जवाबदेही की यह भावना व्यक्तियों के लिए अभिशाप बन जाती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि व्यक्ति अपनी पसंद को महत्व देने के बजाय सामाजिक मानदंडों एवं मूल्यों के अनुरूप हो जाता है।

11.5 सारांश

अब जब हम इकाई के अन्त में आ गये हैं, तो आइए सभी बिन्दुओं को दोहराया जाए जो हमने सीखे हैं :

- "तृतीय-बल" एक दृष्टिकोण है जो मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद से भिन्न है, जिसे क्रमशः पहला बल एवं दूसरा बल कहा जाता है। तृतीय-बल आंदोलन ने फ्रेनॉमनॉलोजी की पद्धति को महत्व दिया। फ्रेनॉमनॉलोजी, किसी घटना का अध्ययन है जो व्यक्ति द्वारा अनुभव किया जाता है, जिसमें इस बात को महत्व दिया जाता है कि वह घटना कैसे घटित हुई।
- 1940 एवं 1950 के दशक में उभरे मानवतावादी मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान के दो मौजूदा प्रमुख सम्प्रदायों – मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद का विरोध किया था। यह मानवीय क्षमता की पूर्ति में व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं व्यक्तिगत जवाबदेही को महत्व देता है।
- अब्राहम मैस्लो एवं कार्ल रोजर्स को मनोविज्ञान में मानवतावादी आंदोलन का अग्रणी माना जाता है। मैस्लो का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अपनी क्षमताओं को पूरी तरह से विकसित करने तथा एक की वास्तविक क्षमता का एहसास करने की एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति को आत्म-सिद्धि कहा जाता है।
- आत्म-सिद्धि की अवधारणा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह एक सौद्देश्यवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है। भविष्य के संबंध में व्यवहार की व्याख्या करने के बारे में एक सौद्देश्यवादी परिप्रेक्ष्य है, एक ऐसा उद्देश्य जिसके लिए व्यक्ति प्रयास करता है।
- कार्ल रोजर्स ने व्यक्ति-केंद्रित चिकित्सा नामक दृष्टिकोण विकसित किया। स्वयं को वास्तविक स्वयं एवं आदर्श स्वयं के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है। वास्तविक स्वयं वह है जो व्यक्ति स्वयं के बारे में अनुभव करता है, एवं आदर्श स्वयं वह है जो व्यक्ति बनना चाहता है।
- जब वास्तविक एवं आदर्श स्वयं के बीच एक विसंगति होती है, तो यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति जो स्वयं के बारे में अनुभव करता है एवं वास्तविक अनुभव के बीच विसंगति हो जाती है। यह अयोग्यता के रूप में जाना जाता है।
- असंगति की चिंता से निपटने के लिए, व्यक्ति रक्षा तंत्र का उपयोग करता है। रोजर्स ने दो प्रकार के रक्षा तंत्रों – विकृति एवं अस्वीकरण का सुझाव दिया है।
- यदि बच्चे की प्यार की आवश्यकता माता-पिता द्वारा अप्रतिबंधित रूप से संतुष्ट है, तो बच्चा अप्रतिबंधित रूप से सकारात्मक संबंध का अनुभव करता है। यह बच्चे के स्वस्थ के विकास को सक्षम बनाता है।
- रोजर्स ने सुझाव दिया कि आत्म-सिद्धि मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का उच्चतम स्तर है। ऐसे व्यक्ति को पूरी तरह से कार्यशील व्यक्ति भी कहा जाता है।
- फ्रैंकल के अनुसार, जिन लक्ष्यों के लिए लोग प्रयास कर रहे हैं, उनमें से एक का जीवन का अर्थ है, जिसे अर्थ इच्छा के रूप में संदर्भित किया गया है।

- फ्रैंकल ने जीवन में अर्थ को तीन अलग-अलग तरीकों से वर्गीकृत किया - उपलब्धियों और रचनात्मकता, प्रेम और दुख के प्रति व्यक्तियों के दृष्टिकोण के अनुसार। तीसरा प्रकार का अर्थ दुख में गरिमा की भावना से जुड़ा है। इस प्रकार का अर्थ मानव अनुभव के पारलौकिक स्वरूप से संबंधित है।
- जीवन में अर्थ के संबंध में, फ्रैंकल ने उद्धोधक चिकित्सा के विचार की उत्पत्ति की। यह एक चिकित्सीय दृष्टिकोण है जो व्यक्तियों को जीवन में अर्थ खोजने में सहायता करता है।
- रोलो मे का दृष्टिकोण प्रयोग विधि के बजाय नैदानिक अनुभव पर आधारित था।
- स्वस्थ व्यक्तिवाद में आत्मनिर्भरता, प्रतिस्पर्धा एवं मुखरता अंतरभूत है। इन विशेषताओं ने सीमा को स्पष्ट करने में सहायता की, आर्थिक विकास की गारंटी दी, तथा सभी की समृद्धि में वृद्धि की है।
- अस्वस्थ व्यक्तिवाद में समुदाय की कोई भावना नहीं होने के कारण व्यक्तियों के लिए गंभीर मानसिक स्वास्थ्य मुद्दे शामिल हैं। अस्वस्थ व्यक्तिवाद से व्यक्तियों को अपने जीवन में जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप शून्यता की भावना पैदा होती है। शून्यता अकेलेपन से जुड़ा है।
- एक अस्वास्थ्यकर समुदायी अभिविन्यास में, व्यक्ति दूसरों के लिए वियोग की भावना से निपटने के लिए अर्थहीन तरीके से दूसरों की तलाश कर सकता है। जितना अधिक व्यक्ति अलगाव की भावनाओं को छोड़ने के लिए दूसरों से जुड़ने की कोशिश करता है, वह उतना ही अलग एवं चिंतित हो जाता है।
- एक स्वस्थ समुदायी अभिविन्यास लंबे समय में अकेलेपन से निपटने में सहायता करता है। इसमें दूसरों की भलाई के लिए एक गहरी एवं वास्तविक चिंता विकसित करना अंतरभूत है।
- मे ने सुझाव दिया कि अकेलेपन एवं शून्यता के अनुभव से चिंता की भावना पैदा होती है। जब चिंता विकास एवं परिवर्तन की ओर ले जाती है, तो इसे सामान्य चिंता कहा जाता है। विक्षिप्त चिंता खतरे के लिए एक प्रतिकूल प्रतिक्रिया है, जिसमें दमन एवं अंतरात्मिक द्वंद्व के अन्य रूप समाहित हैं।
- देखभाल व्यक्ति के दर्द या खुशी, अपराध या दया के बारे में जागरूक होने तथा उस व्यक्ति को एक साथी व्यक्ति के रूप में स्वीकार करने की एक सक्रिय प्रक्रिया है। प्रेम दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति में तथा उस व्यक्ति के मूल्य एवं विकास की पुष्टि के रूप में एक खुशी का अनुभव है।
- रोलो मे ने परिभाषित करने की क्षमता एक निश्चित दिशा या उद्देश्य में एक आंदोलन के लिए खुद को व्यवस्थित करने की क्षमता बताया। इच्छा ऑटो-गाइडिंग प्रदान करती है जो कि आशा के विकास में मदद करती है। इच्छा आशा को सुरक्षित करता है, तथा अत्यधिक असाधारण जोखिम उठाए बिना आगे बढ़ने की अनुमति देता है।
- मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों की धारणा है कि व्यक्ति मूल रूप से अच्छा होता है। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक, यह मानने के बजाय कि मनुष्य अच्छे स्वभाव वाले हैं, उनका विचार है कि मनुष्य अनिवार्य रूप से तटस्थ हैं।

- मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों का दृष्टिकोण उन्हें लोगों के बारे में अधिक आशावादी बनाता है। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों की तुलना में, अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का परिप्रेक्ष्य अधिक निराशावादी है।

11.6 मुख्य शब्द

- तृतीय बल आंदोलन** : यह मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद (जिसे क्रमशः पहला बल एवं दूसरा बल कहा जाता है) से अलग कोई सी भी दृष्टिकोण है। यह आंदोलन ने घटना विज्ञान की पद्धति पर महत्व दिया।
- फ़ेनॉमनॉलोजी** : व्यक्ति द्वारा अनुभव की गई घटनाओं का अध्ययन (जैसा कि यह चेतना में प्रकट होता है, पूर्वाग्रह या किसी पूर्व धारणा के बिना), इस बात पर महत्व देते हुए कि उस घटना का खुलासा कैसे हुआ। यह किसी घटना को समझने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।
- मानवतावादी मनोविज्ञान** : यह विचार का अध्ययन कि मनुष्य हमेशा अपनी पूरी क्षमता विकसित करने का प्रयास करता है।
- आस्तित्ववादी मनोविज्ञान** : यह विचार का अध्ययन की निरंतर उत्तराधिकार के माध्यम से व्यक्ति जीवन की दिशा को परिभाषित करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन यह स्वतंत्रता व्यक्तिगत निर्णयों के परिणामों के लिए व्यक्तिगत जवाबदेही भी देती है, ताकि स्वतंत्रता पीड़ा एवं भय का एक स्रोत हो।
- रूमानीवाद** : यह दर्शन कि मानव प्रकृति को व्यक्तिगत, व्यक्तिपरक भावनाओं एवं अनुभवों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए, तथा यह कि प्रकृति में मानव स्वाभाविक रूप से अच्छे हैं।
- आवश्यकताओं का पदानुक्रम** : यह अभिप्रेरणा का सिद्धांत सुझाव देता है कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं को एक पदानुक्रम पर रखा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को पहले उन आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए जो पदानुक्रम में पहले हैं। एक बार जब किसी की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं, तब व्यक्ति को पदानुक्रम पर अगली आवश्यकता के लिए स्वयं को प्रेरित करना चाहिए।
- आत्म-सिद्धि** : एक व्यक्ति की क्षमताओं को पूरी तरह से विकसित करने एवं एक की वास्तविक क्षमता का अनुभव करने की सहज प्रवृत्ति है। यह केवल सब कुछ बनना है जो व्यक्ति बनने में सक्षम है।
- उद्देश्यवाद** : जो भविष्य की स्थिति के संबंध में व्यवहार की व्याख्या करता है, एक ऐसा उद्देश्य जिसके लिए व्यक्ति प्रयास करते हैं।
- मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति** : जिन व्यक्तियों ने आत्म-सिद्धि की आवश्यकता को पूरा किया है।

व्यक्ति केंद्रित दृष्टिकोण	: एक दृष्टिकोण जो इंगित करता है कि परिवर्तन की जवाबदेही चिकित्सक के बजाय व्यक्ति पर केंद्रित है।
स्वयं	: एक संगठित वैचारिक गैस्टाल्ट एवं एक संगठित संपूर्ण।
वास्तविक स्वयं	: जो व्यक्ति स्वयं के बारे में अनुभव करता है।
आदर्श स्वयं	: जो व्यक्ति बनना चाहता है।
संगत	: वास्तविक एवं आदर्श स्वयं समान होना, या वास्तविक स्वयं एवं आदर्श स्वयं के बीच कम विसंगति होना; एक मनोवैज्ञानिक स्वस्थ स्थिति।
असंगतता	: वास्तविक एवं आदर्श स्वयं के बीच एक विसंगति, जिसे व्यक्तिगत रूप से स्वयं के अनुभव एवं वास्तविक अनुभव के बीच की विसंगति भी कहा जा सकता है। यह एक मनोवैज्ञानिक रूप से अस्वस्थ अवस्था है।
विकृति	: एक रक्षा तंत्र जिसमें स्वयं का वैकल्पिक दृष्टिकोण विकसित करना शामिल है। इससे व्यक्ति को अपने बारे में तर्कहीन सकारात्मक विचार या तर्कहीन नकारात्मक विचार रखने पड़ सकते हैं।
अस्वीकारना	: एक रक्षा तंत्र जिसमें एक व्यक्ति अनुभव को पूरी तरह से नकार देता है।
अप्रतिबंधित सकारात्मक संबंध	: यदि बच्चे की प्यार की आवश्यकता अप्रतिबंधित रूप से माता-पिता द्वारा संतुष्ट होती है, जिसके कारण बच्चे का स्वस्थ विकास संभव होता है।
पूर्ण सपेण सफल व्यक्ति	: पूरी तरह से कार्यशील व्यक्ति मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के उच्चतम स्तर पर एक व्यक्ति जो सभी अनुभव के खुलेपन की विशेषता है, हर पल पूरी तरह से जीने की प्रवृत्ति, एक की सहज प्रवृत्ति, विचार तथा क्रिया में स्वतंत्रता की भावना, उच्च स्तर की रचनात्मकता द्वारा निर्देशित होने की क्षमता।
अर्थ की इच्छा	: जीवन में अर्थ होने की दिशा में प्रयास करने की प्रवृत्ति।
लोगोथेरेपी	: एक चिकित्सीय दृष्टिकोण जो व्यक्तियों को जीवन में अर्थ खोजने में मदद करता है।
स्वस्थ व्यक्तिवाद	: विशेषता जिसमें आत्मनिर्भरता, प्रतिस्पर्धा और मुखरता अंतरभूत है।
अस्वस्थ व्यक्तिवाद	: एक स्थिति जिसमें समुदाय की कोई भावना नहीं होने के कारण व्यक्तियों के लिए एक गंभीर मानसिक स्वास्थ्य मुद्दे अंतरभूत हैं। ऐसे लोग अतिसक्रिय होते हैं, जिससे उनमें पारस्परिक अंतर्विरोध एवं घृणा होती है। इससे आशंका एवं दूसरों से अलग रहने की क्षमता बढ़ने लगती है।
शून्यता	: शक्ति की कमी की भावना जिसमें, घटनाओं को नियंत्रण से परे माना जाता है। व्यक्ति लक्ष्यहीन और दिशाहीन हो जाता

है। यह अस्वस्थ व्यक्तिवाद के परिणामस्वरूप होता है।

- अकेलापन** : वियोग की भावना, एवं स्वीकृति की लालसा। चाहने, विश्वास या मूल्यों के बारे में भ्रमित होने की स्थिति।
- अस्वास्थ्यकर सामुदायी अभिविन्यास** : एक अस्वास्थ्यकर सामुदायी अभिविन्यास में, व्यक्ति दूसरों के लिए वियोग की भावना से निपटने के लिए अर्थहीन तरीके से दूसरों की तलाश कर सकता है। जितना अधिक व्यक्ति अलगाव की भावनाओं को छोड़ने के लिए दूसरों से जुड़ने की कोशिश करता है, वह उतना ही अलग एवं चिंतित हो जाता है।
- स्वस्थकर सामुदायी अभिविन्यास** : एक स्वस्थकर सामुदायी अभिविन्यास लंबे समय में अकेलेपन से निपटने में सहायता करता है। इसमें दूसरों की भलाई के लिए एक गहरी एवं वास्तविक चिंता विकसित करना शामिल है।
- चिंता** : वह भावना जो अकेलेपन एवं शून्यता का अनुभव करने का परिणाम है। यह तब होता है जब व्यक्ति अपनी क्षमताओं को प्राप्त करने के मुद्दे का सामना करता है।
- सामान्य चिंता** : जब चिंता विकास एवं परिवर्तन की ओर ले जाती है, तो इसे सामान्य चिंता कहा जाता है।
- विक्षिप्त चिंता** : विक्षिप्त चिंता खतरे के लिए एक प्रतिकूल प्रतिक्रिया है, जिसमें दमन एवं अंतरात्मिक द्वंद्व के अन्य रूप सम्मिलित हैं।
- देखभाल** : व्यक्ति के दर्द या खुशी, अपराध या दया के बारे में जागरूक होने एवं उस व्यक्ति को एक साथी व्यक्ति के रूप में स्वीकार करने की एक सक्रिय प्रक्रिया। यह उदासीनता के विपरीत है, जो चिंता की कमी है।
- प्रेम** : दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति में खुशी तथा उस व्यक्ति के मूल्य एवं विकास की पुष्टि करना जितना स्वयं का है।
- इच्छा** : एक निश्चित दिशा या उद्देश्य में आंदोलन के लिए खुद को व्यवस्थित करने की क्षमता।

11.7 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) तृतीय-बल आंदोलन के विभिन्न रूपों के सामान्य पहलू क्या हैं?
- 2) आत्म-सिद्धि की अवधारणा मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद द्वारा प्रस्तावित कार्य परंपरा से अलग कैसे है?
- 3) रोजर्स आत्म-सिद्धि में अप्रतिबंधित सकारात्मक संबंध की भूमिका का वर्णन कैसे करता है?
- 4) "मानवतावादी मनोविज्ञान" मनोविश्लेषण एवं व्यवहारवाद से किन तरीकों से असहमत है?

- 5) मैस्लो द्वारा सुझाया, सबसे कम पदानुक्रम से उच्चतम पदानुक्रम तक विभिन्न आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए।
- 6) आत्म-सिद्धि व्यक्तियों की विशिष्टता पर किस तरह महत्व देता है?
- 7) फ्रैंकल द्वारा सुझाए गए विभिन्न प्रकार के अर्थों को वर्णन कीजिए।
- 8) रोलो मे ने स्वस्थ एवं अस्वस्थ व्यक्तिवाद के बीच अंतर कैसे करते हैं।
- 9) शून्यता एवं अकेलेपन की भावनाएं व्यक्तियों के बीच एक अस्वास्थ्यकर सामुदायी अभिविन्यास कैसे विकसित करती हैं?
- 10) मानवतावादी मनोविज्ञान एवं अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

11.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*. Harlow: Pearson Education Ltd.

Chung, M. C. & Hyland, M. E. (2012). *History and Philosophy of Psychology*. Oxford: Wiley-Blackwell Publications

Feist, J. & Feist, G. J. (2008). *Theories of Personality*. San Jose: McGraw-Hill Education

Glassman, W. E. & Hadad, M. (2009). *Approaches to Psychology*. London: McGraw-Hill Education

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*. Wadsworth: Cengage Learning

Ryckman, R. M. (2008). *Theories of Personality*. Belmont: Thomson Higher Education

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). *A History of Modern Psychology*. Wadsworth: Thomson Learning, Inc

11.9 चित्रों के संदर्भ

The New Hierarchy of Needs The New Hierarchy of Needs — Maslow's lost apex | by Jessi Christian | Coachilla HQ | Medium

Cherry, K. (2020). Biography of Abraham Maslow (1908 – 1970). <https://www.verywellmind.com/biography-of-abraham-maslow-1908-1970-2795524>

Cherry, K. (2020). Psychology and Life Quotes from Carl Rogers. <https://www.verywellmind.com/carl-rogers-quotes-2795693>

Popova, M. (n. d.). Viktor Frankl and the Human Search for Meaning. <https://www.brainpickings.org/2013/03/26/viktor-frankl-mans-search-for-meaning/>

Popova, M. (n. d.). Love and Will: The Great Existential Psychologist Rollo May on Apathy, Transcendence, and Our Human Task in Times of Radical Transition. <https://www.brainpickings.org/2017/05/11/love-and-will-rollo-may/>

11.10 ऑनलाइन संसाधन

Boeree, C. G. (2006). Carl Rogers, Personality Theories. <http://web.space.ship.edu/cgboer/rogers.html>

Boeree, C. G. (2006). Rollo May, Personality Theories. <https://web.space.ship.edu/cgboer/may.html>

Celestine, N. (2021). Abraham Maslow, His Theory and Contribution to Psychology. <https://positivepsychology.com/abraham-maslow/>

Farooqi, S. (2010). Self-satisfaction: The Ultimate Goal of Life. <http://www.lifeandpsychology.com/2010/06/self-satisfaction-ultimate-goal-of-life.html>

Farooqi, S. (2016). Psychoanalytic Influences on Humanistic Psychology. <http://www.historyofpsychology.net/2016/05/psychoanalytic-influences-on-humanistic.html>

Gregory, E. M. (2015). May the 3rd Force be With You: Humanistic Psychology and the Third Force of Psychology. <https://www.psychologytoday.com/us/blog/the-secular-shepherd/201506/may-the-3rd-force-be-you>

Spear, J. (n. d.). Existential psychology. <https://psychology.jrank.org/pages/229/Existential-Psychology.html#:~:text=Existential%20psychology%20is%20an%20approach,have%20many%20levels%20of%20self%2D>

Spiegelberg, H. (2017). Phenomenology. <https://www.britannica.com/topic/phenomenology>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020), Viktor Frankl. <https://www.britannica.com/biography/Viktor-Frankl>

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Humanistic psychology. <https://www.britannica.com/science/humanistic-psychology>



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY